पुना International School

Shree Swaminarayan Gurukul, Zundal

CLASS-X

HINDI

SPECIMEN COPY

2022-23

पाठ-सूची

क्रमांक	माह	पाठ का नाम	लेखक का नाम
०१	अप्रैल-मई	पद्य पाठ-१- सखी	संत कबीर
०२		गद्य पाठ-१०-बड़े भाईसाहब	मुंशी प्रमचंद
०३		संचयन पाठ-१-हरिहर काका	मथलेश्वर
		व्याकरण-पद लेखन-अनुच्छेद पत्र-	
०४	जून	गद्य पाठ-११- डायरी के पन्ने	सीताराम सेकसरिया
०५		पद्य पाठ-२- मीरा के पद	मीराबाई
०७		संचयन-२-सपनों के से दिन	गुरदयाल संह
०८		व्याकरण-वाक्य	
०९	जुलाई	पद्य पाठ-३-बिहारी के दोहे	बिहारी
१०		गद्य पाठ-१२-तनतारा -वमरो	लीलाधर मंडलोई
११		गद्य-पाठ-१३-तीसरी कसम	प्रहलाद अग्रवाल
१२		व्याकरण-उपसर्ग-प्रत्यय संवाद-लेखन	
१३	अगस्त	पद्य-पाठ-४-मनुष्यता	मैथलीशरण गुप्त
१४		गद्य-१५-अब कहाँ कसी के दुख से दुखी	निदा फ़ाजली
१६		व्याकरण-समास लेखन-कहानी ,वज्ञापन	

पद्य-पाठ 1 साखी

*-साखी पाठ सार-

इन सा खयों में कबीर ईश्वर प्रेम के महत्त्व को प्रस्तुत कर रहे हैं। पहली साखी में कबीर मीठी भाषा का प्रयोग करने की सलाह देते हैं ता क दूसरों को सुख और और अपने तन को शीतलता प्राप्त हो। दूसरी साखी में कबीर ईश्वर को मंदिरों और तीर्थों में ढूंढ़ने के बजाये अपने मन में ढूंढ़ने की सलाह देते हैं। तीसरी साखी में कबीर ने अहंकार और ईश्वर को एक दूसरे से वपरीत (उल्टा) बताया है। चौथी साखी में कबीर कहते हैं क प्रभु को पाने की आशा उनको संसार के लोगो से अलग करती है। पांचवी साखी में कबीर कहते हैं क ईश्वर के वयोग में कोई व्यक्ति जी वत नहीं रह सकता, अगर रहता भी है तो उसकी स्थिति पागलों जैसी हो जाती है। छठी साखी में कबीर निंदा करने वालों को हमारे स्वभाव परिवर्तन में मुख्य मानते हैं। सातवीं साखी में कबीर ईश्वर प्रेम के अक्षर को पढने वाले व्यक्ति को पं डत बताते हैं और अंतिम साखी में कबीर कहते हैं क यदि ज्ञान प्राप्त करना है तो मोह - माया का त्याग करना पड़ेगा|

साखी की पाठ व्याख्या

ऐसी बाँणी बो लये ,मन का आपा खोइ।

अपना तन सीतल करै ,औरन कौ सुख होइ।।

बाँणी - बोली
आपा - अहम् (अहंकार)
खोइ - त्याग करना
सीतल - शीतल (ठंडा ,अच्छा)
औरन - दूसरों को
होइ ‌होना

प्रसंग -: प्रस्तुत साखी हमारी हिंदी पाठ्य पुस्तक 'स्पर्श ' से ली गई है। इस साखी के कवी 'कबीरदास 'जी है। इसमें कबीर ने मीठी बोली बोलने और दूसरों को दुःख न देने की बात कही है|

व्याख्या -: इसमें कबीरदास जी कहते है क हमें अपने मन का अहंकार त्याग कर ऐसी भाषा का प्रयोग करना चाहिए जिसमे हमारा अपना तन मन भी सवस्थ रहे और दूसरों को भी कोई कष्ट न हो अर्थात दूसरों को भी सुख प्राप्त हो।

कस्तूरी कुंडली बसै ,मृग ढ़ूँढै बन माँहि।
ऐसैं घटि- घटि राँम है , दुनियां देखै नाँहिं।।

कुंडली - ना भ
मृग - हिरण
घटि घटि - कण कण

प्रसंग -: प्रस्तुत साखी हमारी हिंदी पाठ्य पुस्तक 'स्पर्श ' से ली गई है। इसके कवी कबीरदास जी है इसमें कबीर कहते है क संसार के लोग कस्तूरी हिरण की तरह हो गए है जिस तरह हिरण कस्तूरी प्राप्ति के लए इधर उधर भटकता रहता है उसी तरह लोग भी ईश्वर प्राप्ति के लए भटक रहे है।

व्याख्या -: कबीरदास जी कहते है क जिस प्रकार एक हिरण कस्तूरी की खुशबु को जंगल में ढ़ूंढ़ता फरता है जब क वह सुगंध उसी की ना भ में वद्यमान होती है परन्तु वह इस बात से बेखबर होता है, उसी प्रकार संसार के कण कण में ईश्वर वद्यमान है और मनुष्य इस बात से बेखबर ईश्वर को देवालयों और तीर्थों में ढ़ूंढ़ता है। कबीर जी कहते है क अगर ईश्वर को ढ़ूंढ़ना ही है तो अपने मन में ढ़ूंढो।

जब मैं था तब हरि नहीं ,अब हरि हैं मैं नांहि।
सब अँ धयारा मटी गया , जब दीपक देख्या माँहि।।

मैं - अहम् (अहंकार)
हरि - परमेश्वर
अँ धयारा - अंधकार

प्रसंग -: प्रस्तुत साखी हमारी हिंदी पाठ्य पुस्तक 'स्पर्श ' से ली गई है। इस साखी के क व कबीरदास जी हैं। इसमें कबीर जी मन में अहम् या अहंकार के मट जाने के बाद मन में परमेश्वर के वास की बात कहते है।

व्याख्या -: कबीर जी कहते हैं क जब इस हृदय में 'मैं ' अर्थात मेरा अहंकार था तब इसमें परमेश्वर का वास नहीं था परन्तु अब हृदय में अहंकार नहीं है तो इसमें प्रभु का वास है। जब परमेश्वर नमक दीपक के दर्शन हुए तो अज्ञान रूपी अहंकार का वनाश हो गया।

सु खया सब संसार है , खायै अरु सोवै।
दु खया दास कबीर है , जागै अरु रोवै।।

सु खया - सुखी
अरु - अज्ञान रूपी अंधकार
सोवै - सोये हुए
दु खया - दुःखी
रोवै - रो रहे

प्रसंग -: प्रस्तुत साखी हमारी हिंदी पाठ्य पुस्तक 'स्पर्श ' से ली गई है। इस साखी के क व कबीरदास जी है। इसमें कबीर जी अज्ञान रूपी अंधकार में सोये हुए मनुष्यों को देखकर दुःखी हैं और रो रहे है हैं।

व्याख्या -: कबीर जी कहते हैं क संसार के लोग अज्ञान रूपी अंधकार में डूबे हुए हैं अपनी मृत्यु आदि से भी अनजान सोये हुये हैं। ये सब देख कर कबीर दुखी हैं और वे रो रहे हैं। वे प्रभु को पाने की आशा में हमेशा चंता में जागते रहते हैं।

बिरह भुवंगम तन बसै , मंत्र न लागै कोइ।
राम बियोगी ना जिवै ,जिवै तो बौरा होइ।।

बिरह - बिछड़ने का गम
भुवंगम -भुजंग , सांप
बौरा - पागल

प्रसंग -: प्रस्तुत साखी हमारी हिंदी पाठ्य पुस्तक 'स्पर्श ' से ली गयी है। इस साखी के क व कबीरदास जी हैं। इसमें कबीर कहते हैं क ईश्वर के वयोग में मनुष्य जी वत नहीं रह सकता और अगर रह भी जाता है तो वह पागल हो जाता है।

व्याख्या -: कबीरदास जी कहते हैं क जब मनुष्य के मन में अपनों के बिछड़ने का गम सांप बन कर लोटने लगता है तो उस पर न कोई मन्त्र असर करता है और न ही कोई दवा असर करतीहै। उसी तरह राम अर्थात ईश्वर के वयोग में मनुष्य जी वत नहीं रह सकता और यदि वह जी वत रहता भी है तो उसकी स्थिति पागलों जैसी हो जाती है।

निंदक नेड़ा रा खये , आँग ण कुटी बँधाइ।
बिन साबण पाँणीं बिना , निरमल करै सुभाइ।।

निंदक - निंदा करने वाला
नेड़ा - निकट

आँग ण - आँगन
साबण - साबुन
निरमल - साफ़
सुभाइ - स्वभाव

प्रसंग-: प्रस्तुत साखी हमारी हिंदी पाठ्य पुस्तक 'स्पर्श ' से ली गई है। इस साखी के कवी कबीदास जी हैं। इसमें कबीरदास जी निंदा करने वाले व्यक्तियों को अपने पास रखने की सलाह देते हैं ता क आपके स्वभाव में सकारात्मक परिवर्तन आ सके।

प्रसंग-: प्रस्तुत साखी हमारी हिंदी पाठ्य पुस्तक 'स्पर्श ' से ली गई है। इस साखी के कवी कबीदास जी हैं। इसमें कबीरदास जी निंदा करने वाले व्यक्तियों को अपने पास रखने की सलाह देते हैं ता क आपके स्वभाव में सकारात्मक परिवर्तन आ सके।

व्याख्या -: इसमें कबीरदास जी कहते हैं क हमें हमेशा निंदा करने वाले व्यक्तिओं को अपने निकट रखना चाहिए। हो सके तो अपने आँगन में ही उनके लए घर बनवा लेना चाहिए अर्थात हमेशा अपने आस पास ही रखना चाहिए। ता क हम उनके द्वारा बताई गई हमारी गलतिओं को सुधर सकें। इससे हमारा स्वभाव बिना साबुन और पानी की मदद के ही साफ़ हो जायेगा।

पोथी पढ़ि - पढ़ि जग मुवा , पं डत भया न कोइ।
ऐकै अ षर पीव का , पढ़ै सु पं डत होइ।

पोथी - पुस्तक
मुवा - मरना
भया - बनना
अ षर - अक्षर
पीव - प्रय

प्रसंग -: प्रस्तुत साखी हमारी हिंदी पाठ्य पुस्तक 'स्पर्श ' से ली गई है। इस साखी के क व कबीरदास जी हैं। इसमें कबीर जी पुस्तक ज्ञान को महत्त्व न देकर ईश्वर - प्रेम को महत्त्व देते हैं।

Q1- मीठी वाणी बोलने से औरों को सुख और अपने तन को शीतलता कैसे प्राप्त होती है?

A)अहंकार रहित मीठे बोल सबके ह्रदय को छूते हैं

B) मश्री गलती है

C) मश्री घुलती है

D) मीठे बोल

Q2- साखी शब्द कसका तद्भव रूप है ?

A) साक्षी

B) साखी

C) स ख

D) साक्ष्य

Q4- साक्ष्य का क्या अर्थ है ?

A) प्रत्यक्ष ज्ञान

B) साक्ष्य ज्ञान

C) सांसारिक ज्ञान

D) मायावी ज्ञान की

Q5- संत समाज में कस ज्ञान की महत्ता है ?

A) अनुभव ज्ञान की

B) बाहरी ज्ञान की

C) मायावी ज्ञान की

D) सांसारिक ज्ञान

Q6- कबीर की सा खयों में कन भाषाओं का स्पष्ट प्रभाव दिखाई देता है ?

A) अवधी

B) राजस्थानी

C) भोजपुरी और पंजाबी

D) सभी

Q7- साखी क्या है ?

A) दोहा छंद

B) पद्य गद्य

C) छंद

D) दोहा

Q8- दोहा छंद के क्या लक्षण हैं ?

A) १३ और ११ के वश्राम से २४ मात्रा

B) १२ और ११ के वश्राम से २४ मात्रा

C) १२ और ११ के वश्राम से २८ मात्रा

D) १३ और ११7के वश्राम से २४ मात्रा

Q9- गुरु शष्य को तत्त्व ज्ञान की शक्षा कैसे देता है ?

A) सत्य की साक्षी देता हुआ

B) व्यवहारिक ज्ञान देकर

C) असत्य की साक्षी देता हुआ

D) सत्क्ष देता ह्आ

Q10- कबीर का जन्म कब और कहाँ हुआ ?

A) १३९८ में काशी में

B) १३२१ में बोधगया में

C) १३५४ में उत्तराखंड में

D) १३९५ में काशी में

*-निम्न ल खत प्रश्नों के उत्तर दीजिये

प्रश्न 1 -: मीठी वाणी बोलने से औरों को सुख और अपने तन को शीतलता कैसे प्राप्त होती है ?

उत्तर -: कबीरदास जी के अनुसार जब आप दूसरों के साथ मीठी भाषा का उपयोग करोगे तो उन्हें आपसे कोई शकायत नहीं रहेगी। वे सुख का अनुभव करेंगे और जब आपका मन शुद्ध और साफ़ होगा परिणामस्वरूप आपका तन भी शीतल रहेगा।

प्रश्न 2 -: दीपक दिखाई देने पर अँधयारा कैसे मट जाता है ? साखी के सन्दर्भ में स्पष्ट किजिए।

उत्तर -: तीसरी साखी में कबीर का दीपक से तात्पर्य ईश्वर दर्शन से है तथा अँधयारा से तात्पर्य अज्ञान से है। ईश्वर को सर्वोच्च ज्ञान कहा गया है अर्थात जब कसी को सर्वोच्च ज्ञान के दर्शन हो जाये तो उसका सारा अज्ञान दूर होना सम्भव है।

प्रश्न 3 -: ईश्वर कण - कण में व्याप्त है , पर हम उसे क्यों नहीं देख पाते ?

उत्तर -: कबीरदास जी दूसरी साखी में स्पष्ट करते हैं क ईश्वर कण कण में व्याप्त है ,पर हम अपने अज्ञान के कारण उसे नहीं देख पाते क्यों क हम ईश्वर को अपने मन में खोजने के बजाये मंदिरों और तीर्थों में खोजते हैं।

प्रश्न 4 -: संसार में सुखी व्यक्ति कौन है और दुखी कौन ? यहाँ 'सोना' और 'जागना' कसके प्रतिक हैं ? इसका प्रयोग यहाँ क्यों कया गया है ? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर -: कबीरदास के अनुसार संसार के वे सभी व्यक्ति जो बिना कसी चंता के जी रहे हैं वे सुखी हैं तथा जो ईश्वर वयोग में जी रहे हैं वे दुखी हैं। यहाँ 'सोना ' 'अज्ञान ' का और 'जागना ' ईश्वर - प्रेम ' का प्रतिक है। इसका प्रयोग यहाँ इस लए हुआ है क्यों क कुछ लोग अपने अज्ञान के कारण बिना चंता के सो रहे हैं और कुछ लोग ईश्वर को पाने की आशा में सोते हुए भी जग रहे हैं।

प्रश्न 5 -: अपने स्वभाव को निर्मल रखने के लए कबीर ने क्या उपाय सुझाया है ?
उत्तर -: अपने स्वभाव को निर्मल रखने के लए कबीर ने निंदा करने वाले व्यक्तिओं को अपने आस पास रखने का उपाय सुझाया है। उनके अनुसार निंदा करने वाला व्यक्ति जब आपकी गलतियां निकालेगा तो आप उस गलती को सुधार कर अपना स्वभाव निर्मल बना सकते हैं।

प्रश्न 6 -: ' ऐकै अ षर पीव का , पढ़ै सु पं डत होइ ' - इस पंक्ति द्वारा क व क्या कहना चाहता है ?
उत्तर -: 'ऐकै अ षर पीव का , पढ़ै सु पं डत होइ ' - इस पंक्ति में क व ईश्वर प्रेम को महत्त्व देते हुए कहना चाहता है क ईश्वर प्रेम का एक अक्षर ही कसी व्यक्ति को पं डत बनाने के लए काफी है।

प्रश्न 7 -: कबीर की उद्धृत सा खयों की भाषा की वशेषता प्रकट कीजिए।
उत्तर -: कबीर की सा खओं में अनेक भाषाओँ का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है। उद्धृत सा खओं की भाषा की वशेषता यह है क इसमें भावना की अनुभूति ,रहस्यवादिता तथा जीवन का संवेदनशील संस्पर्श तथा सहजता को प्रमुख स्थान दिया गया है।
*-निम्न ल खत पंक्तिओं के भाव स्पष्ट कीजिये

(1) ' बिरह भुवंगम तन बसै , मंत्र न लागै कोइ। '

भाव इस पंक्ति का भाव यह है क जब कसी मनुष्य के मन में अपनों से बिछड़ने का गम :- रूपी साँप जगह बना लेता है तो कोई दवा,कोई मंत्र काम नहीं आते|
(2) ' कस्तूरी कुंड ल बसै ,मृग ढ़ूँढ़ै बन माँहि। '

भाव :- इस पंक्ति का भाव यह है क अज्ञान के कारण कस्तूरी हिरण पूरे वन में कस्तूरी की खुसबू के स्त्रोत को ढूंढता रहता है जब क वह तो उसी के पास ना भ में वद्यमान होती है|
(3) ' जब मैं था तब हरि नहीं ,अब हरि हैं मैं नहीं। '

भाव इस पंक्ति का भाव यह है क अहंकार :-और ईश्वर एक दूसरे के वपरीत हैं जहाँ अहंकार है वहां ईश्वर नहीं ,जहाँ ईश्वर है वहां अहंकार का वास नहीं होता।

(4) 'पोथी पढ़ि - पढ़ि जग मुवा , पं डत भया न कोइ। '

भाव इस पंक्ति का भाव यह है क कताबी ज्ञान कसी को पं डत नहीं बना सकता :-, पं डत बनने के लए ईश्वर प्रेम का एक अक्षर ही काफी है। -

*-निम्नलखत प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

प्रश्न 1.मीठी वाणी बोलने से औरों को सुख और अपने तन को शीतलता कैसे प्राप्त होती है?

उत्तर-मीठी वाणी बोलने से औरों को सुख और अपने तन को शीतलता प्राप्त होती है, क्योंक मीठी वाणी बोलने से मन का अहंकार समाप्त हो जाता है। यह हमारे तन को तो शीतलता प्रदान करती ही है तथा सुननेवालों को भी सुख की तथा प्रसन्नता की अनुभूति कराती है इसलए सदा दूसरों को सुख पहुँचाने वाली व अपने को भी शीतलता प्रदान करने वाली मीठी वाणी बोलनी चाहिए।

प्रश्न 2.दीपक दिखाई देने पर अँधयारा कैसे मट जाता है? साखी के संदर्भ में स्पष्ट कीजिए।

उत्तरदीपक में एक प्रकाशपुंज होता है जिसके प्रभाव के कारण अंधकार नष्ट हो जाता है। इसी प्रकार मन में - ज्ञान रूपी दीपक का प्रकाश फैलते ही मन में छाया भ्रम, संदेह और भयरूपी अंधकार समाप्त हो जाता है।

प्रश्न 3.ईश्वर कणकण में व्याप्त है-, पर हम उसे क्यों नहीं देख पाते ?

उत्तरन-कण ईश्वर व्याप्त है कण-ईश्वर क--कण ही ईश्वर है। ईश्वर की चेतना से ही यह संसार दिखाई देता है। चारों ओर ईश्वरीय चेतना के अतिरिक्त कुछ भी नहीं है, लेकन यह सब कुछ हम इन भौतिक आँखों से नहीं देख सकते। जब तक ईश्वर की कृपा से हमें दिव्य चक्षु नहीं मलते (आँखें), तब तककण में ईश्वर के -हम कण .

इसका प्रयोग यहाँ क्यों कया गया है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-संसार में वह व्यक्ति सुखी है जो प्रभु प्राप्ति के लए प्रयास से दूर रहकर सांसारिक वषयों में डूबकर आनंदपूर्वक सोता है। इसके वपरीत वह व्यक्ति जो प्रभु को पाने के लए तड़प रहा है, उनके वषय-वासनाओं से दूर रहने तथा सचेत करने के लए कया गया है।

प्रश्न 5.अपने स्वभाव को निर्मल रखने के लए कबीर ने क्या उपाय सुझाया है?

उत्तरअपने स्वभाव को निर्मल रखने के लए कबीर ने निंदक को अपने निकट रखने का सुझाव दिया है-, क्योंक वही हमारा सबसे बड़ा हितैषी है अन्यथा झूठी प्रशंसा कर अपना स्वार्थ सद्ध करने वाले तो अनेक मल जाते हैं। निंदक बुराइयों को दूरकर सद्गुणों को अपनाने में सहायक सद्ध होता है। निंदक की आलोचना को सुनकर आत्मनिरीक्षण कर शुद्ध व निर्मल आचरण करने में सहायता मलती है।

पीव अर्थात् ब्रह्म ही सत्य है। उसे पढ़े या जाने बिना कोई भी पंडत (ज्ञानी) नहीं बन सकता है।

प्रश्न 7.कबीर की उद्धृत साखयों की भाषा की वशेषता स्पष्ट कीजिए।
उत्तरकबीर की साखयों की भाषा की वशेषता है क यह जन भाषा है। उन्होंने जनचेतना और जनभावनाओं -जन तक पहुँचाया है। इसलए डॉ० हजारी प्रसाद -को अपनी सधुक्कड़ी भाषा द्वारा साखयों के माध्यम से जन वद्वेदी ने इनकी भाषा को भावानुरूपणी माना है। अपनी चमत्कारिक भाषा केकारण आज भी इनके दोहे लोगों की जुबान पर हैं|

*-लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर

मधुर वाणी में वनम्रता भरी वाणी बोलने की सीख दे रहे हैं। इसका कारण यह है क अपने मन का अहंकार त्यागने से हमारे शरीर को शांति और शीतलता की अनुभूति होगी तथा मधुर वाणी सुनने वालों को सुखानुभूति होती है।

प्रश्न 2.मन में आपा कैसे उत्पन्न होता है? आपा खोने के लए कबीर क्यों कह रहे हैं?
उत्तर-मनुष्य की इच्छा होती है क वह सांसारिक सुखों का अधकाधक उपयोग करे। इन सुखों की चाहत में वह सुख के नाना प्रकार के साधन एकत्र कर लेना चाहता है। इसके अलावा वह धन और बल का स्वामी भी बनना चाहता है। ऐसे होते ही उसके मन में आपा उत्पन्न हो जाता है। आपा खोने के लए कबीर इसलए कह रहे हैं क इससे मनुष्य-मनुष्य में दूरी बढ़ती है तथा मनुष्य गर्वोक्ति का शकार हो जाता है|

जिससे मनुष्य आजीवन अनजान रहता है। मनुष्य ईश्वर को पाने के लए देवालय, तीर्थस्थान, गुफा-कंदराओं जैसे दुर्गम स्थानों पर खोजता-फरता है और अंततः दुनिया से चला जाता है, परंतु वह ईश्वर को अपने मन में नहीं खोजती जहाँ उसका सच्चा वास है। ईश्वर तो घट-घट पर अर्थात् हर प्राणी में यहाँ तक क कण-कण में व्याप्त है।

दूर हुआ?
अँधयारे की ओर संकेत कया गया है जिसके कारण मनुष्य सांसारिकता में डूबा था और ईश्वर को नहीं पहचान पाता है। यह अँधयारा प्रकाशपुंज ईश्वर रूपी दीपक को मन में देखा। यह अँधेरा उसी तरह मट गया जैसे दीपक जलाने से अँधेरा समाप्त हो जाता है।

प्रश्न 6.कबीर की दृष्टि में संसार सुखी और वह स्वयं दुखी हैं, ऐसा क्यों?
उत्तर-संसार के लोगों को देखकर कबीर को लगता है क लोग सांसारिक वषय-वासनाओं के साथ खाने-

पीने और हँसी-खुशी से जीने में मस्त हैं। ये लोग सुखी हैं। दूसरी ओर कबीर है जो प्रभु प्राप्ति न होने के कारण परेशान है। वह सोने के बजाय जाग रहा है और रोते हुए दुखी हो रहा है।

प्रश्न 7.राम वयोगी की दशा कैसी हो जाती है? स्पष्ट कीजिए।
उत्तर-राम का वयोग झेल रहे व्यक्ति की दशा दयनीय हो जाती है। कोई मंत्र या उपाय उसे ठीक नहीं कर पाता है। वह इस व्यथा की अधकता को सह नहीं पाता है और अपने प्राणों से हाथ धो बैठता है। ऐसा व्यक्ति यदि जीता भी है तो उसकी स्थिति पागलों के समान होती है। वह राम से मलकर ही स्वस्थ हो सकता है|
प्रश्न 8.निंदक के बारे में कबीर की राय समाज से पूरी तरह भन्न थी। स्पष्ट कीजिए।
उत्तर-निंदक अर्थात् आलोचकों के बारे में कबीर की राय समाज से बिलकुल भी मेल नहीं खाती थी। समाज के लोग निंदा के भय से आलोचकों को अपने आसपास फटकने भी नहीं देते हैं। इसके वपरीत कबीर का मत था क निंदकों को अपने आसपास ही बसने की जगह देना चाहिए। ऐसा करना व्यक्ति के हित में होता है|
*-दीर्घ उत्तरीय प्रश्नोत्तर:

प्रश्न 1.कबीर की साखयाँ जीवन के लए अत्यंत उपयोगी हैं। इनमें जिन जीवन-मूल्यों की झलक मलती है, उनका उल्लेख कीजिए।
उत्तर-कबीर की साखयाँ कबीर के अनुभव और गहनता से खोजे गए सत्य पर आधारित है। उनकी हर साखी मनुष्य को सीख सी देती प्रतीत होती है। इन साखयों में हमें कई जीवन मूल्यों की झलक मलती है; जैसे-

- मनुष्य को सदैव ऐसी वाणी बोलना चाहिए जिससे बोलने और सुनने वाले दोनों को ही सुख और शीतलता मले।
- मनुष्य को अहंकार का त्याग कर देना चाहिए।
- अपने आलोचकों को अपने आसपास ही जगह देना चाहिए ताक व्यक्ति का स्वभाव परिष्कृत हो सके।

ईश्वर प्राप्ति के लए मनुष्य को उचत प्रयास करना चाहिए जिसके लए यह समझना आवश्यक है क उसका वास घट-घट में है।

प्रश्न 2.ईश्वर के संबंध में कबीर के अनुभवों और मान्यताओं का वर्णन साखयों के आधार पर कीजिए।
उत्तर-ईश्वर के संबंध में कबीर के अनुभव और मान्यताएँ जनमानस की सोच के वपरीत थे। जनमानस

का मानना है क ईश्वर मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारे, तीर्थ स्थलों या दुर्गम स्थानों पर रहता है। मनुष्य उसकी खोज में यहाँ-वहाँ भटकता हुआ जीवन बिता देता है, परंतु कबीर की मान्यता एवं अनुभव के अनुसार-

- ईश्वर हर प्राणी यहाँ तक क कण-कण में वद्यमान है।
- ईश्वर की प्राप्ति के लए अहंकार का त्याग अत्यावश्यक है।
- ईश्वर के वयाग में व्यक्ति जी नहीं सकता है। यदि वह जीता है तो उसकी दशा पागलों जैसी हो जाती है।
- ईश्वर के बारे में जाने बिना कोई ज्ञानी नहीं कहला सकता है।

ईश्वर को पाने के लिए विषय-वासनाओं और सांसारिकता का त्याग आवश्यक है।

प्रश्न 3.निंदक कसे कहा गया है? वह व्यक्ति के स्वभाव का परिष्करण कस तरह करता है?
उत्तर-कबीर के अनुसार निंदक वह व्यक्ति है जो अपने आसपास रहने वालों की स्वाभावक कमयों को अनदेखा नहीं करता है। वह उन कमयों की ओर व्यक्ति का ध्यान बार-बार आकर्षत कराता है। उसकी इस आलोचना से व्यक्ति गलतियों और अपनी कमयों के प्रति सजग हो जाता है। वह उन्हें दूर करने या ढंकने का प्रयास करता है और सुधार के लए उन्मुख हो जाता है। आत्मसुधार की भावना पनपते ही व्यक्ति धीरे-धीरे अपने दुर्गुणों और कमयों से मुक्ति पा जाता है। ऐसा करने में व्यक्ति को कुछ खर्च भी नहीं करना पड़ता है। इस तरह निंदक अपने आसपास रहने वालों का परिष्करण करता है

गद्य -पाठ-१-बड़े भाई साहब

लेखक परिचय

लेखक प्रेमचंद -
जन्म -13 जुलाई 1880 (बनारस (लमही गांव -
मृत्यु -8 अक्टूबर 1936

बड़े भाई साहब पाठ सार:

प्रस्तुत पाठ में एक बड़े भाई साहब हैं जो हैं तो छोटे ही परन्तु उनसे छोटा भी एक भाई है। वे उससे कुछ ही साल बड़े हैं परन्तु उनसे बड़ी बड़ी - आशाएं की जाती हैं। बड़े होने के कारण वे खुद भी यही चाहते हैं क वे जो भी करें छोटे भाई के लए प्रेरणा दायक हो। भाई साहब उससे पाँच साल बड़े हैं, परन्तु तीन ही कक्षा आगे पढ़ते हैं। वे अपनी शक्षा की नींव मज़बूती से डालना चाहते थे ता क वे आगे चल कर अच्छा मुकाम हा सल कर सकें। वे हर कक्षा में एक साल की जगह दो साल लगाते थे और कभीकभी तो तीन साल भी लगा देते थे।वे हर वक्त - कताब खोल कर बैठे रहते थे|
लेखक का मन पढ़ाई में बिलकुल भी नहीं लगता था। अगर एक घंटे भी कताब ले कर बैठना पड़ता तो यह उसके लए कसी पहाड़ को चढ़ने जितना ही मुश्किल काम था। जैसे ही उसे ज़रा सा मौका मलता वह खेलने के लए मैदान में पहुँच जाता था। ले कन जैसे ही खेल ख़त्म कर कमरे में आता तो भाई साहब का वो गुस्से वाला रूप देखा कर उसे बहुत डर लगता था।बड़े भाई साहब छोटे भाई को डाँटते हुए कहते हैं क वह इतना सुस्त है क बड़े भाई को देख कर कुछ नहीं सीखता । अगर लेखक अपनी उम्र इसी तरह गवाना चाहता है तो उसे घर चले जाना चाहिए और वहां मजे से गुल्ली डंडा खेलना चाहिए । - कम से कम दादा की मेहनत की कमाई तो ख़राब नहीं होगी|
भाई साहब उपदेश बहुत अच्छा देते थे। ऐसीऐस-ी बाते करते थे जो सीधे दिल में लगती थी ले कन भाई साहब की डाँट फटकार का असर एक दो घंटे तक ही रहता था और वह इरादा - कर लेता था क आगे से खूब मन लगाकर पढ़ाई करेगा। यही सोच कर जल्दी जल्दी एक समय सारणी बना देता।परन्तु समय सारणी बनाना अलग बात होती है और उसका पालन करना अलग बात होती है।

वा र्षक परीक्षा हुई। भाई साहब फेल हो गए और लेखक पास हो गया और लेखक अपनी कक्षा में प्रथम आया। अब लेखक और भाई साहब के बीच केवल दो साल का ही अंतर रह गया था। इसबात से उसे अपने ऊपर घमण्ड हो गया था और उसके अंदर आत्मसम्मान भी बढ़ गया था। बड़े भाई साहब लेखक को कहते हैं क वे ये मत सोचो क वे फेल हो गए हैं, जब वह उनकी कक्षा में आएगा, तब उसे पता चलेगा क कतनी मेहनत करनी पड़ती है। जब अलजेबरा और जामेट्री करते हुए कठिन परिश्रम करना पड़ेगा और इंग्लिस्तान का इतिहास याद करना पड़ेगा तब उसे पता चलेगा। बादशाहों के नाम याद रखने में ही कतनी परेशानी होती है। परीक्षा में कहा जाता है क -'समय की पाबंदी' पर निबंध लखो, जो चार पन्नों से कम नहीं होना चाहिए।अब आप अपनी कॉपी सामने रख कर अपनी कलम हाथ में लेकर सोचसोच कर - पागल होते रहो। लेखक सोच रहा था क अगर पासहोने पर इतनी बेज्जती हो रही है तो अगर वह फेल हो गया होता तो पता नहीं भाई साहब क्या करते, शायद उसके प्राण ही ले लेते। ले कन इतनी बेज्जती होने के बाद भी पुस्तकों के प्रति उसकी कोई रू च नहीं हुई। खेलकूद - का जो भी अवसर मलता वह हाथ से नहीं जाने देता। पढ़ता भीथा, ले कन बहुत कम। बस इतना पढ़ता था की कक्षा में बेज़्ज़ती न हो| फर से सालाना परीक्षा हुई और कुछ ऐसा इतिफाक हुआ क लेखक फर से पास हो गया और भाई साहब इस बार फर फेल हो गए।जब परीक्षा का परिणाम सुनाया गया तो भाई साहब रोने लगे और लेखक भी रोने लगा। अब भाई साहब का स्वभाव कुछ नरम हो गया था। कई बार लेखक को डाँटने का अवसर होने पर भी वे लेखक को नहीं डाँटते थे ,शायद उन्हें खुद ही लग रहा था क अब उनके पास लेखक को डाँटने का अ धकार नहीं है और अगर है भी तो बहुत कम। अब लेखक की स्वतंत्रता और भी बढ़ गई थी। वह भाई साहब की सहनशीलता का गलत उपयोग कर रहा था। उसके अंदर एक ऐसी धारणा ने जन्म ले लया था क वह चाहे पढ़े या न पढ़े, वह तो पास हो ही जायेगा । उसकी कस्मत बहुत अच्छी है इसी लए भाई साहब के डर से जो थोड़ा बहुत पढ़ लया करता था, वह भी बंद हो गया। अब लेखक को पतंगबाज़ी का नया शौक हो गया था और अब उसका सारा समय पतंगबाज़ी में ही गुजरता था। फर भी, वह भाई साहब की इज्जत करता था और उनकी नजरों से छिप कर ही पतंग उडाता था। एक दिन शाम के समय ,हॉस्टल से दूर लेखक एक पतंग को पकड़ने के लए बिना कसी की परवाह कए दौड़ा जा रहा था|

अचानक भाई साहब से उसका आमना सामना हुआ-, वे शायद बाजार से घर लौट रहे थे। उन्होंने बाजार में ही उसका हाथ पकड़ लया और बड़े क्रो धत भाव से बोले 'इन बेकार के लड़कों के साथ तुम्हें बेकार के पतंग को पकड़ने के लए दौड़ते हुए शर्म नहीं आती ? तुम्हे इसका भी कोई फर्क नहीं पड़ता क अब तुम छोटी कक्षा में नहीं हो ,बल्कि अब तुम आठवीं

कक्षा में हो गए हो और मुझसे सर्फ एक कक्षा पीछे पढ़ते हो। आ खर आदमी को थोड़ा तो अपनी पदवी के बारे में सोचना चाहिए। समझ कताबें पढ़ लेने से नहीं आती, बल्कि दुनिया देखने से आती है। बड़े भाई साहब लेखक को कहते हैं क यह घमंड जो अपने दिल में पाल रखा है क बिना पढ़े भी पास हो सकते हो और उन्हें लेखक को डाँटने और समझने का कोई अ धकार नहीं रहा, इसे निकाल डालो। बड़े भाई साहब के रहते लेखक कभी गलत रस्ते पर नहीं जा सकता। बड़े भाई साहब लेखक से कहते हैं क अगर लेखक नहीं मानेगा तो भाई साहब थप्पड़ का प्रयोग भी कर सकते हैं और उसको उनकी बात अच्छी नहीं लग रही होगी।लेखक भाई साहब की इस समझाने की नई योजना के कारण उनके सामने सर झुका कर खड़ा था। आज लेखक को सचमुच अपने छोटे होने का एहसास हो रहा था न केवल उम्र से बल्कि मन से भी और भाई साहब के लए उसके मन में इज़्ज़त और भी बड़ गई। लेखक ने उनके प्रश्नो का उत्तर नम आँखों से दिया क भाई साहब जो कुछ कह रहे है वो बिलकुल सही है और उनको ये सब कहने का अ धकार भी है।भाई साहब ने लेखक को गले लगा दिया और कहा क वे लेखक को पतंग उड़ाने से मना नहीं करते हैं। उनका भी मन करता है क वे भी पतंग उड़ाएँ। ले कन अगर वे ही सही रास्ते से भटक जायेंगें तो लेखक की रक्षा कैसे करेंगे ? बड़ा भाई होने के नाते यह भी तो उनका ही कर्तव्य है|

इतिफाक से उस समय एक कटी हुई पतंग लेखक के ऊपर से गुज़री। उसकी डोर कटी हुई थी और लटक रही थी। लड़कों का एक झुण्ड उसके पीछेपीछे दौड़ रहा था। भाई साहब लम्बे तो - थे ही, उन्होंने उछाल कर डोर पकड़ ली और बिना सोचे समझे हॉस्टल की और दौड़े और लेखक भी उनके पीछे पीछे दौड़ रहा था-|

*बहुवैकल्पिक प्रश्नोत्तर-

Q1- प्रेम चन्द जी ने साहित्य का नाता कस से जोडा ?

A) स्वयं से

B) अपने जन्म स्थान से

C) कसी से नही

D) जन जीवन से

Q2- प्रेम चन्द जी जीवन भर कस से जूझते रहे ?

A) स्वयं से

B) लोगो से

C) फ़ल्म्कारो से

D) आ र्थक तङ्गी से

Q3- बडे भाई साहिब उनकी अन्य रचनाओ से कस दृष्टि से उच्च कोटि की रचना है ?

A) भाषा शेली की

B) साहित्य की

C) कहानी की

D) शब्दों के चयन की

Q4- वे मुम्बई मे पटकथा लेखक के रूप मे ज्यादा देर तक कार्य क्यो नही कर पाये ?

A) फ़ल्म निर्माताओ के निर्देश के अनुसार लखने के कारण

B) घर से दूर होने कारण

C) रु च न होने के कारण

D) समय न होने के कारण

Q5- बडे भाई साहिब कहानी कस शैली मे लखी गयी है ?

A) व्यंग्यात्मक

B) करुणामयी

C) आत्म कथात्मक

D) सभी

Q6- प्रेम जी का शरीर जर्जर क्यो हो गया ?

A) निरन्तर वकट परिस्ति थयो का सामना करने के कारण

B) पानी के कारण

C) आ र्थक तन्गी के कारण

D) सभी

Q7- प्रेम जी प्रमुख रूप से क्या थे ?

A) कथाकार

B) लेखक

C) गायक

D) कहानीकार

Q8- प्रेम जी ने कस वर्ग को वस्तारपूर्वक व र्णत कया है ?

A) शोषक एवं शो षत

B) फ़ल्मी वर्ग को

C) आम जनता को

D) सभी

Q9- इस कहानी मे कन शब्दो का सुन्दर मश्रण है ?

A) तत्सम

B) तदभव

C) देशज एवं वदेशी

D) सभी

Q10- प्रेम जी ने लगभग कतनी कहानियां लखी ?

A) 200
B) 300
C) 400
D) लगभग 100

निम्न ल खत प्रश्नों के उत्तर (25 -30) शब्दों में दीजिए -:

प्रश्न 1 -: छोटे भाई ने अपनी पढ़ाई का टाइम टेबल बनाते समय क्या क्या सोचा और फर उसका पालन क्यों नहीं कर पाया?

उत्तरटेबिल बनाया-छोटे भाई ने अधक मन लगाकर पढ़ने का निश्चय कर टाइम-, जिसमें खेलकूद के लए कोई स्थान नहीं था। पढ़ाई का टाइमटेबिल बना लेना एक बात है -टेबिल बनाते समय उसने यह सोचा क टाइम-टेबिल का पालन न-टेबिल पर अमल करना दूसरी बात है। यह टाइम-और बनाए गए टाइम कर पाया, क्योंक मैदान की हरियाली, फुटबॉल की उछलकूद-, बॉलीबॉल की तेज़ी और फुरती उसे अज्ञात और अनिवार्य रूप से खींच ले जाती और वहाँ जाते ही वह सब कुछ भूल जाता।

प्रश्न 2 -: एक दिन जब गुल्ली -डंडा खेलने के बाद छोटा भाई बड़े भाई साहब के सामने पहुंचा तो उनकी क्या प्रति क्रया हुई?

उत्तर :-एक दिन जब गुल्ली -डंडा खेलने के बाद छोटा भाई बड़े भाई साहब के सामने पहुंचा तो उनकी प्रति क्रया बहुत भयानक थी। वह बहुत गुस्से में थे। उन्होंने छोटे भाई को डांटते हुए कहा क प्रथम दर्जे में पास होने का उसे घमण्ड हो गया है और घमण्ड के कारण रावण जैसे भूमण्डल के स्वामी का भी नाश हो गया था तो हम तो फर भी साधारण इंसान हैं। बड़े भाई साहब ने छोटे भाई को गुल्ली -डंडा खेलने के बजाये पढ़ाई में ध्यान देने की नसीहत दी|

प्रश्न 3 -: बड़े भाई साहब को अपने मन की बात क्यों दबानी पड़ती थी?

उत्तर :-बड़े भाई साहब और छोटे भाई की उम्र में पांच साल का अंतर था। वे माता पता से दूर हॉस्टल में रहते थे। बड़े भाई साहब का भी मन खेलने ,पतंग उड़ाने और तमाशे देखने का करता था परन्तु वे सोचते थे की अगर वो बड़े होकर मनमानी करेंगे तो छोटे भाई को गलत

रास्ते पर जाने से कैसे रोकेंगे। बड़े भाई साहब छोटे भाई का ध्यान रखना अपना कर्तव्य मानते थे इसी लए उन्हें अपनी इच्छाए दबनी पड़ती थी।

प्रश्न 4 -: बड़े भाई साहब छोटे भाई को क्या सलाह देते थे और क्यों ?

उत्तर :-बड़े भाई साहब चाहते थे क छोटा भाई खेल -कूद में ज्यादा ध्यान न देकर पढ़ाई में ध्यान दे। वे छोटे भाई को हमेशा सलाह देते थे क अंग्रेजी में ज्यादा ध्यान दो ,अंग्रेजी पढ़ना हर कसी के बस की बात नहीं है। अगर पढ़ाई में ध्यान नहीं दोगे तो उसी कक्षा में रह जाओगे। इस लए बड़े भाई साहब छोटे को खेलकूद से ध्यान हटाने की सलाह देते थे|

प्रश्न 5 -: छोटे भाई ने बड़े भाई साहब के नरम व्यवहार का क्या फायदा उठाया ?

उत्तर :-छोटे भाई ने बड़े भाई साहब के नरम व्यवहार का अनु चत लाभ उठाया। उसपर बड़े भाई का डर कम हो गया। भाई के डर से जो थोड़ी बहुत पढाई करता था वह भी बंद कर दी थी क्यों क छोटे भाई को लगता था क वह पढ़े या ना पढ़े पास हो ही जायेगा। वह अपना सारा समय मौज मस्ती और खेल के मैदान में बिताने लगा था।

(ख) निम्न ल खत प्रश्नों के उत्तर(50 -60) शब्दों में ल खए-

प्रश्न 1 -: बड़े भाई की डाँट फटकार अगर ना मलती, तो क्या छोटा भाई कक्षा में अव्वल आता ?अपने वचार प्रकट कीजिए|

उत्तर -: बड़े भाई साहब को अपनी जिम्मेदारिओं का आभास था वे जानते थे क अगर वह अनुशासन हीनता करेंगे तो छोटे भाई को गलत रास्ते पर जाने से नहीं रोक पाएंगे। छोटा भाई जब भी खेल कूद में ज्यादा समय लगाता तो बड़े भाई साहब उसे डाँट लगाते और पढ़ाई में ध्यान लगाने को कहते। यह बड़े भाई का ही डर था क छोटा भाई थोड़ा बहुत पढ़ लेता था। अगर बड़े भाई साहब छोटे भाई को डाँट फटकार नहीं लगते तो छोटा भाई कभी कक्षा में अव्वल नहीं आता।

प्रश्न 2 -: बड़े भाई साहब पाठ में लेखक ने समूची शक्षा के कन तौर तरीकों पर व्यंग्य कया है? क्या आप उनके वचारो से सहमत है ?

उत्तर बड़े भाई साहब पाठ में लेखक ने समूची शक्षा के तौर तरीकों पर व्यंग्य करते हुए :- कहा है क ये शक्षा अंग्रेजी बोलने ,पढ़ने पर जोर देती है चाहे कसी को अंग्रेजी पढ़ने में रू च है या नहीं। अपने देश के इतिहास के साथ साथ दूसरे देशों के इतिहास को भी पढ़ना पढ़ता है जो बिलकुल भी जरुरी नहीं है। यहाँ पर रटने वाली प्रणाली पर जोर दिया जाता है। बच्चों को कोई वषय समझ में आये या ना आये रट कर परीक्षा में पास हो ही जाते हैं। छोटे छोटे -

लम्बे निबंध लखने होते हैं। ऐसी शक्षा प्रणाली जो लाभदायक कम और - वषयों पर लम्बे बोझ ज्यादा लगे ठीक नहीं है|

प्रश्न 3 -: बड़े भाई साहब के अनुसार जीवन की समझ कैसे आती है ?

उत्तर बड़े भाई साहब के अनुसार जीवन की समझ केवल कताबी ज्ञान से नहीं आती। :- बल्कि जीवन के अनुभवों से आती है। इसके लए उन्होंने अपनी अम्मा,दादा और हेडमास्टर की माँ के उदाहरण भी दिए है। उनका कहना है क हम इतने पढ़े होने के बाद भी अगर बीमार भी पड़ जाते है तो परेशान हो जाते हैं ले कन हमारे माँ दादा बिना पढ़े भी हर मुसीबत का सामना बड़ी आसानी से करते है इसमें केवल इतना ही फर्क है क उनके पास हमसे ज्यादा जीवन का अनुभव है। बड़े भाई के अनुसार अनुभव ही समझ दिलाता है।

प्रश्न 4 -: छोटे भाई के मन में बड़े भाई के प्रति श्रद्धा क्यों उत्पन्न हुई ?

उत्तर एक दिन शाम के समय :-,हॉस्टल से दूर जब छोटा भाई एक पतंग को पकड़ने के लए बिना कसी की परवाह कये दौड़ा जा रहा था, अचानक भाई साहब से उसका आमना - सामना हुआ।उन्होंने बाजार में ही उसका हाथ पकड़ लया और बड़े क्रो धत भाव से बोले लेखक भले ही बहुत प्रतिभावान है‘,इसमें कोई शक नहीं हैं ,ले कन जो प्रतिभा कसी को शर्म लहाज़ न सखाये वो कस काम की।बड़े भाई साहब कहते हैं क लेखक भले ही अपने मन में सोचता होगा क वह उनसे सर्फ एक ही कक्षा पीछे रह गया है और अब उन्हें लेखक को डाँटने या कुछ कहने का कोई हक नहीं है ,ले कन ये सोचना लेखक की गलती है।बड़े भाई साहब उससे पांच साल बड़े हैं और हमेशा ही रहेंगे । समझ कताबें पढ़ लेने से नहीं आती ,बल्कि दुनिया देखने से आती है।बड़े भाई साहब लेखक को कहते हैं क यह घमंड जो उसने दिल में पाल रखा है क वह बिना पड़े भी पास हो सकता है और भाई साहब को उसे डाँटने और समझने का कोई अ धकार नहीं रहा ,इसे निकल डाले। बड़े भाई साहब के रहते लेखक कभी गलत रस्ते पर नहीं जा सकता।बड़े भाई साहब लेखक से कहते हैं क अगर लेखक नहीं मानेगा तो भाई साहब थप्पड़ का प्रयोग भी कर सकते हैं और बड़े भाई साहब लेखक को कहते हैं क उसको उनकी बात अच्छी नहीं लग रही होगी।छोटा भाई , भाई साहब की इस समझने की नई योजना के कारण उनके सामने सर झुका कर खड़ा था। आज उसे सचमुच अपने छोटे होने का एहसास हो रहा था न केवल उम्र से बल्कि मन से भी और भाई साहब के लए उसके मन में इज़्ज़त और भी बड़ गई|

प्रश्न 5 -: बड़े भाई साहब की स्वभावगत वशेषताएँ बताइए।

उत्तर -: बड़े भाई साहब अध्ययनशील थे। हमेशा कताबे खोल कर बैठे रहते थे। दिन रात कठिन परिश्रम करते थे। चाहे उन्हें समझ में आये या ना आये, वे फर भी एक -एक अक्षर को रट लया करते थे। अपने बड़े होने का उन्हें एहसास है ,इस लए वे छोटे भाई को तरह तरह से समझते हैं। अपने कर्तव्य के लए वे अपनी बहुत सी इच्छाओं को दबा देते थे। छोटे भाई को कताबी ज्ञान से हट कर अनुभव के महत्त्व को समझते थे और कहते थे की उनके रहते वह कभी गलत रास्ते पर नहीं चल पायेगा।

प्रश्न 6 -: बड़े भाई साहब ने जिंदगी के अनुभव और कताबी ज्ञान में से कसे और क्यों महत्पूर्ण कहा है?

उत्तर बड़े भाई साहब ने जिंदगी :-के अनुभव और कताबी ज्ञान में से जिंदगी के अनुभव को महत्पूर्ण कहा है। उन्होंने पाठ में कई उदाहरणों से ये स्पष्ट कया है। अम्मा और दादा का उदाहरण और हेडमास्टर का उदाहरण दे कर बड़े भाई साहब कहते है क चाहे कतनी भी बड़ी डग्री क्यों न हो जिंदगी के अनुभव के आगे बेकार है। जिंदगी की कठिन परिस्थितियों का सामना अनुभव के आधार पर सरलता से कया जा सकता है|

संचयन-पाठ-१-हरिहर काका

हरिहर काका पाठ सार-

लेखक कहता है क वह हरिहर काका के साथ बहुत गहरे से जुड़ा था। लेखक का हरिहर काका के प्रति जो प्यार था वह लेखक का उनके व्यावहार के और उनके वचारों के कारण था और उसके दो कारण थे। पहला कारण था क हरिहर काका लेखक के पड़ोसी थे और दूसरा कारण लेखक को उनकी माँ ने बताया था क हरिहर काका लेखक को बचपन से ही बहुत ज्यादा प्यार करते थे। जब लेखक व्यस्क हुआ तो उसकी पहली दोस्ती भी हरिहर काका के साथ ही हुई थी। लेखक के गाँव की पूर्व दिशा में ठाकुर जी का वशाल मंदिर था, जिसे गाँव के लोग ठाकुरबारी यानि देवस्थान कहते थे। लोग ठाकुर जी से पुत्र की मन्नत मांगते, मुक़दमे में जीत, लड़की की शादी कसी अच्छे घर में हो जाए, लड़के को नौकरी मल जाए आदि मन्नत माँगते थे। मन्नत पूरी होने पर लोग अपनी ख़ुशी से ठाकुरजी को रूपए, ज़ेवर, और अनाज चढ़ाया करते थे। जिसको बहुत अ धक ख़ुशी होती थी वह अपने खेत का छोटासा भाग ठाकुरजी के नाम कर - देता था और यह एक तरह सेप्रथा ही बन गई। लेखक कहता है क उसका गाँव अब गाँव के नाम से नहीं बल्कि देव-स्थान की वजह से ही पहचाना जाता था। उसके गाँव का यह देव-स्थान उस इलाके का सबसे बड़ा और प्र सद्ध देवस्थान था। हरिहर काका ने अपनी स्थान में जाना बंद कर दिया था।-परिस्थितिओं के कारण देव मन बहलाने के लए लेखक भी भी कभीसंत उसे -स्थान चला जाता था। ले कन लेखक कहता है क वहाँ के साधु-कभी देव-बिलकुल भी पसंद नहीं थे। क्यों क वे काम करने में कोई दिलचस्पी नहीं रखते थे। भगवान को भोग लगाने के नाम पर वे दिन के दोनों समय हलवा करवाते थे। वे खुद अगर कोई काम करते थे तो वो था बातें बनवाने का काम। लेखक हरिहर काका के बारे में बताता हुआ कहता है क हरिहर काका और उनके तीन भाई हैं। सबकी शादी हो चुकी है। हरिहर काका के अतिरिक्त सभी तीन भाइयों के बालबच्चे हैं। कुछ समय तक तो हरिहर काका की सभी चीज़ों का - अच्छे से ध्यान रखा गया, परन्तु फर कुछ दिनों बाद हरिहर काका को कोई पूछने वाला नहीं था। लेखक कहता है क अगर कभी हरिहर काका के शरीर की स्थिति ठीक नहीं होती तो हरिहर काका पर मुसीबतों का पहाड़ ही गर जाता। क्यों क इतने बड़े परिवार के रहते हुए भी हरिहर काका को कोई पानी भी नहीं पूछता था। बारामदे के कमरे में पड़े हुए हरिहर काका को

अगर कसी चीज़ की जरुरत होती तो उन्हें खुद ही उठना पड़ता। एक दिन उनका भतीजा शहर से अपने एक दोस्त को घर ले आया । उन्हीं के आने की ख़ुशी में दोतीन तरह की - सब्ज़ियाँ, बजके, चटनी, रायता और भी बहुत कुछ बना था। सब लोगों ने खाना खा लया और हरिहर काका को कोई पूछने तक नहीं आया। हरिहर काका गुस्से में बरामदे की ओर चल पड़े और जोरजोर से बोल रहे थे क उनके भाई की पत्नियाँ क्या यह सोचती हैं क वे उन्हें मुफ्त - में खाना खला रही हैं। उनके खेत में उगने वाला अनाज भी इसी घर में आता है।

हरिहर काका के गुस्से का महंत जी ने लाभ उठाने की सोची। महंत जी हरिहर काका को अपने साथ देव-स्थान ले आए और हरिहर काका को समझाने लगे की उनके भाई का परिवार केवल उनकी जमीन के कारण उनसे जुड़ा हुआ है, कसी दिन अगर हरिहर काका यह कह दें क वे अपने खेत कसी और के नाम लख रहे हैं, तो वे लोग तो उनसे बात करना भी बंद कर देंगें। खून के रिश्ते ख़त्म हो जायेंगे। महंत हरिहर काका से कहता है क उनके हिस्से में जितने खेत हैं वे उनको भगवान के नाम लख दें। ऐसा करने से उन्हें सीधे स्वर्ग की प्राप्ति होगी।सुबह होते ही हरिहर काका के तीनों भाई देव-स्थान पहुँच गए। तीनों हरिहर काका के पाँव में गर कर रोने लगे और अपनी पत्नियों की गलती की माफ़ी माँगने लगे और कहने लगे की वे अपनी पत्नियों को उनके साथ कए गए इस तरह के व्यवहार की सज़ा देंगे। हरिहर काका के मन में दया का भाव जाग गया और वे फर से घर वा पस लौट कर आ गए। जब अपने भाइयों के समझाने के बाद हरिहर काका घर वा पस आए तो घर में और घर वालों के व्यवहार में आए बदलाव को देख कर बहुत खुश हो गए। घर के सभी छोटे-बड़े सभी लोग हरिहर काका का आदर-सत्कार करने लगे।

गाँव के लोग जब भी कहीं बैठते तो बातों का ऐसा सल सला चलता जिसका कोई अंत नहीं था। हर जगह बस उन्हीं की बातें होती थी। कुछ लोग कहते क हरिहर काका को अपनी जमीन भगवान के नाम लख देनी चाहिए। इससे उत्तम और अच्छा कुछ नहीं हो सकता। इससे हरिहर काका को कभी न ख़त्म होने वाली प्र सद् ध प्राप्त होगी। इसके वपरीत कुछ लोगों की यह मानते|

थे क भाई का परिवार भी तो अपना ही परिवार होता है। अपनी जायदाद उन्हें न देना उनके साथ अन्याय करना होगा। हरिहर काका के भाई उनसे प्रार्थना करने लगे क वे अपने हिस्से की जमीन को उनके नाम लखवा दें। इस वषय पर हरिहर काका ने बहुत सोचा और अंत में इस परिणाम पर पहुंचे क अपने जीते-जी अपनी जायदाद का स्वामी कसी और को बनाना ठीक नहीं होगा। फर चाहे वह अपना भाई हो या मंदिर का महंत। क्यों क उन्हें अपने गाँव और इलाके के वे कुछ लोग याद आए, जिन्होंने अपनी जिंदगी में ही अपनी जायदाद को अपने

रिश्तेदारों या कसी और के नाम लखवा दिया था। उनका जीवन बाद में कसी कुत्ते की तरह हो गया था, उन्हें कोई पूछने वाला भी नहीं था। हरिहर काका बिलकुल भी पढ़े- लखे नहीं थे, परन्तु उन्हें अपने जीवन में एकदम हुए बदलाव को समझने में कोई गलती नहीं हुई और उन्होंने फैसला कर लया क वे जीते-जी कसी को भी अपनी जमीन नहीं लखेंगे।

लेखक कहता है क जैसे-जैसे समय बीत रहा था महंत जी की परेशानियाँ बढ़ती जा रही थी। उन्हें लग रहा था क उन्होंने हरिहर काका को फसाँने के लए जो जाल फेंका था, हरिहर काका उससे बाहर निकल गए हैं, यह बात महंत जी को सहन नहीं हो रही थी। आधी रात के आस-पास देव-स्थान के साधु-संत और उनके कुछ साथी भाला, गंड़ासा और बंदूकों के साथ अचानक ही हरिहर काका के आँगन में आ गए। इससे पहले हरिहर काका के भाई कुछ सोचें और कसी को अपनी सहायता के लए आवाज लगा कर बुलाएँ, तब तक बहुत देर हो गई थी। हमला करने वाले हरिहर काका को अपनी पीठ पर डाल कर कही गायब हो गए थे|वे हरिहर काका को देव-स्थान ले गए थे। एक ओर तो देव-स्थान के अंदर जबरदस्ती हरिहर काका के अँगूठे का निशान लेने और पकड़कर समझाने का काम चल रहा था, तो वहीं दूसरी ओर हरिहर काका के तीनों भाई सुबह होने से पहले ही पु लस की जीप को लेकर देव-स्थान पर पहुँच गए थे। महंत और उनके सा थयों ने हरिहर काका को कमरे में हाथ और पाँव बाँध कर रखा था और साथ ही साथ उनके मुँह में कपड़ा ठूँसा गया था ता क वे आवाज़ न कर सकें। परन्तु हरिहर काका दरवाज़े तक लुढ़कते हुए आ गए थे और दरवाज़े पर अपने पैरों से धक्का लगा रहे थे ता क बाहर खड़े उनके भाई और पु लस उन्हें बचा सकें।

दरवाज़ा खोल कर हरिहर काका को बंधन से मुक्त कया गया। हरिहर काका ने पु लस को बताया क वे लोग उन्हें उस कमरे में इस तरह बाँध कर कही गुप्त दरवाज़े से भाग गए हैं और उन्होंने कुछ खली और कुछ लखे हुए कागजों पर हरिहर काका के अँगूठे के निशान जबरदस्ती लए हैं।

यह सब बीत जाने के बाद हरिहर काका फर से अपने भाइयों के परिवार के साथ रहने लग गए थे। चौबीसों घंटे पहरे दिए जाने लगे थे। यहाँ तक क अगर हरिहर काका को कसी काम के कारण गाँव में जाना पड़ता तो ह थयारों के साथ चार-पाँच लोग हमेशा ही उनके साथ रहने लगे|लेखक कहता है क हरिहर काका के साथ जो कुछ भी हुआ था उससे हरिहर काका एक सीधे-सादे और भोले कसान की तुलना में चालाक और बुद् धमान हो गए थे। उन्हें अब सब कुछ समझ में आने लगा था क उनके भाइयों का अचानक से उनके प्रति जो व्यवहार परिवर्तन हो गया था, उनके लए जो आदर-सम्मान और सुरक्षा वे प्रदान कर रहे थे, वह उनका कोई सगे भाइयों का प्यार नहीं था बल्कि वे सब कुछ उनकी धन-दौलत के कारण कर रहे हैं,

नहीं तो वे हरिहर काका को पूछते तक नहीं। जब से हरिहर काका देव-स्थान से वा पस घर आए थे, उसी दिन से ही हरिहर काका के भाई और उनके दूसरे नाते-रिश्तेदार सभी यही सोच रहे थे क हरिहर काका को क़ानूनी तरीके से उनकी जायदाद को उनके भतीजों के नाम कर देना चाहिए। क्यों क जब तक हरिहर काका ऐसा नहीं करेंगे तब तक महंत की तेज़ नज़र उन पर टिकी रहेगी। जब हरिहर काका के भाई हरिहर काका को समझाते-समझाते थक गए, तो उन्होंने हरिहर काका को डाँटना और उन पर दवाब डालना शुरू कर दिया। एक रात हरिहर काका के भाइयों ने भी उसी तरह का व्यवहार करना शुरू कर दिया जैसा महंत और उनके सहयो गयों ने कया था। उन्हें धमकाते हुए कह रहे थे क ख़ुशी-ख़ुशी कागज़ पर जहाँ-जहाँ जरुरत है, वहाँ-वहाँ अँगूठे के निशान लगते जाओ, नहीं तो वे उन्हें मार कर वहीँ घर के अंदर ही गाड़ देंगे और गाँव के लोगो को इस बारे में कोई सूचना भी नहीं मलेगी। हरिहर काका के साथ अब उनके भाइयों की मारपीट शुरू हो गई। जब हरिहर काका अपने भाइयों का मुकाबला नहीं कर पा रहे थे, तो उन्होंने ज़ोर-ज़ोर से चल्लाकर अपनी मदद के लए गाँव वालों को आवाज लगाना शुरू कर दिया। तब उनके भाइयों को ध्यान आया क उन्हें हरिहर काका का मुँह पहले ही बंद करना चाहिए था। उन्होंने उसी पल हरिहर काका को जमीन पर पटका और उनके मुँह में कपड़ा ठूँस दिया। ले कन तब तक बहुत देर हो गई थी, हरिहर काका की आवाजें बाहर गाँव में पहुँच गई थी। हरिहर काका के परिवार और रिश्ते-नाते के लोग जब तक गाँव वालों कोसमझाते की यह सब उनके परिवार का आपसी मामला है, वे सभी इससे दूर रहें, तब तक महंत जी बड़ी ही दक्षता और तेज़ी से वहाँ पु लस की जीप के साथ आ गए। पु लस ने पुरे घर की अच्छे से तलाशी लेना शुरू कर दिया। फर घर के अंदर से हरिहर काका को इतनी बुरी हालत में हा सल कया गया जितनी बुरी हालत उनकी देव-स्थान में भी नहीं हुई थी। हरिहर काका ने बताया क उनके भाइयों ने उनके साथ बहुत ही ज्यादा बुरा व्यवहार कया है, जबरदस्ती बहुत से कागजों पर उनके अँगूठे के निशान ले लए है, उन्हें बहुत ज्यादा मारा-पीटा है।इस घटना के बाद हरिहर काका अपने परिवार से एकदम अलग रहने लगे थे। उन्हें उनकी सुरक्षा के लए चार राइफलधारी पु लस के जवान मले थे। आश्चर्य की बात तो यह है क इसके लए उनके भाइयों और महंत की ओर से काफ़ी प्रयास कए गए थे|

*-बहुवैकल्पिक प्रश्नोत्तर-

Q1- हरिहर काका कहानी के लेखक कौन हैं ?

A) गुरदयाल संह

B) मथलेश्वर

C) कोई नहीं

D) दयाल संह

Q2- ठाकुरबारी के प्रति गांव वालो के मन में क्या है?

A) अपार श्रद्धा

B) घृणा

C) नफरत

D) प्रेम

Q3- ठाकुरबारी में गांव के लोगो ने मंदिर कैसे बनवाया था?

A)पैसो से

B) ठाकुर के पैसो से

C) चंदा इकठा करके

D) कोई नहीं

Q4- गांव के लोग अपनी सफलता का श्रेय कसको देते हैं?

A)सरपंच को

B) ठाकुरबारी जी को

C) स्वयं को

D) कोई नहीं

Q5- ठाकुरबारी में लोग अपनी श्रद्धा कैसे व्यक्त करते है ?

A)रूपए देकर

B) जेवर

C) सभी

D) अन्न देकर

Q6- ठाकुरबारी के नाम पर कतने खेत हैं ?

A) १० बीघे

B) २० बीघे

C) ३० बीघे

D) २ बीघे

Q7- गांव वालो की अपार श्रद्धा से उनकी कस मनोवृति का पता चलता है ?

A) अंध भक्ति

B) अवश्वास

C) धार्मक प्रवृति का

D) वश्वास की

Q8- महंत और हरिहर काका के भाई एक ही श्रेणी के क्यों हैं ?

A) दोनों दुर्व्यवहार करते हैं

B) दोनों ने ज़मीन हथयाने का षड्यंत्र कया

C) दोनों

D) कोई नहीं

Q9- महंत ने हरिहर काका की कस परिस्तिथ का लाभ उठाया ?

A) पारिवारिक मजबूरी का

B) गरीबी का

C) पारिवारिक नाराजगी का

D) नाराजगी का

Q10- महंत ने हरिहर काका को कस आधार पर ब्लैकमेल कया ?

A) भावनात्मक आधार पर

B) परिवार के नाम पर

C) धर्म के नाम पर

D) कोई नहीं

*-प्रश्न अभ्यास (महत्वपूर्ण प्रश्न उत्तर)

प्रश्न 1.कथावाचक और हरिहर काका के बीच क्या संबंध है और इसके क्या कारण हैं?

उत्तर:कथावाचक और हरिहर काका के बीच घनिष्ठ दोस्तों जैसे प्यार भरा रिश्ता था।

- इसका कारण यह था क ये दोनों एक ही गाँव के रहने वाले थे। लेखक उनके हर सुख-दुख में उनके पास पहुँच जाता था।
- हरिहर काका के कोई संतान नही थी। वे लेखक को बचपन से बहुत प्यार करते थे। बड़ा होते-होते यही दुलार दोस्ती में बदल गया।

हरिहर काका अपनी सारी बातें लेखक से बता दिया करते थे|

प्रश्न 2.हरिहर काका को महंत और अपने भाई एक ही श्रेणी के क्यों लगने लगे?

उत्तर:महंत एवं हरिहर काका के भाई, दोनों की स्वार्थ-लप्सो, दोनों का अपने प्रति क्रूर दुर्व्यवहार देखकर हरिहर काका को वे एक ही श्रेणी के लगने लगे। दोनों का लक्ष्य एक ही था-हरिहर काका की जमीन

हथयाला। इसके लए दोनों ने ही छल-बल का प्रयोग कया और उनके वश्वास को ठेस पहुँचाई। दोनों में कोई अंतर नहीं था।

प्रश्न 3.ठाकुरबारी के प्रति गाँव वालों के मन में अपार श्रद्धा के जो भाव हैं, उससे उनकी कस मनोवृत्त का पता चलता है?

उत्तर:ठाकुरबारी के प्रति गाँव वालों के मन में अपार श्रद्धा का भाव है। यह उनकी मनोवृत्त से पता चलता है, क्योंक-

- लोग पुत्र प्राप्ति, लड़की की शादी अच्छे घर में तय होने, लड़के को नौकरी मलने आदि को ठाकुर जी की कृपा मानते थे।
- वे खुशी के अवसर पर ठाकुर जी पर रुपये, जेवर, अनाज आदि चढ़ाते थे तथा अधक खुशी होने पर अपनी जमीन का एक भाग ठाकुर जी के नाम लख देते थे।
- वे बाढ़, भूकंप जैसी प्राकृतिक आपदा में राहत पाने के लए ठाकुर जी से प्रार्थना करते थे।वे अपनी मनोकामना की पूर्ति हेतु ठाकुर जी से प्रार्थना करते थे|

प्रश्न 4.अनपढ़ होते हुए भी हरिहर काका दुनिया की बेहतर समझ रखते हैं। कहानी के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर:अनपढ़ होते हुए भी हरिहर काका दुनिया की बेहतर समझे इसलए रखते हैं, क्योंक जिंदगी में उन्हें जो अनुभव हुए, उन अनुभवों ने उनकी समझ को निखार दिया। परिवार वाले और मठाधीश दोनों ही उनके लए काल-वकराल बन जाते हैं। इन दोनों ने हरिहर काका से 15 बीघे जमीन हथयाने के लए हर तरह के हथकंडे अपनाए तथा उनपर बहुत ज़ुल्म और अत्याचार कए। इन सबके बावजूद हरिहर काका ने जीते जी अपनी जमीन कसी के नाम नहीं लखी, क्योंक अपनी जमीन इनके नाम करके वे मौत मरना चाहते थे। ये सभी बातें यही स्पष्ट करती हैं क अनपढ़ होते हुए भी हरिहर काका दुनिया की बेहतर समझ रखते हैं।

प्रश्न 5.हरिहर काका को जबरन उठा ले जाने वाले कौन थे? उन्होंने उनके साथ कैसा बर्ताव कया?

उत्तर:हरिहर काका को जबरन उठा ले जाने वाले लोग ठाकुरबारी के साधु-संत और महंत के पक्ष के लोग थे। हरिहर काका अपनी जमीन ठाकुरबारी के नाम लखने को तैयार न थे। वे अपने भाइयों के घेरे में रह रहे थे तब काका से बलपूर्वक जमीन-जायदाद की वसीयत करने का एकमात्र यही उपाय नजर आया। ठाकुरबारी में महंत के लोगों ने काका के साथ बुरा बरताव कया। उन्होंने काका के मुँह में कपड़ा ढूंस दिया। उन्होंने अनेक जगह सादे कागजों पर अँगूठा लगवाया और उनके हाथ-पैर बाँधकर एक कमरे में डालकर ताला बंद कर दिया और भाग गए।

प्रश्न 6.हरिहर काका के मामले में गाँव वालों की क्या राय थी और उसके क्या कारण थे?

उत्तर,हरिहर काका के मामले में गाँव वालों की राय के रूप में दो वर्ग बन गए थे और दोनों वर्गों की राय भी भन्न-भन्न थी। पहले वर्ग का कहना था क हरिहर काका को अपनी जमीन ठाकुर जी के

नाम लख देनी चाहिए। इससे उत्तम उनके लए कुछ न होगा, क्योंक ऐसा करने से उनकी कीर्ति अचल बनेगी तथा ठाकुरबारी का महत्त्व गाँव की सीमा के बाहर भी फैलेगा। पहले वर्ग की राय इसलए ऐसी थी, क्योंक यह वर्ग धार्मक प्रवृत्त का था, ठाकुरबारी से जुड़ा था तथा यह वर्ग ठाकुरबारी में प्रसाद के बहाने हलुआ-पूरी का भोग लगाता था। दूसरे वर्ग की राय यह थी क भाइयों के परिवार भी तो अपने ही होते हैं, इसलए हरिहर काका को अपनी सारी ज़मीन उनके नाम लख देनी चाहिए। अन्यथा वे लोग उनके साथ अन्याय करेंगे। दूसरे वर्ग की राय प्रगतिशील वचारों के कारण ऐसी थी।

प्रश्न 7.कहानी के आधार पर स्पष्ट कीजिए क लेखक ने यह क्यों कहा-"अज्ञान की स्थिति में ही मनुष्य मृत्यु से डरते हैं। ज्ञान होने के बाद तो आदमी आवश्यकता पड़ने पर मृत्यु को वरण करने के लए तैयार हो जाता है।"

उत्तर:'अज्ञान की स्थिति में ही मनुष्य मृत्यु से डरते हैं। ज्ञान होने के बाद तो आदमी आवश्यकता पड़ने पर मृत्यु को वरण करने के लए तैयार हो जाता है। लेखक ने ऐसा इसलए कहा है, क्योंक काका जिस भयावह स्थिति से गुजर रहे थे उस स्थिति में फँसा हर आदमी यही सोचता है क इस तरह घुट-घुटकर जीने से तो एक बार मरना ही अच्छा है। काका भली प्रकार जानते थे क महंत या भाइयों के नाम ज़मीन कर देने से उनका जीवन वैसे भी नरक बन जाएगा। उन्होंने मौत का भय दिखाने वाले भाइयों को भी जमीन लखने के बजाय मौत को गले लगाना उचत समझा और वे मरने के लए तैयार हो गए।

प्रश्न 8.समाज में रिश्तों की क्या अहमयत है? इस वषय पर अपने वचार प्रकट कीजिए।

उत्तर(समाज में रिश्तों की बहुत बड़ी तथा वशेष अहमयत है, क्योंक संसार को चलाने के लए रिश्ते-नातों का, संबंधों का बहुत महत्त्व है। रिश्तों के कारण ही बहुत-से पाप-अत्याचार, अनाचारों का शमन हो जाता हैं। वंशपरंपराएँ चलती हैं तथा रिश्तों की डोर मज़बूत होती है। व्यक्ति कई बदनामी के कार्य करने से बच जाता है तथा सीख देने में रिश्तों की अहमयत बहुत बड़ी मदद करती है। लेकन आज रिश्तों की अहमयत कम होती जा रही है। भौतिक सुखों की होड़ और दौड़, स्वार्थ लप्सा तथा धर्म की आड़ में फलने-फूलने वाली हिंसावृत्त ने रिश्तों की अहमयत को औपचारिकता तथा आडंबर का जामा पहना दिया है। आज रिश्तों से ज़्यादा धन-दौलत को अहमयत दी जा रही है|

प्रश्न 9.यदि आपके आसपास हरिहर काका जैसी हालत में कोई हो तो आप उसकी कस प्रकार मदद करेंगे?

उत्तर(यदि हमारे समाज में हरिहर काका जैसा व्यक्ति है तो अपने व्यस्ततम समय से कुछ समय निकालकर उसके साथ बातें करेंगे ताक उसका एकाकीपन दूर हो सके। उसकी आवश्यकता के बारे में पूछेंगे तथा यथासंभव उसको पूरा करने का प्रयास करेंगे। इसके अलावा उसके खाने-पीने संबंधी आवश्यकता पूरी करने का प्रयास करेंगे। इसके अलावा खुश रखने का हर संभव प्रयास करेंगे|

प्रश्न 10.हरिहर काका के गाँव में यदि मीडया की पहुँच होती, तो उनकी क्या स्थिति होती? अपने शब्दों में लखए।

उत्तर(हरिहर काका के गाँव में यदि मीडया की पहुँच होती, तो उनकी ऐसी दयनीय स्थिति इस तरह से

कदाप न होती, जैसी उनके भाइयों और ठाकुरबारी के महंत ने की। मीडया उनकी दयनीय स्थिति को दूरदर्शन पर दिखाकर सरकार और जनता का ध्यान इस ओर खींचता और हरिहर काका की घटना सारे देश की घटना बन जाती, जिससे उनके भाई हरिहर काका की अच्छी तरह से देखभाल करने के लए बाध्य हो जाते। ठाकुरबारी के महंत सहित अन्य सभी । लोगों का भी पर्दाफाश हो जाता, जिससे हरिहर काका भयमुक्त हो जाते और उनका जीना सरल हो जाता तथा पूरी जनता की सहानुभूति उन्हें मल जाती।

प्रश्न 1 - कथावाचक और हरिहर काका के बीच क्या सम्बन्ध है और इसके क्या कारण है?

उत्तर - हरिहर काका लेखक को बचपन से ही बहुत ज्यादा प्यार करते थे। वे लेखक को अपने कंधे पर बैठा कर घुमाया करते थे। एक पता का अपने बच्चों के लए जितना प्यार होता है, लेखक के अनुसार हरिहर काका का उसके लए प्यार उससे भी अ धक था। जब लेखक व्यस्क हुआ या थोड़ा समझदार हुआ तो उसकी पहली दोस्ती भी हरिहर काका के साथ ही हुई थी। उससे पहले हरिहर काका की गाँव में कसी से इतनी गहरी दोस्ती नहीं हुई थी। लेखक कहता है क जब हरिहर काका उसके पहले दोस्त बने तो उसे ऐसा लगा जैसे हरिहर काका ने भी लेखक से दोस्ती करने के लए इतनी लम्बी उम्र तक इन्तजार कया हो। हरिहर काका उससे कभी भी कुछ नहीं छुपाते थे, वे उससे सबकुछ खुल कर कह देते थे। इस तरह हम कह सकते हैं क लेखक और हरिहर काका का बहुत ही घनिष्ठ सम्बन्ध था।

प्रश्न 2 - हरिहर काका को महंत और अपने भाई एक ही श्रेणी के क्यों लगने लगे?

उत्तर कुछ दिनों तक तो हरिहर काका के परिवार वाले हरिहर काका की सभी चीज़ों का अच्छे - से ध्यान रखते थे, परन्तु फर कुछ दिनों बाद हरिहर काका को कोई पूछने वाला नहीं था। हरिहर काका के सामने जो कुछ बच जाता था वही परोसा जाता था। कभीकभी तो हरिहर - सूखा खाना खा कर प्रसन्न रहना पड़ता था। अगर कभी -घी के ही रूखा-काका को बिना तेल हरिहर काका के शरीर की स्थिति या मन की स्थिति ठीक नहीं होती तो हरिहर काका पर मुसीबतों का पहाड़ ही गर जाता। क्यों क इतने बड़े परिवार के रहते हुए भी हरिहर काका को कोई पानी भी नहीं पूछता था। बारामदे के कमरे में पड़े हुए हरिहर काका को अगर कसी चीज़ की जरुरत होती तो उन्हें खुद ही उठना पड़ता।

महंत हरिहर काका को समझाता था क उनके हिस्से में जितने खेत हैं वे उनको भगवान के नाम लख दें। ऐसा करने से उन्हें सीधे स्वर्ग की प्राप्ति होगी। तीनों लोकों में उनकी प्र सद् ध का ही गुणगान होगा। जब तक इस दुनिया में चाँदसूरज रहेंगे-, तब तक लोग उन्हें याद कया करेंगे। साधुसंत भी उनके पाँव धोएंगें। महंत हरिहर काका से कहता था क उनके हिस्से में - जो पंद्रह बीघे खेत हैं। उसी के कारण उनके भाइयों का परिवार उनसे जुड़ा हुआ है। कसी

दिन अगर हरिहर काका यह कह दें क वे अपने खेत कसी और के नाम लख रहे हैं तो वे लोग तो उनसे बात करना भी बंद कर देंगें। खून के रिश्ते ख़त्म हो जायेंगे।

असल में हरिहर काका को समझ आ गया था की दोनों ही उनसे उनकी जमीन के लए अच्छा व्यवहार करते हैं, नहीं तो कोई उन्हें पूछता तक नहीं। इसी लए हरिहर काका को महंत और अपने भाई एक ही श्रेणी के लगने लगे थे।

प्रश्न 3 - ठाकुरबारी के प्रति गाँव वालों के मन में अपार श्रद्धा के जो भाव हैं उससे उनकी कस मनोवृति का पता चलता है?

उत्तर गाँव के लोगों को भोला और अंध वश्वासी मनोवृति का माना जाता है क्यों क गाँव के - ज्यादातर लोगों का वश्वास यह बना होता है क अगर उनकी फसल अच्छी हुई है तो उसे वे अपनी मेहनत नहीं बल्कि भगवान की कृपा मानते हैं। कसी की मुक़दमे में जीत होती है तो उसका श्रेय भी भगवान को दिया जाता है। लड़की की शादी अगर जल्दी तय हो जाती है तो भी माना जाता है क भगवान से मन्नत माँगने के कारण ऐसा हुआ है। अपनी ख़ुशी से गाँव के लोग भगवान को बहुत कुछ दान में देते हैं, कुछ तो अपने खेत का छोटासा भाग भगवान के - नाम कर देते हैं। इसी बातका फायदा महंतसंत लोग उठाते हैं जो ठाकुरबारी -पुजारी और साधु-पूड़ी बनवाते -के नाम पर और भगवान को भोग लगाने के नाम पर दिन के दोनों समय हलवा हैं और आराम से पड़े रहते हैं। सारा काम वहाँ आए लोगो से सेवा करने के नाम पर करवाते हैं। लोग ठाकुर बारी को प वत्र, निष्कलंक और ज्ञान का प्रतिक मानते हैं।

*-व्याकरण-

‘शब्द , पद, पदबंध‘

शब्द:-

पानी

यह शब्द चार वर्णों के मेल से बना है- प्+आ+न्+ई = पानी

पानी शब्द सुनते या देखते ही हमारे मस्तिष्क में एक ऐसे तरल द्रव्य का चत्र उभरता है जिसे पीकर हम अपनी प्यास बुझाते हैं।

माता -म+आ+त+आ=

शब्द और अर्थ का संबंध:-

शब्द और अर्थ का बड़ा ही घनिष्ठ संबंध। जिन शब्दों के अर्थ न हो उसे शब्द की श्रेणी में रखा ही नहीं जा सकता है, जैसे- नीपा ये शब्द भी चार वर्णों न्+ई+प्+आ के संयोग से बना है परंतु इसका कोई अर्थ नहीं अर्थात् इसे सार्थक शब्द नहीं कहा जाएगा।

शब्द के अर्थ का बोध

शब्द के अर्थ का बोध हमें दो प्रकार से होता है पहला आत्म-अनुभव और दूसरा पर-अनुभव से।

आत्म-अनुभव –जब हम स्वयं कसी चीज़ का अनुभव करते हैं जैसे –'चीनी मीठी होती है' में मीठी शब्द के अर्थ का बोध हमें स्वयं चीनी चखने से हो जाता है। ठीक इसी प्रकार पानी, गर्मी, धूप इत्यादि

पर-अनुभव - अर्थ के बोध का अनेक क्षेत्र ऐसा भी होता है जहाँ हमारी पहुँच नहीं होती और हमें अर्थ बोध के लए दूसरों पर निर्भर रहना पड़ता है जैसे हममें से बहुत से लोगों ने जहर नहीं देखा होगा ले कन हमने दूसरों से यह सुन रखा है क इसको खाने से मौत हो जाती है। ठीक इसी प्रकार –आत्मा, ईश्वर, मोक्ष इत्यादि शब्दों के अर्थ बोध के लए हमें दूसरों के अनुभव की ज़रूरत पड़ती है।

1. उत्पत्त के आधार पर
2. बनावट के आधार पर
3. प्रयोग के आधार पर
4. अर्थ के आधार पर

(क) तत्सम शब्द-जो शब्द अपरिवर्तित रूप में संस्कृत भाषा से लए गए हैं या जिन्हें संस्कृत के मूल शब्दों से संस्कृत के ही
प्रत्यय लगाकर नवनिर्मत कया गया है, वे तत्सम शब्द कहलाते हैं।

अनुसार। तत्सम शब्दों के कुछ उदाहरण-प्रौद्योगकी, आकाशवाणी, आयुक्त, स्वप्न, कूप, उलूक, चूर्ण, चौर, यथावत, कर्म, कच्छप, कृषक, कोकल, अक्ष, तैल, तीर्थ, चैत्र, तपस्वी, तृण, त्रयोदश, कन्दुक, उच्च, दश, दीपक, धूल, नासका आदि।

(ख) तद्भव शब्द-जो शब्द संस्कृत भाषा से उत्पन्न तो हुए हैं, पर उन्हें ज्यों का त्यों हिंदी में प्रयोग नहीं कया जाता है। इनके रूप में परिवर्तन आ जाता है। इनको तद्भव शब्द कहते हैं।

जोति, जीभ, ग्वाल, करतब, कान, साँवला, साँप, सावन, भाप, लोहा, मारग, मक्खी , भीषण, पूरब, पाहन, बहरा, बिस आदि।

(ग) देशज शब्द-वे शब्द जिनका स्रोत संस्कृत नहीं है कंतु वे भारत में ग्राम्य क्षेत्रों अथवा जनजातियों में बोली जाने वाली तथा संस्कृत से भन्न भाषा परिवारों के हैं। देशज शब्द कहलाते हैं। ये शब्द क्षेत्रीय प्रभाव के कारण हिंदी में प्रयुक्त होते हैं।

देशज शब्दों के कुछ उदाहरण-कपास, अंगोछा, खड़की, ठेठ, टाँग, झोला, रोटी, लकड़ी, लागू, खटिया, डबिया, तेंतुआ, थैला, पड़ोसी, खोट, पगया, घरौंदा, चूड़ी, जूता, दाल, ठेस, ठक-ठक, झाड़ आदि।

(घ) आगत या वदेशी शब्द-वदेशी भाषाओं से संपर्क के कारण अनेक शब्द हिंदी में प्रयोग होने लगे हैं।

- अरबी शब्द-बर्फ, बगीचा, कानून, काज़ी, ऐब, कसूर, कताब, करामात, कत्ल, कलई, रिश्वत, मक्कार, मीनार, फ़कीर, नज़र, नखरा, तहसीलदार, अदालत, अमीर, बाज़ार, बेगम, जवाहर, दगा, गरीब, खुफया, वसीयत, बहमी, फ़ौज, दरवाज़ा, कदम आदि।
- फारसी शब्द-नालायकी, शादी, शेर, चापलूस, चादर, जिंदा, ज़बान, जिगर, दीवार, गरदन, चमन, चरबी, खार, गरीब, खत, खान, कारतूस, आतिशी, अनार, कम, कफ़, कमर, आफ़त, गरीब, अब्र, अबरी, गुनाह, सब्जी, चाकू, सख्त आदि।
- अंग्रेज़ी शब्द-पार्क, राशन, अफ़सर, अंकल, अंडर, सेक्रेटरी, बटन, कंप्यूटर, ओवरकोट, कूपन, गैस, कार्ड, चार्जर, चॉक, चॉकलेट, चमनी, वायल सरकस, हरीकेन, हाइड्रोजन, स्टूल, स्लेट, स्टेशन, लाटरी, लेबल, संगल, सूट, मील, मोटर, मेम्बर, रिकॉर्ड, मेल, रेडयो, प्लेटफार्म, बाम, बैरक, डायरी, ट्रक, ड्राइवर आदि।

- पुर्तगाली शब्द-मस्त्री, साबुन, बालटी, फालतू, आलू, आलपीन, अचार, काजू, आलमारी, कमीज़, कॉपी, गमला, चाबी, गोदाम, तौलया, तिजोरी, पलटन, पीपा, पादरी, फीता, गमला, गोभी, प्याला आदि।
- चीनी शब्द-चाय, लीची, पटाखा व तूफ़ान आदि।
- यूनानी शब्द-टेलीफ़ोन, टेलीग्राम, डेल्टा व ऐटम आदि।
- जापानी शब्द-रिक्शा।
- फ्रांसीसी शब्द-कॉर्टून, इंजन, इंजीनियर, बिगुल व पुलस आदि।

बनावट की भन्नता के आधार पर शब्दों को तीन वर्गों में बाँटा गया है।

(क) रूढ़ शब्द-जिन शब्दों के सार्थक खंड न कए जा सकें तथा जो शब्द लंबे समय से कसी वशेष अर्थ के लए प्रयोग हो रहे हैं, उन्हें रूढ़ शब्द कहते हैं।

रूढ़ शब्द के कुछ उदाहरण-ऊपर (ऊ + प + र), नीचे (नी + चे), पैर (पै + र), कच्चा (क + च् + चा), कमल (क + म + ल), फूल (फू + ल), वृक्ष (वृ + क्ष), रथ (र + थ), पत्ता (प + त् + ता) आदि।

(ख) यौगक शब्द-दो या दो से अधक शब्दों या शब्दांशों द्वारा निर्मत शब्दों को यौगक शब्द कहते हैं। यौगक शब्दों के कुछ

रसोईघर = रसोई + घर
अनजान = अन + जान
अभमानी = अभ + मानी
पाठशाला = पाठ + शाला
रेलगाड़ी = रेल + गाड़ी
ईमानदार = ईमान + दार
हिमालय = हिम + आलय
हमसफ़र = हम + सफ़र
आज्ञार्थ = आज्ञा + अर्थ
वाचनालयाध्यक्ष = वाचन + आलय + अध्यक्ष

(ग) योगरूढ़ शब्द-जो यौगक शब्द कसी वशेष अर्थ को प्रकट करते हैं, उन्हें योगरूढ़ शब्द कहते हैं।

चड़याघर = चड़या + घर = शाब्दिक अर्थ = पक्षयों का घर।
वशेष अर्थ = सभी प्रकार के पशु-पक्षयों के रखे जाने का स्थान ।
पंकज = पंक + ज = शाब्दिक अर्थ = कीचड़ में उत्पन्न।
वशेष अर्थ = कमल।
श्वेतांबरा = श्वेत + अंबर + आ = शाब्दिक अर्थ = सफ़ेद वस्त्रों वाली।
वशेष अर्थ = सरस्वती।
नीलकंठ = नील + कंठ शाब्दिक अर्थ = नीला कंठ।
वशेष अर्थ = शव जी।
दशानन = दश + आनन = शाब्दिक अर्थ = दस मुँह वाला।
वशेष अर्थ = रावण।
लंबोदर = लंबा + उदर = शाब्दिक अर्थ = लंबे उदर वाला।
वशेष अर्थ = गणेश।

(क) सामान्य शब्द-जिन शब्दों का प्रयोग दिन-प्रतिदिन के कार्य-व्यवहार में होता है, उन्हें सामान्य शब्द कहते हैं। उदाहरण-रोटी, पुस्तक, कलम, साइकल, शशु, मेज़, लड़का आदि।

(ख) अर्ध तकनीकी शब्द-जो शब्द दिन-प्रतिदिन के कार्य-व्यवहार में भी प्रयोग में लाए जाते हैं तथा कसी वशेष उद्देश्य के लए ही इनका प्रयोग कया जाता है, उन्हें अर्ध तकनीकी शब्द कहते हैं।

(ग) तकनीकी शब्द-कसी क्षेत्र वशेष में प्रयोग की जाने वाली शब्दावली के शब्दों को तकनीकी शब्द कहते हैं।
आदि।
समति, कार्यवृत्त, सीमा शुल्क, सूचकांक, पदोन्नति, शेयर, कार्यशाला, आरक्षण आदि।

4. अर्थ के आधार पर शब्दों का वर्गीकरण

(क) निरर्थक शब्द-जो शब्द अर्थहीन होते हैं, निरर्थक शब्द कहलाते हैं। ये शब्द सार्थक शब्दों के पीछे लग उनका अर्थ-वस्तार करते हैं।
उदाहरण-

- लड़का पढ़ने में ठीक-ठाक है।
- घर में फुटबॉल मत खेलो, कहीं कुछ टूट-फूट गया तो मार पड़ेगी।

(ख) सार्थक शब्द-जिन शब्दों का कुछ न कुछ अर्थ होता है, उन्हें सार्थक शब्द कहते हैं।

(i) एकार्थी शब्द-जिन शब्दों का केवल एक निश्चित अर्थ होता है, वे एकार्थी शब्द कहलाते हैं।
उदाहरण-हाथी, ईश्वर, पति, पुस्तक, शत्रु, मत्र, कमरा आदि।

(ii) अनेकार्थी शब्द-जिन शब्दों के एक से अधक अर्थ होते हैं, उन्हें अनेकार्थी शब्द कहते हैं।

(iii) समानार्थी या पर्यायवाची शब्द-जो शब्द एक समान (लगभग एक सा ही) अर्थ का बोध कराते हैं, उन्हें पर्यायवाची शब्द कहते हैं। पर्याय का अर्थ है दूसरा अर्थात् उसी प्रयोजन या वस्तु के लए दूसरा शब्द। इनका अर्थ लगभग एक समान होता है पर पूर्ण रूप से समान नहीं।

(iv) वपरीतार्थक शब्द-हिंदी भाषा के प्रचलत शब्दों के वपरीत अर्थ देने वाले शब्दों को वपरीतार्थक शब्द कहते हैं।

पद

पद- शब्द जब वाक्य में प्रयुक्त होकर व्याकरणक इकाइयों से जुड़ जाते हैं तब वे पद कहलाते हैं और ये पद वाक्य के आंशक भाव को प्रकट करते हैं।

यहाँ आपके लए यह जान लेना आवश्यक है क व्याकरणक इकाइयाँ होती क्या है?

संज्ञा, सर्वनाम, लंग, वचन, कारक, क्रया,काल आदि व्याकरणक बिन्दुओं को ही व्याकरणक इकाइयाँ कहते हैं। माँ कब से खाना बना रहीं हैं|

माँ -एक वचन,स्त्री लंग,जातिवाचक

खाना -बहुवचन, जातिवाचक

कब से -काल

बना रहीं हैं- क्रया ,वर्तमानकाल

उदाहरण के लए एक शब्द है- 'राजा' अब हम इसे वाक्य में प्रयोग करेंगे।

राजा हरिश्चंद्र बहुत बड़े दानवीर थे।

यहाँ 'राजा' शब्द न रहकर पद में बदल चुका है क्योंक एक तो यह व्याकरणक इकाइयों से जुड़ गया है और दूसरा यह हरिश्चंद्र की वशेषता बता रहा है क वे एक राजा थे।

दूसरा वाक्य

भारत के लगभग सभी राजाओं ने राजकुमारी संयुक्ता के स्वयंवर में भाग लया।

यहाँ 'राजाओं' शब्द भी पद में बदल चुका है क्योंक यहाँ भी यह व्याकरणक इकाइयों से जुड़ गया है और दूसरा यह भारत के सभी राजाओं के बारे में बता रहा है।

इसे और स्पष्ट करने के लए हमें यह जान लेना ज़रूरी है क यह पद कौन-कौन से व्याकरणक इकाइयों से अनुशासत हुआ है-

राजाओं –संज्ञा-जातिवाचक, पुल्लिंग, बहुवचन, भाग लया क्रया का कर्ता

इस प्रक्रया को पद परिचय कहते हैं।

पदबंध

पद से बड़ी इकाई को पदबंध कहते हैं या एकाधक पद को पदबंध कहते हैं।

पदबंध पाँच प्रकार के होते हैं –

संज्ञा पदबंध

सर्वनाम पदबंध

वशेषण पदबंध

क्रया पदबंध

क्रया वशेषण पदबंध

इन पाँचों पदबंधों पर हम एक एक करके वचार करेंगे

संज्ञा पदबंध

वाक्य की जो व्याकरणक इकाई वाक्य में संज्ञा का काम करे उसे संज्ञा पदबंध कहते हैं इसे पहचानने का तरीका है कौन और क्या लगाकर सवाल बनाए जैसे-

इज़राइल के प्रत्येक नागरिक देशभक्त हैं।

प्रश्न - कौन देशभक्त हैं?

उत्तर - इज़राइल के प्रत्येक नागरिक

आज बाज़ार मे सस्ते दामों में आम मल रहे थे।

प्रश्न - सस्ते दामों में क्या मल रहा था?

उत्तर – आम

सर्वनाम पदबंध

वाक्य की जो व्याकरणिक इकाई वाक्य में सर्वनाम का काम करे उसे सर्वनाम पदबंध कहते हैं इसे पहचानने का तरीका है कौन और क्या लगाकर सवाल बनाए जैसे-

काम करते-करते वह थक गया।

प्रश्न - काम करते-करते कौन थक गया?

उत्तर -वह

दूध में कुछ गिर गया है।

प्रश्न - दूध में क्या गिर गया है?

उत्तर – कुछ

विशेषण पदबंध

वाक्य की जो व्याकरणिक इकाई वाक्य में विशेषण काम करे उसे विशेषण पदबंध कहते हैं इसे पहचानने का तरीका है कैसे लगाकर सवाल बनाए जैसे-

इस दुनिया में ईमानदार लोग बहुत कम हैं।

प्रश्न - इस दुनिया में कैसे लोग बहुत कम हैं?

उत्तर – ईमानदार

मेहनत से जी चुराने वाले सफल नहीं होते हैं।

प्रश्न – कैसे लोग सफल नहीं होते हैं?

उत्तर – मेहनत से जी चुराने वाले

क्रिया पदबंध

वाक्य की जो व्याकरणिक इकाई वाक्य में क्रिया काम करे उसे क्रिया पदबंध कहते हैं। इसमें किसी कार्य के होने का बोध होता है जैसे-

बहुत देर हो गई है।

बच्चे परीक्षा दे रहे हैं।

क्रिया विशेषण पदबंध

वाक्य की जो व्याकरणिक इकाई वाक्य में क्रिया विशेषण काम करे उसे क्रिया विशेषण पदबंध कहते हैं इसे पहचानने का तरीका है कि इसमें क्रिया की विशेषता का बोध होता

है इसमें क्रया के साथ कतना, कहाँ, कैसे और कब आदि लगाकर प्रश्न बनाए जाते हैं, जैसे-

बच्चा बहुत दूर चलते-चलते थक गया।

प्रश्न - बच्चा कतना चलते-चलते थक गया?

उत्तर - बहुत दूर

दो लड़के खड़की से बाहर देख रहे हैं।

प्रश्न - दो लड़के कहाँ देख रहे हैं?

उत्तर - खड़की से बाहर

गाड़ी बहुत तेज़ चल रही है।

प्रश्न - गाड़ी कैसे चल रही है?

उत्तर - बहुत तेज़

राजू के बड़े भाई परसों दिल्ली चले गए।

प्रश्न - राजू के बड़े भाई कब दिल्ली चले गए?

उत्तर - राजू के बड़े भाई परसों

इसके अतिरिक्त रेखांकत पदबंधों के अंतिम शब्द के आधार पर भी हम पदबंध का निर्धारण कर सकते हैं, जैसे-

इज़राइल के प्रत्येक नागरिक देशभक्त हैं।

काम करते-करते वह थक गया।

इस दुनिया में ईमानदार लोग बहुत कम हैं।

बहुत देर हो गई है।

दो लड़के खड़की से बाहर देख रहे हैं।

मुहावरे-

. प्राण सूखना-डर लगना।

आतंकवादियों को देखकर गाँव वालों के प्राण सूख गए।

2. हँसी-खेल होना-छोटी-मोटी बात।

जंगल में अकेले जाना कोई हँसी-खेल नहीं होता

3. आँखें फोड़ना-बड़े ध्यान से पढ़ना।
कक्षा में प्रथम आने के लए निखल आँखें फोड़कर
पढ़ाई करता है।

तुम तो अपनी गाढ़ी कमाई जुएँ में उड़ा रहे हो।

5. ज़िगर के टुकड़े-टुकड़े होना-दिल पर भारी आघात लगना।
बेटे की मृत्यु की खबर सुनकर माता-पता के जिगर के टुकड़े-टुकड़े हो गए।

6. हिम्मत टूटना-साहस समाप्त होना।
परीक्षा में असफल होने पर पता की हिम्मत टूट गई।

7. जान तोड़ मेहनत करना-खूब परिश्रम होना।
मैच जीतने के लए सभी खलाड़यों ने जान-तोड़कर मेहनत की।

8. दबे पाँव आना-चोरी-चोरी आना।
चोर ने दबे पाँव आकर घर का सारा सामान साफ़ कर दिया।

9. घुड़कयाँ खाना-डाँट-डपट सहना।
बड़े भाईसाहब की घुड़कयाँ खाकर अचानक छोटे भाई ने मुँह खोल दिया।

10. आड़े हाथों लेना-कठोरतापूर्ण व्यवहार करना।
गलती करके पकड़े जाने पर माता-पता ने पुत्र को आड़े हाथों लया।

11. घाव पर नमक छिड़कना-दुखी को और दुखी करना।
एक तो वह पहले से ही दुखी है, तुम उसे चढ़ाकर उसके घाव पर नमक क्यों छिड़क रहे हो।

12. तलवार खींचना-लड़ाई के लए तैयार रहना।
छोटे भाई को गुंडों से पटता देखकर बड़े भाइयों ने तलवार खींच ली।

13. अंधे के हाथ बटेर लगना-अयोग्य को कोई महत्त्वपूर्ण वस्तु मलना।
अनपढ़ श्याम की सरकारी नौकरी लग गई। ऐसा लगता है जैसे अंधे के हाथ बटेर लग गई।

14. चुल्लूभर पानी देने वाला-कठिन समय में साथ देने वाला।
अगर तुम कसी की मदद नहीं करोगे तो तुम्हें भी कोई बाद में चुल्लू भर पानी देने वाला नहीं मलेगा।

15. दाँतों पसीना आना-बहुत अधक परेशानी उठाना।
शादी वाले घर में इतने काम होते हैं क जिन्हें निपटाते निपटाते दाँतों पसीने आ जाते हैं।

16. लोहे के चने चबाना-बहुत कठिनाई उठाना।
कक्षा में प्रथम आने के लए करन को पीछे करना लोहे के चने चबाने जैसा है।

17. चक्कर खाना-भ्रम में पड़ना।
रव-चेतन की एक जैसी शक्ल देखकर लोग चक्कर खा गए।

18. आटे-दाल का भाव मालूम होना-कठिनाई का अनुभव होना।
दोस्तों के पैसों पर ऐश करने वालों को जब स्वयं कमाना पड़ता है तब उन्हें आटे-दाल का भाव मालूम होता है।

19. ज़मीन पर पाँव न रखना-बहुत खुश होना।
बेटे को सफ़ल देखकर उसके माता-पता ज़मीन पर पाँव न रख सके।

20. हाथ-पाँव फूल जाना-परेशानी देखकर घबरा जाना।
मनोज को नौकरी से निकाले जाने की खबर सुनकर उसकी पत्नी के हाथ-पाँव फूल गए।

पाठ-2 : डायरी का एक पन्ना

1. रंग दिखाना-प्रभाव या स्वरूप दिखाना।
कठिनाई के समय मदद न करके देव ने अपना रंग दिखा दिया।

2. ठंडा पड़ना-ढीला पड़ना।
शादी की तैयारियाँ अभी पूरी भी नहीं हुई हैं। पता नहीं घर वाले इतने ठंडे क्यों पड़ गए हैं।

3. टूट जाना-बिखर जाना।
बड़े भाईसाहब की खबर सुनकर पूरा परिवार बिखर गया।

पाठ-3 : तताँरा-वामीरो कथा

1. सुध-बुध खोना-अपने वश में न रहना।
उस आकर्षक युवती को देखकर चेतन अपनी सुध-बुध खो बैठा।

2. बाट जोहना-प्रतीक्षा करना।
राम कब से माता के साथ बाज़ार जाने की बाट जोह रहा है।

3. खुशी का ठिकाना न रहना-बहुत अधक खुशी होना।
लड़की का रिश्ता तय होने पर परिवार की खुशी का ठिकाना न रहा।

4. आग-बबूला होना-बहुत क्रोध आना।
कक्षा में फेल होने की बात सुनकर पता आग-बबूला हो गए।

5. राह. न सूझना-उपाय न मलना।
आतंकवादियों के पकड़े जाने पर यात्रियों को बचने की कोई राह न सूझी।

6. सुराग न मलना-पता न मलना।
चोर घर में चोरी करके चला गया परंतु पुलस को कोई सुराग न मला।

पाठ-4 : तीसरी कसम के शल्पकार शैलेंद्र

1. चक्कर खाना-घबरा जाना।
परीक्षा में प्रश्न-पत्र देखकर मैं तो चकरा गया।

2. सातवें आसमान पर होना-ऊँचाई पर होना।
आजकल की महँगाई तो सातवें आसमान पर पहुँच गई है।

3. तराजू पर तोलना-उचत-अनुचत का निर्णय लेना।
मुँह से कुछ बोलने से पहले उसको तराजू पर तोल लेना चाहिए।

4. हावी होना-अधक प्रभावी होना।
आजकल तो अमीर लोग गरीबों पर हावी होने की कोशश करते हैं।

अन्य-

1-आकाश के तारे तोड़नाअसंभव काम करना|-
साइकल से देश भ्रमण करना आकाश के तारे तोड़ने जैसा है|
2-आस्तीन का साप-कपटी मत्र।
राम पर वश्वास न करना। वह तो आस्तीन का साँप है।

3. आग में घी डालना-क्रोध को भड़काना।
पठानकोट हमले ने आग में घी डालने का काम कया है।

4. इधर-उधर की हाँकना-व्यर्थ बोलना।
रव के पास कोई काम तो है नहीं इसलए वो इधर-उधर की हाँकता रहता है।

5. ईद का चाँद होना-बहुत दिनों बाद दिखाई देना।
वदेश में रहने के कारण तुम तो ईद का चाँद हो गए हो।

6. ईंट का जवाब पत्थर से देना-दुष्ट से दुष्टता करना।
युद्ध में भारतीय सेना ने पाकस्तानी सेना को ईंट का जवाब पत्थर से दिया।

7. ईंट से ईंट बजाना-तहस-नहस कर देना।
भारतीयों ने आतंकवादियों की ईंट से ईंट बजा दी।

8. उल्लू बनाना-मूर्ख बनाना।
पाँच रुपये का सामान दस रुपये में देकर दुकानदार ने तुम्हें उल्लू बना दिया।

9. उन्नीस-बीस होना-थोड़ा-बहुत होना।
दोनों कपड़ों में उन्नीस-बीस का अंतर है।

10. ऊँगली उठाना-दोष निकालना।
बात-बात पर ऊँगली उठाना आजकल की पत्नियों का पेशा-सा बन गया है।

*-अनुच्छेद लेखन-

१-ग्लोबल वा र्मंगमनुष्यता के लए खतरा--

- ग्लोबल वार्मंग क्या है ?
- ग्लोबल वार्मंग के कारण
- ग्लोबल वार्मंग के प्रभाव
- समस्या का समाधान

गत एक दशक में जिस समस्या ने मनुष्य का ध्यान अपनी ओर खींचा है, वह हैग्लोबल वार्मंग। - धरती के तापमान में निरंतर वृद्ध। यद्यप यह समस्या -सा अर्थ है है-ग्लोबल वार्मग का सीधा वकसत देशों के कारणबढ़ी है परंतु इसका नुकसान सारी धरती को भुगतना पड़ रहा है। ग्लोबल वार्मंग के कारणों के मूल हैंमनुष्य की बढ़ती आवश्यकताएँ और उसकी स्वार्थवृत्त। मनुष्य प्रगति की - कारखानों की स्थापना-अंधाधुंध दौड़ में शामल होकर पर्यावरण को अंधाधुंध क्षति पहूँचा रहा है। कल, नई बस्तियों को बसाने, सड़कों को चौड़ा करने के लए वनों की अंधाधुंध कटाई की गई है|इससे पर्यावरण को दोतरफा नुकसान हूआ है तो इन गैसों को अपनाने वाले पेड़पौधों की कमी से आक्सीजन-, वर्षा की मात्रा और हरियाली में कमी आई है। इस कारण वैश्विक तापमान बढ़ता जा रहा है। ग्लोबल वार्मंग के कारण एक ओर धरती की सुरक्षा कवच ओजोन में छेद हूआ है तो दूसरी ओर पर्यावरण असंतुलत हूआ है। असमय वर्षा, अतिवृष्टि, अनावृष्टि, सरदीगरमी की ऋतुओं में भारी बदलाव आना - ग्लोबल वार्मंग का ही प्रभाव है।

इससे ध्रुवों पर जमी बरफ़ पघलने का खतरा उत्पन्न हो गया है जिससे एक दिन प्राणयों के वनाश का खतरा होगा, अधकाधक पौधे लगाकर उनकी देखभाल करनी चाहिए तथा प्रकृति से छेड़छाड़ बंद - कर देना चाहिए। इसके अलावा जनसंख्या वृद्ध पर नियंत्रण करना होगा। आइए इसे आज से शुरू कर देते हैं, क्योंक कल तक तो बड़ी देर हो जाएगी|

२-बच्चों की शक्षा में माता पता की भू मका--

- शक्षा और माता-पता
- शक्षा की महत्ता
- उत्तरदायित्व
- शक्षावहीन नर पशु समान।

माता पता बच्चे के लए शत्र के समान होते हैं जो अपने बच्चों को शक्षा नहीं देते। ये बच्चे शक्षतों - की सभा में उसी तरहहोते हैं जैसे हंसों के बीच बगुला। एक बच्चे के लए परिवार प्रथम पाठशाला होती है और माता पता यहाँ अभी अपनी भूमका का उचत निर्वाह तो -पता उसके प्रथम शक्षक। माता- दीक्षा पर ध्यान -करते हैं पर जब बच्चा वद्यालय जाने लायक होता है तब कुछ माता पता उनके शक्षा नहीं देते हैं और अपने बच्चों को स्कूल नहीं भेजते हैं। ऐसे में बालक जीवन भर के लए निरक्षर की वशेष महत्ता एवं उपयोगता है|

शक्षा के बिना जीवन अंधकारमय हो जाता है। कभी वह साहूकारों के चंगल में फँसता है तो कभी लोभी दकानदारों के। उसके लए काला अक्षर भैंस बराबर होता है। वह समाचार पत्रपत्रिकाओं ., पुस्तकों आदि का लाभ नहीं उठा पाता है। उसे कदम-कदम पर कठिनाइयों का सामना करना पडता है ऐसे में माता- पोषण के साथ ही उनकी शक्षा की भली प्रकार -पता का उत्तरदायित्व है क वे अपने बच्चों के पालन व्यवस्था करें। कहा गया है क वद्यावहीन नर की स्थिति पशुओं जैसी होती है, बस वह घास नहीं खाता है। शक्षा से ही मानव सभ्य इनसान बनता है। हमें भूलकर भी शक्षा से मुंह नहीं मोड़ना चाहिए|

३-दिनोंदिन बढ़ती महँगाई-

- महँगाई और आम आदमी पर प्रभाव
- कारण
- महँगाई रोकने के उपाय
- सरकार के कर्तव्य

- महँगाई उस समस्या का नाम है, जो कभी थमने का नाम नहीं लेती है। मध्यम और निम्न मध्यम वर्ग के साथ ही गरीब वर्ग को जिस समस्या ने सबसे ज्यादा त्रस्त कया है वह महँगाई ही है। समय बीतने के साथ ही वस्तुओं का मूल्य निरंतर बढ़ते जाना महँगाई कहलाता है। इसके कारण वस्तुएँ आम आदमी की क्रयशक्ति से बाहर होती जाती हैं और ऐसा व्यक्ति अपनी मूलभूत आवश्यकताएँ तक पूरा नहीं कर पाता है।

- ऐसी स्थिति में कई बार व्यक्ति को भूखे पेट सोना पड़ता है।महँगाई के कारणों को ध्यान से देखने पर पता चलता है क इसे बढ़ाने में मानवीय और प्राकृतिक दोनों ही कारण जिम्मेदार हैं। मानवीय कारणों में लोगों की स्वार्थवृत्त, लालच अधकाधक लाभ कमाने की प्रवृत्त, जमाखोरी और असंतोष की भावना है। इसके अलावा त्याग जैसे मानवीय मूल्यों की कमी भी इसे बढ़ाने में आग में घी का काम करती है।

- सूखा, बाढ़ असमय वर्षा, आँधी, तूफ़ान, ओलावृष्टि के कारण जब फ़सलें खराब होती हैं तो उसका असर उत्पादन पर पड़ता है। इससे एक अनार सौ बीमार वाली स्थिति पैदा होती है और महँगाई

बढ़ती है।महँगाई रोकने के लए लोगों में मानवीय मूल्यों का उदय होना आवश्यक है ताक वे अपनी आवश्यकतानुसार ही वस्तुएँ खरीदें। इसे रोकने के लए जनसंख्या वृद्ध पर लगाम लगाना आवश्यक है।

- महँगाई रोकने के लए सरकारी प्रयास भी अत्यावश्यक है। सरकार को चाहिए क वह आयात-निर्यात नीति की समीक्षा करे तथा जमाखोरों पर कड़ी कार्यवाही करें और आवश्यक वस्तुओं का वतरण रियायती मूल्य पर सरकारी दुकानों के माध्यम से क

==

पद्य-पाठ-2-मीराबाई

क व मीराबाई -

जन्म -1 5 0 3 (जोधपुर , चोकड़ी गांव)

मृत्यु -1 5 4 6

मीरा के पद पाठ सार-

इन पदों में मीराबाई श्री कृष्ण का भक्तों के प्रति प्रेम और अपना श्री कृष्ण के प्रति भक्ति - भाव का वर्णन करती है। पहले पद में मीरा श्री कृष्ण से कहती हैं क जिस प्रकार आपने द्रोपदी ,प्रह्लाद और ऐरावत के दुखों को दूर कया था उसी तरह मेरे भी सारे दुखों का नाश कर दो।

दूसरे पद में मीरा श्री कृष्ण के दर्शन का एक भी मौका हाथ से जाने नहीं देना चाहती , वह श्री कृष्ण की दासी बनाने को तैयार है ,बाग़ बगीचे लगाने को भी तैयार है -,गली गली में श्री कृष्ण की लीलाओं का बखान भी करना चाहती है ,ऊँचे ऊँचे महल भी बनाना चाहती है , ता क दर्शन का एक भी मौका न चुके|

हरि आप हरो जन री भीर।
द्रोपदी री लाज राखी , आप बढ़ायो चीर।
भगत कारण रूप नरहरि , धरयो आप सरीर।
बूढ़तो गजराज राख्यो , काटी कुञ्जर पीर।
दासी मीराँ लाल गरधर , हरो म्हारी भीर।

प्रसंग :- प्रस्तुत पाठ हमारी हिंदी पाठ्य पुस्तक 'स्पर्श ' से लिया गया है। इस पद की कवयित्री मीरा है। इसमें कवयित्री भगवान श्री कृष्ण के भक्त - प्रेम को दर्शा रही हैं और स्वयं की रक्षा की गुहार लगा रही है|

व्याख्या -: इस पद में कवयित्री मीरा भगवान श्री कृष्ण के भक्त - प्रेम का वर्णन करते हुए कहती हैं कि आप अपने भक्तों के सभी प्रकार के दुखों को हरने वाले हैं अर्थात दुखों का नाश करने वाले हैं। मीरा उदाहरण देते हुए कहती हैं कि जिस तरह आपने द्रोपदी की इज्जत को बचाया और साडी के कपडे को बढ़ाते चले गए ,जिस तरह आपने अपने भक्त प्रहलाद को बचाने के लिए नरसिंह का शरीर धारण कर लिया और जिस तरह आपने हाथियों के राजा भगवान इंद्र के वाहन ऐरावत हाथी को मगरमच्छ के चंगुल से बचाया था ,हे ! श्री कृष्ण उसी तरह अपनी इस दासी अर्थात भक्त के भी सारे दुःख हर लो अर्थात सभी दुखों का नाश कर दो।

स्याम म्हाने चाकर राखो जी,
गिरधारी लाला म्हाँने चाकर राखोजी|

चाकर रहस्यूँ बाग लगास्यूँ नित उठ दरसण पास्यूँ।
बिन्दरावन री कुंज गली में , गोविन्द लीला गास्यूँ।

चाकरी में दरसन पास्यूँ, सुमरन पास्यूँ खरची।
भाव भगती जागीरी पास्यूँ , तीनूं बाताँ सरसी।
मोर मुगट पीताम्बर सौहे , गल वैजन्ती माला।
बिन्दरावन में धेनु चरावे , मोहन मुरली वाला।
ऊँचा ऊँचा महल बनावँ बिच बिच राखूँ बारी।
साँवरिया रा दरसण पास्यूँ ,पहर कुसुम्बी साड़ी।
आधी रात प्रभु दरसण ,दीज्यो जमनाजी रे तीरा।
मीराँ रा प्रभु गिरधर नागर , हिवड़ो घणो अधीरा।

प्रसंग -: प्रस्तुत पद हमारी हिंदी पाठ्य पुस्तक 'स्पर्श ' से लिया गया है। इस पद की कवयित्री मीरा है। इस पद में कवयित्री मीरा श्री कृष्ण के प्रति अपने प्रेम का वर्णन कर रही है और श्री कृष्ण के दर्शन के लिए वह कितनी व्याकुल है यह दर्शा रही है।

व्याख्या -: इस पद में कवयित्री मीरा श्री कृष्ण के प्रति अपनी भक्ति भावना को उजागर करते हुए कहती हैं कि हे !श्री कृष्ण मुझे अपना नौकर बना कर रखो अर्थात मीरा किसी भी तरह श्री

कृष्ण के नजदीक रहना चाहती है फर चाहे नौकर बन कर ही क्यों न रहना पड़े। मीरा कहती हैं क नौकर बनकर मैं बागीचा लगाउंगी ता क सुबह उठ कर रोज आपके दर्शन पा सकूँ। मीरा कहती हैं क वृन्दावन की संकरी ग लयों में मैं अपने स्वामी की लीलाओं का बखान करुँगी। मीरा का मानना है क नौकर बनकर उन्हें तीन फायदे होंगे पहला - उन्हें हमेशा कृष्ण के दर्शन प्राप्त होंगे , दूसरा- उन्हें अपने प्रय की याद नहीं सताएगी और तीसरा- उनकी भाव भक्ति का साम्राज्य बढ़ता ही जायेगा।

मीरा श्री कृष्ण के रूप का बखान करते हुए कहती हैं क उन्होंने पीले वस्त्र धारण कये हुए हैं ,सर पर मोर के पंखों का मुकुट वराजमान है और गले में वैजन्ती फूल की माला को धारण कया हुआ है।

वृन्दावन में गाय चराते हुए जब वह मोहन मुरली बजाता है तो सबका मन मोह लेता है।

मीरा कहती है क मैं बगीचों के बिच ही ऊँचे ऊँचे महल बनाउंगी और कुसुम्बी साड़ी पहन कर अपने प्रय के दर्शन करुँगी अर्थात श्री कृष्ण के दर्शन के लए साज श्रृंगार करुँगी। मीरा कहती हैं क हे !मेरे प्रभु गरधर स्वामी मेरा मन आपके दर्शन के लए इतना बेचैन है क वह सुबह का इन्तजार नहीं कर सकता। मीरा चाहती है की श्री कृष्ण आधी रात को ही जमुना नदी के कनारे उसे दर्शन दे दें|

*-बहुवैकल्पिक प्रश्नोत्तर-

१-मीरा आधी रात को श्री कृष्ण को कहाँ पर मलना चाहती है ?

(a) अपने घर पर

(b) घर की छत पर

(c) यमुना के तट पर

(d) मंदिर में

२- मीरा हर रोज़ सुबह उठ के कसके दर्शन करना चाहती है ?

(a) श्री राम के

(b) अपने पति के

(c) श्री कृष्ण के

(d) पता के

३- मीरा के काव्य की कतनी कृतियाँ उपलब्ध हैं ?

(b) सात -दस

(d) कोई नहीं

४- मीरा श्री कृष्ण के दर्शन कस रंग की साड़ी पहन कर करना चाहती है ?

(a) लाल रंग

(b) योगी रंग

(c) कुसुम्बी रंग

(d) रंग बिरंगी

५- मीरा श्री कृष्ण के पास रहने के कौन से फायदे बताती है ?

(a) उसे हमेशा दर्शन प्राप्त होंगे

(b) उसे श्री कृष्ण को याद करने की जरूरत नहीं होगी

(c) उसकी भाव भक्ति का साम्राज्य बढ़ता ही जायेगा।

(d) सभी

६- मीरा के भक्ति भाव का सम्राज्य कैसे बढ़ेगा ?

(a) मीरा के कृष्ण के पास रहने से

(b) मीरा के नृत्य करने से

(c) मीरा के गली गली घूमने से

(d) मीरा के दोहे लखने से

७-“बूढ़तो गजराज राख्यो , काटी कुंजर पीर |” पंक्ति पर भाव प्रकट करें |

(a) जैसे अपने ऐरावत को मगरमच्छ से बचाया

(b) जैसे आपने इंद्र को मगरमच्छ से बचाया

(c) जैसे आपने भगवान् को मगरमच्छ से बचाया

(d) सभी

८- मीरा श्री कृष्ण को पाने के लए क्या क्या करने को तैयार है ?

(a) बाग बगीचे लगाने को

(b) ऊंचे महल बनवाने को

(c) दासी बनने को

(d) सभी

९- मीराबाई ने श्री कृष्ण के रूप सौंदर्य का वर्णन कैसे कया है ?

(a) पीताम्बर मनमोहक के रूप में

(b) पीताम्बर जनमोहक के रूप में

(c) पीताम्बर के रूप में

(d) कसी रूप में नहीं

१०- कसको बचाने के लए श्री कृष्ण ने नृसंह का रूप धारण कया था ?

(a) भक्त प्रहलाद

(b) भक्त ऐरावत

(c) भक्त अहलावत

(d) सभी

*-निम्नलखत प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

प्रश्न 1.पहले पद में मीरा ने हरि से अपनी पीड़ा हरने की वनती कस प्रकार की है?

उत्तर-पहले पद में मीरा ने अपनी पीड़ा हरने की वनती इस प्रकार की है क हे ईश्वर! जैसे आपने द्रौपदी की लाज रखी थी, गजराज को मगरमच्छ रूपी मृत्यु के मुख से बचाया था तथा भक्त प्रहलाद की रक्षा करने के लए ही आपने नृसंह अवतार लया था, उसी तरह मुझे भी सांसारिक संतापों से मुक्ति दिलाते हुए अपने चरणों में जगह दीजिए।

प्रश्न 2.दूसरे पद में मीराबाई श्याम की चाकरी क्यों करना चाहती हैं? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-मीरा श्री कृष्ण को सर्वस्व समर्पत कर चुकी हैं इसलए वे केवल कृष्ण के लए ही कार्य करना चाहती हैं। श्री कृष्ण की समीपता व दर्शन हेतु उनकी दासी बनना चाहती हैं। वे चाहती हैं दासी बनकर श्री कृष्ण के लए बाग लगाएँ उन्हें वहाँ वहार करते हुए देखकर दर्शन सुख प्राप्त करें। वृंदावन की कुंज गलयों में उनकी लीलाओं का गुणगान करना चाहती हैं। इस प्रकार दासी के रूप में दर्शन, नाम स्मरण और भाव-भक्ति रूपी जागीर प्राप्त कर अपना जीवन सफल बनाना चाहती हैं।

प्रश्न 3.मीराबाई ने श्रीकृष्ण के रूप-सौंदर्य का वर्णन कैसे कया है?

उत्तर-मीराबाई ने श्रीकृष्ण के रूप-सौंदर्य का अलौकक वर्णन कया है क उन्होंने पीतांबर (पीले वस्त्र धारण कए हुए हैं, जो उनकी शोभा को बढ़ा रहे हैं। मुकुट में मोर पंख पहने हुए हैं तथा गले में वैजयंती

माला पहनी हुई है, जो उनके सौंदर्य में चार चाँद लगा रही है। वे ग्वाल-बालों के साथ गाय चराते हुए मुरली बजा रहे हैं|

प्रश्न 4.मीराबाई की भाषा शैली पर प्रकाश डालए।
उत्तर-मीराबाई ने अपने पदों में ब्रज, पंजाबी, राजस्थानी, गुजराती आदि भाषाओं का प्रयोग कया गया है। भाषा अत्यंत सहज और सुबोध है। शब्द चयन भावानुकूल है। भाषा में कोमलता, मधुरता और सरसता के गुण वद्यमान हैं। अपनी प्रेम की पीड़ा को अभव्यक्त करने के लए उन्होंने अत्यंत भावानुकूल शब्दावली का प्रयोग कया है। भक्ति भाव के कारण शांत रस प्रमुख है तथा प्रसाद गुण की भावाभव्यक्ति हुई है। मीराबाई श्रीकृष्ण की अनन्य उपासका हैं। वे अपने आराध्य देव से अपनी पीड़ा का हरण करने की वनती कर रही हैं। इसमें कृष्ण के प्रति श्रद्धा, भक्ति और वश्वास के भाव की अभव्यंजना हुई है। मीराबाई की भाषा में अनेक अलंकारों जैसे अनुप्रास, रूपक, उपमा, उत्प्रेक्षा, उदाहरण आदि अलंकारों का सफल प्रयोग हुआ है।

प्रश्न 5.वे श्रीकृष्ण को पाने के लए क्या-क्या कार्य करने को तैयार हैं?
उत्तर-मीरा श्रीकृष्ण को पाने के लए उनकी चाकर (नौकर) बनकर चाकरी करना चाहती हैं अर्थात् उनकी सेवा करना चाहती हैं। वे उनके लए बाग लगाकर माली बनने तथा अर्धरात्रि में यमुना-तट पर कृष्ण से मलने व वृंदावन की कुंज-गलयों में घूम-घूमकर गोवंद की लीला का गुणगान करने को तैयार हैं|

*-निम्नलखत पंक्तियों का काव्य-सौंदर्य स्पष्ट कीजिए-
प्रश्न 1.
हरि आप हरो जन री भीर ।
द्रोपदी री लाज राखी, आप बढ़ायो चीर।
भगत कारण रूप नरहरि, धर्यो आप सरीर।
उत्तर-
काव्य-सौंदर्य-
भाव-सौंदर्य – हे कृष्ण! आप अपने भक्तों की पीड़ा को दूर करो। जिस प्रकार आपने चीर बढ़ाकर द्रोपदी की लाज रखी, व नरसंह रूप धारण कर भक्त प्रहलाद की पीड़ा (दर्द) को दूर कया, उसी प्रकार आप हमारी परेशानी को भी दूर करो। आप पर पीड़ा को दूर करने वाले हो।
शल्प-सौंदर्य-

3. छंद – "पद"

प्रश्न 2.

बूढतो गजराज राख्यो, काटी कुण्जर पीर ।
दासी मीराँ लाल गरधर, हरो म्हारी भीर ।

उत्तर-

भाव पक्ष-प्रस्तुत पंक्तियों में मीराबाई अपने आराध्य श्रीकृष्ण का भक्तवत्सल रूप दर्शा रही हैं। इसके अनुसार श्रीकृष्ण
ने संकट में फँसे डूबते हुए ऐरावत हाथी को मगरमच्छ से मुक्त करवाया था। इसी प्रसंग में वे अपनी रक्षा के लए भी श्रीकृष्ण से प्रार्थना करती हैं।

कला पक्ष

1. राजस्थानी, गुजराती व ब्रज भाषा का प्रयोग है।
2. भाषा अत्यंत सहज वे सुबोध है।
3. तत्सम और तद्भव शब्दों का सुंदर मश्रण है।
4. दास्यभाव तथा शांत रस की प्रधानता है।
5. भाषा में प्रवाहत्मकता और संगीतात्मकता का गुण वद्यमान है।
6. सरल शब्दों में भावनाओं की सुंदर अभव्यक्ति हुई है।
7. दृष्टांत अलंकार का प्रयोग है। |

गद्य-पाठ- डायरी का एक पन्ना

लेखक परिचय

लेखक - सीताराम सेकसरिया

जन्म - 1892 (राजस्थान -नवलगढ़)

मृत्यु - 1982

पाठ सार

प्रस्तुत पाठ के लेखक सीताराम सेकसरिया आज़ादी की इच्छा रखने वाले महान इंसानों में से एक थे। वह दिन प्रतिदिन जो भी देखते थे-,सुनते थे और महसूस करते थे ,उसे अपनी एक निजी डायरी में लखते रहते थे।इस पाठ में उनकी डायरी का 26 जनवरी 1931 का लेखाजोखा है जो उन्होंने खुद अपनी डायरी में लखा था।

लेखक कहते हैं क 26 जनवरी 1931 का दिन हमेशा याद रखा जाने वाला दिन है। 26 जनवरी1930 के ही दिन पहली बार सारे हिंदुस्तान में स्वतंत्रता दिवस मनाया गया था और 26 जनवरी 1931 को भी फर से वही दोहराया जाना था,जिसके लए बहुत सी तैयारियाँ पहले से ही की जा चुकी थी। सर्फ़ इस दिन को मानाने के प्रचार में ही दो हज़ार रूपये खर्च हुए थे। सभी मकानों पर भारत का राष्ट्रीय झंडा फहरा रहा था और बहुत से मकान तो इस तरह सजाए गए थे जैसे उन्हें स्वतंत्रता मल गई हो। कलकत्ते के लगभग सभी भागों में झंडे लगाए गए थे।पु लस अपनी पूरी ताकत के साथ पुरे शहर में पहरे लए घूम घूम कर प्रदर्शन कर रही - थी।न जाने कतनी गा ड़याँ शहर भर में घुमाई जा रही थी। घुड़सवारों का भी प्रबंध कया गया था।

स्मारक के निचे जहाँ शाम को सभा होने वाली थी, उस जगह को तो सुबह के छः बजे से ही पु लस ने बड़ी संख्या में आकर घेर कर रखा था ,इतना सब कुछ होने के बावजूद भी कई जगह पर तो सुबह ही लोगों ने झंडे फहरा दिए थे। तारा सुंदरी पार्क में बड़ा बाजार कांग्रेस कमेटी के युद्ध मंत्री हरिश्चंद्र संह झंडा फहराने गए परन्तु वे पार्क के अंदर ही ना जा सके। वहां पर भी काफी मारपीट हुई और दो चार आद मयों के सर फट गए।मारवाड़ी बा लका वद्यालय की - लड़ कयों ने अपने वद्यालय में झंडा फहराने का समारोह मनाया। वहाँ पर जानकी देवी ,मदालसा बजाज नारायण आदि स्वयंसेवी भी आ गए थे। उन्होंने लड़ कयों को उत्सव -

का मतलब समझाया।दो तीन बाजे पु लस कई आद मयों को पकड़ कर ले गई।जिनमें मुख्य - कार्यकर्ता पूर्णोदास और पुरुषोत्तम राय थे। सुभाष बाबू के जुलूस की पूरी ज़िम्मेवारी पूर्णोदास परन्तु वे पहले से ही अपना काम कर चुके थे। स्त्रियाँ (उन्हें पु लस ने पकड़ लया था) पर थी अपनी तैयारियों में लगी हुई थी। अलग अलग जगहों से स्त्रियाँ अपना जुलूस निकालने और सही जगह पर पहुँचने की को शश में लगी हुई थी।

जब से स्वतंत्रता प्राप्ति के लए कानून तोड़ने का सल सला शुरू हुआ था तब से आज 26 जनवरी 1931 तक इतनी बड़ी सभा ऐसे खुले मैदान में कभी नहीं हुई थी और ये सभा तो कह सकते हैं की सबके लए ओपन लड़ाई थी। एक ओर पु लस क मश्नर ने नोटिस निकाल दिया था क अमुक अमुक धारा के अनुसार कोई भी-, कही भी, कसी भी तरह की सभा नहीं कर सकते हैं। अगर कसी भी तरह से कसी ने सभा में भाग लया तो वे दोषी समझे जायेंगे।इधर परिषद् की ओर से नोटिस निकाला गया था क ठीक चार बजकर चौबीस मनट पर स्मारक के निचे झंडा फहराया जायेगा तथा स्वतंत्रता की प्रतिज्ञा पढ़ी जाएगी। सभी लोगो को उपस्थित रहने के लए कहा गया था।ठीक चार बजकर दस मनट पर सुभाष बाबू अपना जुलूस ले कर मैदान की और निकले।जब वे लोग मैदान के मोड़ पर पहुंचे तो पु लस ने उनको रोकने के लए लाठियां चलाना शुरू कर दिया। बहुत से लोग घायल हो गए। सुभाष बाबू पर भी लाठियाँ पड़ी। परन्तु फर भी सुभाष बाबू बहुत ज़ोर से वन्दे मातरम बोलते जा रहे थे।इस तरफ इस तरह - का माहौलथा और दूसरी तरफ स्मारक केनिचे सीढ़ियों पर स्त्रियां झंडा फहरा रही थी और स्वतंत्रता की प्रतिज्ञा पढ़ रही थी। स्त्रियाँ बहुत अ धक संख्या में आई हुई थी।सुभाष बाबू को भी पकड़ लया गया और गाड़ी में बैठा कर लालबाज़ार लॉकअप में भेज दिया गया। कुछ देर बाद ही स्त्रियाँ वहाँ से जन समूह बना कर आगे बढ़ने लगी। उनके साथ बहुत बड़ी भीड़ भी इकठ्ठी हो गई।पु लस बीच बीच में लाठियाँ चलना शुरू कर देती थी। इस बार भीड़ ज्यादा थी तो - आते जुलूस टूट गया और - आदमी भी ज्यादा जख्मी हुए। धर्मतल्ले के मोड़ पर आते लगभग50 से 60 स्त्रियाँ वहीं मोड़ पर बैठ गई।उन स्त्रियों को लालबाज़ार ले जाया गया। और भी कई आद मयों को गरफ्तार कया गया।मदालसा जो जानकीदेवी और जमना लाल बजाज की पुत्री थी ,उसे भी गरफ़्तार कया गया था। उससे बाद में मालूम हुआ की उसको थाने में भी मारा गया था। सब मलकर 105 स्त्रियों को गरफ्तार कया गया था। बाद में रात नौ बजे सबको छोड़ दिया गया था। कलकत्ता में इस से पहले इतनी स्त्रियों को एक साथ कभी गरफ़्तार नहीं कया गया था।डॉक्टर दासगुप्ता उनकी देखरेख कर रहे थे और उनके फोटो खंचवा रहे थे।

उस समय तो 67 आदमी वहाँ थे परन्तु बाद में 103 तक पहुँच गए थे।

इतना सबकुछ पहले कभी नहीं हुआ था ,लोगों का ऐसा प्रचंड रूप पहले कसी ने नहीं देखा था।

बंगाल या कलकत्ता के नाम पर कलंक था की यहाँ स्वतंत्रता का कोई काम नहीं हो रहा है।

आज ये कलंका काफी हद तक धूल गया और लोग ये सोचने लगे क यहाँ पर भी स्वतंत्रता के वषय में काम कया जा सकता है।

*-बहुवैकल्पिक प्रश्नोत्तर-

Q1- इस कहानी के लेखक कौन हैं ?

A) सीताराम

B) सेकसरिया

C) सीताराम सेकसरिया

D) कोई नहीं

Q2- सीताराम सेकसरिया का जन्म कब हुआ ?

A) १८९२ में

B) १८९१ में

C) १८९० में

D) कोई नहीं

Q3- सीताराम सेकसरिया का जन्म कहाँ हुआ था ?

A) राजस्थान के नवलगढ़ में

B) राजस्थान के चूरू में

C) राजस्थान के सीरत में

D) कोई नहीं

Q4- लेखक ने पढ़ना लखना बिना स्कूल गए कैसे सीखा ?

A) स्वध्याय से

B) गुरु से

C) माता पता से

D) कोई नहीं

Q5- लेखक को पदम श्री से कब सम्मानित कया गया ?

A) १९६२ में

B) १९६१ में

C) १९७९ में

D) कोई नहीं

Q6- डायरी का पन्ना कहानी कब लखी गई ?

A) २६ जनवरी १९३१ को

B) २६ जनवरी १९३२

C) २६ जनवरी १९३३

D) कोई नहीं

Q7- लेखक की प्रमुख रचनाओं के नाम बताएं |

A) मन की बात

b) नई याद

C) एक कार्यकर्त्ता की डायरी

d) सभी

Q8- लेखक की भाषा पर दूसरी कौन सी भाषा का प्रभाव दिखाई देता है ?

A) बांग्ला

B) कन्नड़

C) तेलगू

D) सभी

Q9- लेखक ने तत्सम और तदभव शब्दों के साथ कौन से शब्दों का प्रयोग कया है ?

A) देशज

B) वदेशी

C) अलंकारित

D) सभी

Q10- लेखक की रचनाओं में कस शैली का अ धक प्रयोग हुआ है ?

A) आत्मकथात्मक
B) अलंकारित
C) उपमायुक्त
D) सभी

*-प्रश्नोत्तर-

(क) निम्न ल खत प्रश्नों के उत्तर(25 -30 शब्दों में ल खए

प्रश्न 1 -: 26 जनवरी 1931 के दिन को अमर बनाने के लए क्या क्या तैयारियाँ की गईं-**?**
उत्तर :-26 जनवरी 1931 के दिन को अमर बनाने के लए काफ़ी तैयारियाँ की गयी थीं। केवल प्रचार पर ही दो हज़ार रूपए खर्च कये गए थे। कार्यकर्ताओं को उनका कार्य घर घर जा कर - जगह झंडे लगाए गए थे। कई स्थानों पर जुलूस - समझाया गया था। कलकत्ता शहर में जगह निकाले जा रहे थे और झंडा फहराया जा रहा था। टो लयाँ बना कर लोगो की भीड़ उस स्मारक के नीचे इकठ्ठी होने लगी थी ,जहाँ सुभाष बाबू झंडा फहराने वाले थे और स्वतंत्रता की प्रतिज्ञा पढ़ने वाले थे।

प्रश्न 2 -: 'आज जो बात थी ,वह निराली थी '- कस बात से पता चल रहा था क आज का दिन अपने आप में निराला है? स्पष्ट कीजिए।
उत्तर -: आज का दिन निराला इस लए था क्यों क आज के ही दिन पहली बार सारे हिंदुस्तान में स्वतंत्रता दिवस मनाया गया था और इस साल भी फर से वही दोहराया जाना था। सभी मकानों पर हमारा राष्ट्रीय झंडा फहरा रहा था और बहुत से मकान तो इस तरह सजाए गए थे जैसे हमें स्वतंत्रता मल गई हो। स्मारक के निचे जहाँ शाम को सभा होने वाली थी, उस जगह को तो सुबह के छः बजे से ही पु लस ने बड़ी संख्या में आकर घेर कर रखा था ,इतना सब कुछ होने के बावजूद भी कई जगह पर तो सुबह ही लोगों ने झंडे फहरा दिए थे। स्त्रियाँ अपनी तैयारियों में लगी हुई थी। अलग अलग जगहों से स्त्रियाँ अपना जुलूस निकालने और सही जगह पर पहुँचने की को शश में लगी हुई थी।

प्रश्न 3 -: पु लस क मश्नर के नोटिस और कौं सल के नोटिस में क्या अंतर है **?**
उत्तर पु लस क मश्नर ने नोटिस निकाला :- था क अमुक अमुक धारा के अनुसार कोई सभा - नहीं हो सकती। यदिकोई सभा में जाता है तो उसे दोषी समझा जायेगा। कौं सल की ओर से नोटिस निकला था क स्मारक के निचे ठीक चार बजकर चैबीस मनट पर झंडा फहराया जाएगा तथा स्वतंत्रता की प्रतिज्ञा पढ़ी जाएगी। सर्वसाधारण की उपस्थिति होनी चाहिए। इस तरह दोनों नोटिस एक दूसरे के वरुद्ध थे|

प्रश्न 4 -: धर्मतल्ले के मोड़ पर आकर जुलूस क्यों टूट गया **?**
उत्तर जब सुभाष बाबू को गरफ्तार करके पु लस ले गई तो स्त्रियाँ जुलूस बना कर जेल की :- और चल पड़ी परन्तु पु लस की लाठियों ने कुछ को घायल कर दिया,कुछ को पु लस गरफ्तार करके ले गई और बची हुई स्त्रियाँ पहले तो वहीँ धर्मतल्ले के मोड़ पर ही बैठ गई। बाद में उन्हें पु लस पकड़ कर ले गई। इस कारण धर्मतल्ले के मोड़ पर आ कर जुलूस टूट गया।

प्रश्न 5 -: डॉ दास गुप्ता जुलूस में घायल लोगों की देख रेख तो कर ही रहे थे .,उनके फोटो भी उतरवा रहे थे। उन लोगों के फोटो खचवाने की क्या वजह हो सकती थी ? स्पष्ट कीजिए।
उत्तर दास गुप्ता जुलूस में घायल लोगों की देख रेख तो कर ही रहे थे .डॉ :-,उनके फोटो भी उतरवा रहे थे। उन लोगों के फोटो खचवाने की दो वजह हो सकती थी। एक तो यह क अंग्रेजों के अत्याचारों का खुलासा कया जा सकता था क कस तरह उन्होंने औरतो तक को नहीं छोड़ा। दूसरी वजह यह हो सकती है क बंगाल या कलकत्ता पर जो कलंक था क वहाँ स्वतंत्रताके लए कोई काम नहीं हो रहा है, इस कलंक को कुछ हद तक धोया जा सकता था और साबित कया जा सकता था क वहाँ भी बहुत काम हो रहा है के लए कोई काम नहीं हो रहा है, इस कलंक को कुछ हद तक धोया जा सकता था और साबित कया जा सकता था क वहाँ भी बहुत काम हो रहा है|

(ख)निम्नलखत प्रश्नों के उत्तर (50 -60 शब्दों में) दीजिए

प्रश्न 1 -: सुभाष बाबू के जुलूस में स्त्री समाज की क्या भू मका थी ?

उत्तर सुभाष बाबू के जुलूस में स्त्री समाज की बहुत महत्पूर्ण भू मका थी। स्त्रियों ने बहुत :-

पहुँचाने की को शश में लगी हुई थी। स्मारक के निचे सीढ़ियों पर स्त्रियां झंडा फहरा रही थी और स्वतंत्रता की प्रतिज्ञा पढ़ रही थी। स्त्रियाँ बहुत अ धक संख्या में आई हुई थी।सुभाष बाबू की गरफ़्तारी के कुछ देर बाद ही स्त्रियाँ वहाँ से जन समूह बना कर आगे बढ़ने लगी।। धर्मतल्ले के मोड़ पर आते आते जुलूस टूट गया और लगभग -50 से 60 स्त्रियाँ वही मोड़ पर बैठ गई। उन स्त्रियों को लालबाज़ार ले जाया गया। मदालसा जो जानकीदेवी और जमना लाल बजाज की पुत्री थी ,उसे भी गरफ़्तार कया गया था। उससे बाद में मालूम हुआ की उसको थाने में भी मारा गया था। सब मलकर 105 स्त्रियों को गरफ्तार कया गया था|

प्रश्न 2 -: जुलूस के लालबाज़ार आने पर लोगों की क्या दशा हुई ?

उत्तर जब सुभाष बाबू को गरफ्तार करके पु लस ले गई तो स्त्रियाँ जुलूस बना कर जेल की :- और चल पड़ी। उनके साथ बहुत बड़ी भीड़ भी इकठ्ठी हो गई। परन्तु पु लस की लाठियों ने कुछ को घायल कर दिया, कुछ को पु लस गरफ्तार करके ले गई और बची हुई स्त्रियाँ वहीँ धर्मतल्ले केमोड़ पर बैठ गई।भीड़ ज्यादा थी तो आदमी भी ज्यादा जख्मी हुए। कुछ के सर फ़टे थे और खून बह रहा था|

प्रश्न 3 -: 'जब से कानून भंग का काम शुरू हुआ है तब से आज तक इतनी बड़ी सभा ऐसे मैदान में नहीं की गई थी और यह सभा तो कहना चाहिए क ओपन लड़ाई थी।' यहाँ पर कौन ज़ोर कस के द्वारा लागू कये गए कानून को भंग करने की बात कही गई है ? क्या कानून भंग करना उ चत था ? पाठ के सन्दर्भ में अपने वचार प्रकट कीजिए।

उत्तर यहाँ पर अंग्रेज प्रशासन द्वारा :- सभा ना करने के कानून को भंग करने की बात कही है। ये कानून वास्तव में भारत वा सयों की स्वतंत्रता को कुचलने वाला कानून था अतः इस कानून का उलंघन करना सही था। उस समय हर देशवासी स्वतंत्रता के लए अपना सब कुछ त्यागने के लए तैयार था और अंग्रेजी हुकूमत ने सभा करने ,झंडा फहराने और जुलूस में शा मल होने को गैरकानूनी घो षत कर दिया था। अंग्रेजी प्रशासन नहीं चाहता था क लोगो में आज़ादी की भावना आये परन्तु अब हर देशवासी स्वतन्त्र होना चाहता था। उस समय कानून का उलंघन करना सही था।

प्रश्न 4 -:बहुत से लोग घायल हुए,बहुतों को लॉकअप में रखा गया ,बहुत सी स्त्रियाँ जेल गई , फर भी इस दिन को अपूर्व बताया गया है। आपके वचार से यह सब अपूर्व क्यों है ?अपने शब्दों में ल खए।

उत्तर :- सुभाष बाबू के नेतृत्व में कलकत्ता में लोगों ने स्वतंत्रता दिवस मानाने की ऐसी तैयारियाँ की थी जैसी आज से पहले कभी नहीं हुई थी। पुलिस कमिश्नर ने नोटिस निकाला था कि कोई भी सभा में नहीं जायेगा यदि कोई जाता है तो उसे दोषी समझा जाएगा। परन्तु लोगो ने इसकी कोई परवाह नहीं की और अपनी तैयारियों में लागे रहे। पुलिस की लाठियों से कई लोग घायल हुए ,कई लोगों को गिरफ्तार किया गया। स्त्रियों पर भी बहुत अत्याचार हुए ,इतिहास में कभी इतनी स्त्रियों को एक साथ गिरफ्तार नहीं किया गया था। इन्हीं बातों के कारण इस दिन को अपूर्व बताया गया।

(ग) निम्नलिखित का आशय स्पष्ट कीजिए -:

(1) आज तो जो कुछ हुआ वह अपूर्व हुआ है। बंगाल के नाम या कलकत्ता के नाम पर कलंक था कि यहाँ काम नहीं हो रहा है। वह आज बहुत अंश में धूल गया।
उत्तर :- कलकत्ते के लगभग सभी भागों में झंडे लगाए गए थे। जिस भी रास्तों पर मनुष्यों का आना - जाना था, वहीं जोश ,ख़ुशी और नया पन महसूस होता था।बड़े बड़े पार्कों और मैदानों - को सवेरे से ही पुलिस ने घेर रखा था क्योंकि वही पर सभाएँ और समारोह होना था। स्मारक के निचे जहाँ शाम को सभा होने वाली थी उस जगह को तो सुबह के छः बजे से ही पुलिस ने बड़ी संख्या में आकर घेर कर रखा था ,इतना सब कुछ होने के बाबजूद भी कई जगह पर तो सुबह ही लोगों ने झंडे फहरा दिए थे। जब से स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए कानून तोड़ने का सिलसिला शुरू हुआ था तब से आज तक इतनी बड़ी सभा ऐसे खुले मैदान में कभी नहीं हुई थी और ये सभा तो कह सकते हैं की सबके लिए ओपन लड़ाई थी।। पुलिस कमिश्नर ने नोटिस निकल दिया था कि अमुक अमुक धारा-के अनुसार कोई भी, कही भी, किसी भी तरह की सभा नहीं कर सकते हैं।लोगो की भीड़ इतनी अधिक थी कि पुलिस ने उनको रोकने के लिए लाठियां चलाना शुरू कर दिया। आदमियों के सर फट गए। पुलिस कई आदमियों को पकड़ कर ले गई।अलग अलग जगहों से स्त्रियाँ अपना जुलूस निकालने और सही जगह पर पहुँचाने की कोशिश में लगी हुई थी।इतना सब कुछ होने पर भी लोगो के सहस और जोश में कमी नहीं आई।

(2) खुला चैलेंज देकर ऐसी सभा पहले नहीं की गई थी।

उत्तर :- जब से स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए कानून तोड़ने का सिलसिला शुरू हुआ था तब से आज तक इतनी बड़ी सभा ऐसे खुले मैदान में कभी नहीं हुई थी और ये सभा तो कह सकते हैं की

सबके लए ओपन लड़ाई थी। पु लस क मश्नर ने नोटिस निकल दिया था क अमुक अमुक - धारा के अनुसार कोई भी, कही भी, कसी भी तरह की सभा नहीं कर सकते हैं। जो लोग भी काम करने वाले थे उन सबको इंस्पेक्टरों के द्वारा नोटिस और सुचना दे दी गई थी अगर उन्होंने कसी भी तरह से सभा में भाग लया तो वे दोषी समझे जायेंगे।इधर परिषद् की ओर से नोटिस निकल गया था क ठीक चार बजकर चौबीस मनट पर स्मारक के निचे झंडा फहराया जायेगा तथा स्वतंत्रता की प्रतिज्ञा पढ़ी जाएगी। सभी लोगो को उपस्थित रहने के लए कहा गया था। प्रशासन को इस तरह से खुली चुनौती दे कर कभी पहले इस तरह की कोई सभा नहीं हुई थी|

संचयन-पाठ-२- सपनों केसे दिन-

लेखक - गुरदयाल संह

जन्म - 10 जनवरी 1933

पाठ सार

लेखक कहता है क उसके बचपन में उसके साथ खेलने वाले बच्चों का हाल भी उसी की तरह होता था। सभी के पाँव नंगे, फटी मैली सी कच्छी और कई जगह से फटे कुर्ते-, जिनके बटन टूटे हुए होते थे और सभी के बाल बिखरे हुए होते थे। जब सभी खेल कर, धूल से लपटे हुए, कई जगह से पाँव में छाले लए, घुटने और टखने के बीच का टाँग के पीछे माँस वाले भाग पर खून के ऊपर जमी हुई रेत मट्टी से-लथपथ पंड लयाँ ले कर अपने-अपने घर जाते तो सभी की माँ-बहनें उन पर तरस नहीं खाती बल्कि उल्टा और ज्यादा पीट देतीं। कई बच्चों के पता तो इतने गुस्से वाले होते क जब बच्चे को पीटना शुरू करते तो यह भी ध्यान नहीं रखते क मुँह से लहू बहने लगा है-छोटे बच्चे के नाकऔर ये भी नहीं पूछते क उसे चोट कहाँ लगी है। परन्तु इतनी बुरी पटाई होने पर भी दूसरे दिन सभी बच्चे फर से खेलने के लए चले आते। लेखक कहता है क यह बात लेखक को तब समझ आई जब लेखक स्कूल अध्यापक बनने के लए प्र शक्षण ले रहा था। वहाँ लेखक ने बच्चों के मन के वज्ञान का वषय पढ़ा था।
लेखक कहता है क कुछ परिवार के बच्चे तो स्कूल ही नहीं जाते थे और जो कभी गए भी, पढाई में रू च न होने के कारण कसी दिन बस्ता तालाब में फेंक आए और उनके माँबाप ने -

भी उनको स्कूल भेजने के लए कोई जबरदस्ती नहीं की। यहाँ तक की राशन की दुकान वाला और जो कसानों की फसलों को खरीदते और बेचते हैं वे भी अपने बच्चों को स्कूल भेजना जरुरी नहीं समझते थे। वे कहते थे क जब उनका बच्चा थोड़ा बड़ा हो जायगा तो पंडत घनश्याम दास से हिसाब कताब लखने की पंजाबी प्राचीन ल प पढ़वाकर सीखा देंगे और - दुकान पर खाता लखवाने लगा देंगे|

लेखक कहता है क बचपन में कसी को भी स्कूल के उस कमरे में बैठ कर पढ़ाई करना कसी कैद से कम नहीं लगता था। बचपन में घास ज्यादा हरी और फूलों की सुगंध बहुत ज्यादा मन को लुभाने वाली लगती है। लेखक कहता है की उस समय स्कूल की छोटी क्यारियों में फूल भी कई तरह के उगाए जाते थे जिनमें गुलाब, गेंदा और मोतिया की दूधसी सफ़ेद क लयाँ भी - हुआ करतीं थीं। ये क लयाँ इतनी सूंदर और खुशबूदार होती थीं क लेखक और उनके साथी चपरासी कभी कुछ फूल तोड़ लया करते थे। परन्तु लेखक को अब यह याद नहीं क फर उन फ◌ूलों का वे क्या करते थे। लेखक कहता है क शायद वे उन फूलों को या तो जेब में डाल लेते होंगे और माँ उसे धोने के समय निकालकर बाहर फेंक देती होगी या लेखक और उनके साथी खुद ही, स्कूल से बाहर आते समय उन्हें बकरी के मेमनों की तरह खा या 'चर' जाया करते होगें।

लेखक कहता है क उसके समय में स्कूलों में, साल के शुरू में एकडेढ़ महीना ही पढ़ाई हुआ - करती थी, फर डेढ़दो महीने की छुटियाँ शुरू हो जाती थी। हर साल ही छुटियों में लेखक - दहीं-अपनी माँ के साथ अपनी नानी के घर चले जाता था। वहाँ नानी खूब दूध, मक्खन खलाती, बहुत ज्यादा प्यार करती थी। दोपहर तक तो लेखक और उनके साथी उस तालाब में नहाते फर नानी से जो उनका जी करता वह माँगकर खाने लगते। लेखक कहता है क जिस साल वह नानी के घर नहीं जा पाता था, उस साल लेखक अपने घर से दूर जो तालाब था वहाँ जाया करता था।लेखक और उसके साथी कपड़े उतार कर पानी में कूद जाते, फर पानी से निकलकर भागते हुए एक रेतीले टीले पर जाकर रेत के ऊपर लोटने लगते फर गीले शरीर को गर्म रेत से खूब लथपथ करके फर उसी कसी ऊँची जगह जाकर वहाँ से तालाब में छलाँग लगा देते थे। लेखक कहता है क उसे यह याद नहीं है क वे इस तरह दौड़ना, रेत में लोटना और फर दौड़ कर तालाब में कूद जाने का सल सला पाँचबीस बार।-दस बार करते थे या पंद्रह-लेखक कहता है क जैसेजैसे उनकी छुट्टियों के दिन ख़त्म होने लगते तो वे लोग दिन गनने शुरू कर देते - साथ तालाब मे-कूद के साथ-थे। डर के कारण लेखक और उसके साथी खेल◌ं नहाना भी भूल जाते। अध्यापकों ने जो काम छुट्टियों में करने के लए दिया होता था, उसको कैसे करना है इस

बारे में सोचने लगते। काम न कया होने के कारण स्कूल में होने वाली पटाई का डर अब और ज्यादा बढ़ने लगता। लेखक बताता है क उसके कतने ही सहपाठी ऐसे भी होते थे जो छुट्टियों का काम करने के बजाय अध्यापकों की पटाई अ धक 'सस्ता सौदा' समझते। ऐसे समय में लेखक और उसके साथी का सबसे बड़ा 'नेता' ओमा हुआ करता था। ओमा की बातें, गा लयाँ और उसकी मार पटाई का ढंग सभी से बहुत अलग था। वह देखने में भी सभी से बहुत अलग था। -उसका मटके के जितना बड़ा सर था, जो उसके चार बा लश्त के छोटे कद के शरीर (ढाई फुट) पर ऐसा लगता था जैसे बिल्ली के बच्चे के माथे पर तरबूज रखा हो। बड़े सर पर नारियल जैसी आँखों वाला उसका चेहरा बंदरिया के बच्चे जैसा और भी अजीब लगता था। जब भी लड़ाई होती थी तो वह अपनेहाथपाँव का प्रयोग नहीं करता था-, वह अपने सर से ही लड़ाई कया करता था।

लेखक कहता है क वह जिस स्कूल में पढता था वह स्कूल बहुत छोटा था। उसमें केवल छोटे-छोटे नौ कमरे थे, जो अंग्रेजी के अक्षर एच)H) की तरह बने हुए थे। दाईं ओर का पहला कमरा हेडमास्टर श्री मदनमोहन शर्मा जी का था। स्कूल की प्रेयर के समय वह बाहर आते (प्रार्थना) थे और सीधी पंक्तियों में कद के अनुसार खड़े लड़कों को देखकर उनके गोरा चेहरे पर ख़ुशी साफ़ ही दिखाई देती थी। मास्टर प्रीतम चंद जो स्कूल के'पीटी' थे, वे लड़कों की पंक्तियों के पीछे खड़ेखड़े यह- देखते रहते थे क कौन सा लड़का पंक्ति में ठीक से नहीं खड़ा है। उनकी धमकी भरी डाँट तथा लातघुस्से के डर से लेखक और लेखक के साथी पंक्ति के पहले और -आखरी लड़के का ध्यान रखते, सीधी पंक्ति में बने रहने की पूरी को शश करते थे। मास्टर प्रीतम चंद बहुत ही सख्त अध्यापक थे। परन्तु हेडमास्टर शर्मा जी उनके बिलकुल उलट स्वभाव के थे। वह पाँचवीं और आठवीं कक्षा को अंग्रेजी स्वयं पढ़ाया करते थे। कसी को भी याद नहीं था क पाँचवी कक्षा में कभी भी उन्होंने हेडमास्टर शर्मा जी को कसी गलती के कारण कसी को मारते या डाँटते देखा या सूना हो।

लेखक कहता है क बचपन में स्कूल जाना बिलकुल भी अच्छा नहीं लगता था परन्तु एकदो -कभी स्कूल जाना अच्छा भी लगने लगता था। मास्टर प्रीतम संह जब -कारणों के कारण कभी राइट की आवाज़ निकालते हुए मार्च करवाया -परेड करवाते और मुँह में सीटी ले कर लेफ्ट करते थे। फर जब वे राइट टर्न या लेफ्ट टार्न या अबाऊट टर्न कहते तो सभी वद्यार्थी अपने छोटेठक करते और -बाएँ या एकदम पीछे मुड़कर जूतों की ठक-छोटे जूतों की ए ड़यों पर दाएँ-ऐसे घमंड के साथ चलते जैसे वे सभी वद्यार्थी न हो कर, बहुत महत्वपूर्ण 'आदमी' हों, जैसे

कसी देश का फौज़ी जवान होता है । स्काउटिंग करते हुए कोई भी वद्यार्थी कोई गलती न करता तो पीटी साहब अपनी चमकीली आँखें हलके से झपकाते और सभी को शाबाश कहते। उनकी एक शाबाश लेखक और उसके सा थयों को ऐसे लगने लगती जैसे उन्होंने कसी फ़ौज के सभी पदक या मैडल जीत लए हों।

लेखक कहता है क हर साल जब वह अगली कक्षा में प्रवेश करता तो उसे पुरानी पुस्तकें मला करतीं थी। उसके स्कूल के हेडमास्टर शर्मा जी एक धनि घर के लड़के को उसके घर जा कर पढ़ाया करते थे। हर साल अप्रैल में जब पढ़ाई का नया साल आरम्भ होता था तो शर्मा जी उस लड़के की एक साल पुरानी पुस्तकें लेखक के लए ले आते थे। लेखक के घर में कसी को भी पढ़ाई में कोई रू च नहीं थी। यदि नयी कताबें लानी पड़तीं तो शायद इसी बहाने लेखक की पढ़ाई तीसरीचौथी कक्षा में ही छूट जाती।-

लेखक कहता है क जब लेखक स्कूल में था तब दूसरे वश्व युद्ध का समय था। लोगो को फ़ौज में भर्ती करने के लए जब कुछ अफसर गाँव में आते तो उनके साथ कुछ नौटंकी वाले भी आया करते थे|

*-बहुवैकल्पिक प्रश्नोत्तर-

Q1- सपनो के से दिन के लेखक कौन हैं ?

A) म थलेश्वर
B) रही मासूम
C) गुरदयाल संह
D) कोई नहीं

Q2- स्कूल के पी टी सर का क्या नाम था ?

A) मास्टर प्रीतम चंद
B) हरीश चंद
C) मुकुंद लाल
D) कोई नहीं

Q3- मास्टर प्रीतम चंद कतारों के पीछे खड़े खड़े क्या देखते थे ?

A) लड़कों को
B) कौन सा लड़का कतार में ठीक से नहीं खड़ा
C) कोई नहीं
D) कता

Q4- लड़के कसके डर से कतार खड़े रहते ?

A) मास्टर प्रीतम चंद की घुड़की के डर से
B) मार के डर से
C) कोई नहीं
D) घुड़की के डर से

Q5- पी. टी सर कौन से मुहावरे को प्रत्यक्ष कर दिखाते थे ?

A) खाल खींचने
B) खाल झाड़ने
C) कान मरोड़ने
D) कोई नहीं

Q6- पी. टी सर खाल खींचने के मुहावरे को कब प्रत्यक्ष दिखाते थे ?

A) जब कोई लड़का अपना सर हिलाता
B) ज ब कोई लड़का पंडली खुजलाता
C) कोई नहीं
D) दोनों

Q7- अब कस दंड पर पूरी तरह प्रतिबंध है ?

(A)मान सक
B) कोई भी दंड
C) शारीरिक दंड
D) कोई नहीं

Q8- इस पाठ के माध्यम से लेखक ने कन दिनों का वर्णन कया है ?

A) आज़ादी के दिनों का

B) अंग्रेजो के दिनों का

C) अपने स्कूल के दिनों का

D) कोई नहीं

Q9- बच्चों को स्कूल में अपनी पढ़ाई से अ धक क्या अच्छा लगता है ?

A) कंप्यूटर क्लास

B) जिम

C) अपने सा थओं के साथ खेलना

D) कोई नहीं

Q10- हैड मास्टर लड़के की कताबे क्यों लाकर देते थे ?

A) उसे पढ़ने का शौंक था

B) कताबे इकठी करने का शौंक था

C) लेखक के परिवार की आ र्थक स्ति थ अच्छी नहीं थी

D) कोई नहीं

*- प्रश्न-अभ्यास-

प्रश्न 1.कोई भी भाषा आपसी व्यवहार में बाधा नहीं बनती-पाठ के कस अंश से यह सद्ध होता है?
उत्तर-कोई भी भाषा आपसी व्यवहार में बाधा नहीं बनती, यह पाठ के इस अंश से सद्ध होता है हमारे आधे से अ धक साथी राजस्थान तथा हरियाणा से आकर मंडी में व्यापार या दुकानदारी करते थे। जब वे छोटे थे तो उनकी बोली हमें बहुत कम समझ आती थी, इस लए उनके कुछ शब्द सुन कर हमें हँसी आती थी, लेकन खेलते समय सभी एक-दूसरे की बात समझ लेते। इससे सद्ध हो जाता है क कोई भाषा आपसी व्यवहार में बाधक नहीं होती|

उत्तर-पीटी साहब प्रीतमचंद बहुत कड़क इनसान थे। उन्हें कसी ने न हँसते देखा न कसी की प्रशंसा करते। सभी छात्र उनसे भयभीत रहते थे। वे मार-मारकर बच्चों की चमड़ी तक उधेड़ देते थे। छोटे-छोटे बच्चे यदि थोड़ा-सा भी अनुशासन भंग करते तो वे उन्हें कठोर सजा देते थे। ऐसे कठोर स्वभाव वाले पीटी साहब बच्चों के द्वारा गलती न करने पर अपनी चमकीली आँखें हल्के से झपकाते हुए उन्हें शाबाश कहते थे। उनकी यह शाबाश बच्चों को फौज़ के सारे तमगों को जीतने के समान लगती थी।

प्रश्न 3.नई श्रेणी में जाने और नई कापयों और पुरानी कताबों से आती वशेष गंध से लेखक को बालमन क्यों उदास हो उठता था?

उत्तर-नयी श्रेणी में जाकर लेखक का बालमन इसलए उदास हो जाता था, क्योंक उसे कताबें अन्य लड़कों द्वारा पढ़ीहुई ही पढ़नी पड़ती थीं। उसके लए पुरानी कताबों का प्रबंध हेडमास्टर साहब कर देते थे, क्योंक लेखक के परिवार की आर्थक स्थिति अच्छी नहीं थी, जबक अन्य बच्चे नई कक्षा में नई कताबें खरीदते थे। लेखक का बालमन नई कापयों तथा पुरानी कताबों से आती वशेष गंध से उदास हो उठता था।

था?

उत्तर-लेखक गुरदयाल संह फौज़ी बनना चाहता था। उसने फुल बूट और शानदार वर्दी पहने लेफ्ट-राइट करते फौज़ी जवानों की परेड को देखा था। इसी कारण स्काउट परेड के समय धोबी की धुली वर्दी, पालश कए बूट तथा जुराबों को पहन वह स्वयं को फौज़ी जवान ही समझता था। स्काउट परेड में जब पीटी मास्टर लेफ्ट राइट की आवाज या मुँह की सीटी बजाकर मार्च करवाया करते थे तथा उनके राइट टर्न या लेफ्ट टर्न या अबाऊट टर्न कहने पर लेखक अपने छोटे-छोटे बूटों की एड़यों पर दाएँ-बाएँ या एक कदम पीछे मुड़कर बूटों की ठक-ठक की आवाज़ करते हुए स्वयं को वद्यार्थी न समझकर एक महत्त्वपूर्ण फौजी समझने लगता था।

प्रश्न 5.हेडमास्टर शर्मा जी ने पीटी साहब को क्यों मुअत्तल कर दिया?

उत्तर-पीटी साहब चौथी कक्षा को फ़ारसी भी पढ़ाते थे। एक दिन बच्चे उनके द्वारा दिया गया शब्द-रूप रट कर नहीं आए। इस पर उन्होंने बच्चों को पीठ ऊँची करके क्रूरतापूर्ण ढंग से मुर्गा बनने का आदेश दिया, तो उस समय वहाँ हेडमास्टर साहब आ गए। यह दृश्य देखकर हेडमास्टर उत्तेजित हो उठे। इसी कारण उन्होंने पीटी साहब को मुअत्तल कर दिया|

प्रश्न 6.लेखक के अनुसार उन्हें स्कूल खुशी से भागे जाने की जगह न लगने पर भी कब और क्यों उन्हें स्कूल जाना अच्छा लगने लगा?

में स्कूल जाना अच्छा नहीं लगता था। चौथी कक्षा तक कुछ लड़के को छोड़कर अन्य सभी साथी रोते-चल्लाते हुए स्कूल जाया करते थे। स्कूल में धोबी पटाई तथा मास्टरों की डाँट-फटकार के कारण स्कूल उन्हें एक नीरस व भयानक स्थान प्रतीत होता था, जिसके प्रति उनके मन में एक भय-सी बैठ गया था|इसके बावजूद कई बार ऐसी स्थितियाँ आती थीं जब उन्हें स्कूल जाना अच्छा भी लगता था। यह मौका तब आता था जब उनके पीटी सर स्काउटिंग का अभ्यास करवाते थे। वे पढ़ाई-लखाई के स्थान पर लड़कों के हाथों में नीली-पीली झंडयाँ पकड़ा देते थे, वे वन-टू-थ्री करके इन झंड़यों को ऊपर-नीचे

करवाते थे। हवा में लहराती यह झंड्या बड़ी अच्छी लगती थीं। अच्छा काम करने पर पीटी सर की शाबाशी भी मलती थी, तब यही कठोर पीटी सर बच्चों को बड़े अच्छे लगते थे। ऐसे अवसर पर स्कूल आना अच्छा व सुखद प्रतीत होता था।

प्रश्न 7.लेखक अपने छात्र जीवन में स्कूल से छुट्टयों में मले काम को पूरा करने के लए क्या-क्या कल्पना कया करता था?
उत्तर-लेखक अपने छात्र जीवन में स्कूल से छुट्टियों में मले काम को पूरा करने के लए तरह-तरह की योजनाएँ बनाया करता था। जैसे-हिसाब के मास्टर जी द्वारा दिए गए 200 सवालों को पूरा करने के लए रोज़ दस सवाल निकाले जाने पर 20 दिन में पूरे हो जाएँगे, लेकन खेल-कूद में छुट्टियाँ भागने लगतीं, तो मास्टर जी की पटाई का डर सताने लगता। फर लेखक रोज़ के 15 सवाल पूरे करने की योजना बनाता, तब उसे छुट्टियाँ भी बहुत कम लगने लगतीं और दिन बहुत छोटे लगने लगते तथा स्कूल का भय भी बढ़ने लगता। ऐसे में लेखक पटाई से डरने के बावजूद भी उन लोगों की भाँति बहादुर बनने की कल्पना करने लगता, जो छुट्टियों को काम पूरा करने की बजाय मास्टर जी से पटना ही अधक बेहतर समझते थे।

प्रश्न 9.वद्यार्थयों को अनुशासन में रखने के लए पाठ में अपनाई गई युक्तियों और वर्तमान में स्वीकृत मान्यताओं के संबंध में अपने वचार प्रकट कीजिए।
बिल्ला मार-मारकर बच्चों की चमड़ी तक उधेड़ देते थे। तीसरी-चौथी कक्षाओं के बच्चों से थोड़ा-सा भी अनुशासन भंग हो जाता, तो उन्हें कठोर सज़ा मलती थी ताक वे वद्यार्थी के जीवन में अनुशासन की नींव दृढ़ बना सकें। इसके साथ-साथ वद्यार्थयों को प्रोत्साहित तथा उत्साहित करने के लए उन्हें वद्यार्थयों को पीटने का अधकार नहीं है इसलए वद्यार्थी निडर होकर अनुशासनहीनता की ओर बढ़ रहे हैं, क्योंक आज पहले की भाँति वद्यार्थी शक्षकों से डरते नहीं हैं। इसके लए वद्यालय और माता-पता दोनों जिम्मेवार हैं। बच्चों में अनुशासन का वकास करने के लए उन्हें शारीरिक व मानासक यातना देना उचत नहीं। उन्हें प्रेमपूर्वक नैतिक मूल्य सखाए जाने चाहिए, जिनसे उनमें स्वानुशासन का वकास हो सके।

प्रश्न 10.बचपन की यादें मन को गुदगुदाने वाली होती हैं वशेषकर स्कूली दिनों की। अपने अब तक के स्कूली जीवन की खट्टी-मीठी यादों को लखए।
उत्तर-बचपन की और वशेषकर स्कूली जीवन की खट्टी-मीठी यादें मन को गुदगुदाती रहती हैं। ये यादें सभी की निजी होती हैं। मेरी भी कुछ ऐसी यादें मेरे साथ हैं। मैं जब नवीं कक्षा में पढ़ती थी मेरी माँ

कसी कारणवश बाहर गई थीं। इसलए मैं बिना गृहकार्य कए और बिना लंच लए स्कूल पहुँची। पहले तो अध्यापका से खूब डॉट पड़ी, फर आधी छुट्टी में मुझे अध्यापका ने खड़की के पास खड़ा पाया तो डॉट लगा दी। अगले पीरियड में मुझे बहुत बेचैनी हुई क अध्यापका मेरे बारे में क्या सोच रही होंगी, मैं अध्यापका कक्ष में उनसे मलने गई। उन्हें देखते ही मेरा रोना छूट गया। उन्होंने रोने का कारण पूछा तो मैंने रोते-रोते उन्हें कारण बताया क मेरी माता जी घर पर नहीं हैं। उन्होंने मुझे सांत्वना दी फर मुझे अपने डब्बे से खाना खलाया। आज भी मैं इस घटना को याद करती हूँ तो अध्यापका के प्रति भाव-वभोर हो उठती हूँ।

*-दीर्घ उत्तरीय प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1.लेखक ने अपने वद्यालय को हरा-भरा बनाने के लए कए गए प्रयासों का वर्णन कया है। इससे आपको क्या प्रेरणा मलती है?(मूल्यपरक प्रश्न)
उत्तर-लेखक के वद्यालय में अंदर जाने के रास्ते के दोनों ओर अलयार के बडे ढंग से कटे-छाँटे झाड उगे थे। उसे उनके नीम जैसे पत्तों की गंध अच्छी लगती थी। इसके अलावा उन दिनों क्यारियों में कई तरह के फूल उगाए जाते थे। इनमें गुलाब, गेंदा और मोतिया की दूध-सी कलयाँ होती थीं जिनकी महक बच्चों को आकर्षत करती थी। ये फूलदार पौधे वद्यालय की सुंदरता में वृद्ध करते थे। इससे हमें यह प्रेरणा मलती है क हमें भी अपने वद्यालय को स्वच्छ बनाते हुए हरा-भरा बनाने का प्रयास करना चाहिए। हमें तरह-तरह के पौधे लगाकर उनकी देखभाल करना चाहिए और वद्यालय को हरा-भरा बनाने में अपना योगदान देना चाहिए|

प्रश्न 2.लेखक और उसके साथयों द्वारा गरमी की छुट्टियाँ बिताने का ढंग आजकल के बच्चों द्वारा बिताई जाने वाली छुट्टियों से कस तरह अलग होता था? (मूल्यपरक प्रश्न)
उत्तर-लेखक और उसके साथी गरमी की छुट्टियाँ खेलकूद कर बिताते थे। वे घर से कुछ दूर तालाब पर चले जाते, कपड़े उतार पानी में कूद जाते और कुछ समय बाद, भागते हुए एक रेतीले टीले पर जाकर, रेत के ऊपर लेटने लगते। गीले शरीर को गरम रेत से खूब लथपथ कर उसी तरह भागते, कसी ऊँची जगह से तालाब में छलाँग लगा देते। रेत को गंदले पानी से साफ़ कर फर टीले की ओर भाग जाते।

याद नहीं क ऐसा, पाँच-दस बार करते या पंद्रह-बीस बार करते हुए आनंदित होते। आजकल के बच्चों द्वारा ग्रीष्मावकाश पूरी तरह अलग ढंग से बिताया जाता है। अब तालाब न रहने से वहाँ नहाने का आनंद नहीं लया जा सकता। बच्चे घर में रहकर लूडो, चेस, वीडयो गेम, कंप्यूटर पर गेम जैसे इंडोर गेम खेलते हैं। वे टीवी पर कार्टून और फ़ल्में देखकर अपना समय बिताते हैं। कुछ बच्चे माता-पता के साथ ठंडे स्थानों या पर्वतीय स्थानों की सैर के लए जाते हैं|

प्रश्न 3.मास्टर प्रीतमचंद को स्कूल से क्यों निलंबित कर दिया गया? निलंबन के औचत्य और उस घटना से उभरने वाले जीवन-मूल्यों पर वचार कीजिए। (मूल्यपरक प्रश्न)

उत्तर-मास्टर प्रीतमचंद सख्त अध्यापक थे। वे छात्रों की जरा-सी गलती देखते ही उनकी पटाई कर देते थे। वे छात्रों को फ़ारसी पढ़ाते थे। छात्रों को पढ़ाते हुए अभी एक सप्ताह भी न बीता था क प्रीतमचंद ने उन्हें शब्द रूप याद करके आने को कहा। अगले दिन जब कोई भी छात्र शब्द रूप न सुना सका तो उन्होंने सभी को मुरगा बनवा दिया और पीठ ऊँची करके खड़े होने के लए कहा। इसी समय हेडमास्टर साहब वहाँ आ गए। उन्होंने प्रीतमचंद को ऐसा करने से तुरंत रोकने के लए कहा और उन्हें निलंबित कर दिया प्रीतमचंद का निलंबन उचत ही था, क्योंक बच्चों को इस तरह फ़ारसी क्या कोई भी वषय नहीं पढ़ाया जा सकता है। शारीरिक दंड देने से बच्चों को ज्ञान नहीं दिया जा सकता है। इससे बच्चे दब्बू हो जाते हैं। उनके मन में अध्यापकों और शक्षा के प्रति भय समा जाता है। इससे पढ़ाई में उनकी रुच समाप्त हो जाती है।

व्याकरण-

वाक्य के अंग (Vakya ke Ang)

(1) उद्देश्य

(2) वधेय

(1) उद्देश्य →

जैसे → वैशाली कपड़े धो रही थी |

दमयंती ने खाना बनाया |

→ वाक्य में जिसके वषय में बताया जाता है, उसे उद्देश्य कहते हैं |

→ उद्देश्य के अंतर्गत कर्ता तथा कर्ता का वस्तार आता है |

(2) वधेय →

जैसे → रोहन झगड़ रहा था |

राधा सतार बजा रही है |

वाक्य के भेद)Vakya ke bhed)

(1) अर्थ के आधार पर (Arth ke aadhar par vakya ke bhed)

(2) रचना के आधार पर (Rachna ke aadhar par vakya ke bhed)

(1) वधानवाचक वाक्य

(2) निषेधवाचक वाक्य

(3) वस्मयवाचक वाक्य
(4) संदेहवाचक वाक्य
(5) आज्ञावाचक वाक्य
(6) संकेतवाचक वाक्य
(7) इच्छावाचक वाक्य
(8) प्रश्नवाचक वाक्य

(1) वधानवाचक वाक्य→

→ जिस वाक्य में कसी बात या कार्य के होने या करने का सामान्य कथन हो, उसे वधानवाचक वाक्य कहते है |

जैसे → वेदांत वद्यालय जा रहा है |

→ बलवीर ने भाषण दिया |

(2) निषेधवाचक वाक्य→

जिस वाक्य में क्रया के करने या होने का निषेध हो, उसे निषेधवाचक वाक्य कहते हैं |

जैसे → मैं बाजार नहीं जाऊँगा |

→ मोहन घूमने नहीं जा रहा |

(3) आज्ञावाचक वाक्य→

जिस वाक्य से आज्ञा, अनुमति, वनय या अनुरोध का बोध हो, उसे आज्ञावाचक वाक्य कहते हैं |

जैसे → कृपया हस्ताक्षर कर दीजिए |

तुम अंदर जाकर पढ़ाई करो

(4) प्रश्नवाचक वाक्य→

जिन वाक्यों द्वारा प्रश्न करने का भाव प्रकट होता है, उन्हें प्रश्नवाचक वाक्य कहते हैं |

जैसे → राहुल को कसने डाँट दिया **?**

आपको कससे मलना है **?**

(5) इच्छावाचक वाक्य→

जिस वाक्यों से इच्छा, आशीर्वाद, कामना, शुभकामना आदि का भाव प्रकट होता है, उसे इच्छावाचक वाक्य कहते हैं |

जैसे → (1) आपकी यात्रा मंगलमय हो |

(2) ईश्वर तुम्हें लंबी आयु दे |

(6) संदेहवाचक वाक्य→

ऐसे वाक्य जिनसे कार्य के होने या न होने के प्रति संदेह या संभावना प्रकट होती है, उन्हें संदेहवाचक वाक्य कहते हैं |

जैसे → (1) शायद कल वर्षा हो जाए |

(2) लगता है आज बारिश होगी |

(7) संकेतवाचक वाक्य→

जिस वाक्य में एक क्रिया का होना दूसरी क्रिया के होने पर निर्भर करता हो, उसे संकेतवाचक वाक्य कहते हैं |

जैसे → (1) पानी न बरसता, तो धान सूख जाता |

(2) यदि पेड़ लगाएँगे, तो वायु शुद्ध होगी |

(8) वस्मयवाचक वाक्य→

जिस वाक्य से हर्ष, शोक, आश्चर्य, घृणा, आदि भावों का बोध होता है, उसे वस्मयवाचक वाक्य कहते हैं |जैसे → (1) बाप रे ! इतना मोटा चूहा |

(2) वाह ! कतनी सुंदर फुलवारी है |

2.वाक्य के प्रकार:-

1. सरल वाक्य
2. संयुक्त वाक्य
3. मश्रत वाक्य
4. (1) सरल वाक्य→

जिस वाक्य में एक ही उद्देश्य तथा एक ही वधेय होता है, उसे सरल वाक्य कहते हैं |

जैसे → राम ने रावण को मारा

उद्देश्य = राम ने

वधेय = रावण को मारा |

अमत खाना खा रहा है |

उद्देश्य = अमत

वधेय = खाना खा रहा है |

(2) संयुक्त वाक्य→

जिस वाक्य में दो-या-दो से अधक स्वतंत्र उपवाक्य योजक या समुच्चयबोधक अव्यय द्वारा जुड़े हों, उसे संयुक्त वाक्य कहते हैं |

उदाहरण

(1) हमने फल्म का टिकट खरीदा फिर सनेमा हॉल चले गए |

(2) पताजी बाजार गए फिर हमारे लए मठाई लाए |

(3) मश्रत वाक्य→

जिस वाक्य में एक से अधक सरल वाक्य इस प्रकार जुड़े हो क उनमें एक प्रधान उपवाक्य तथा अन्य आश्रत उपवाक्य हों | उसे मश्रत वाक्य कहते हैं |

जैसे → वेदांत ने कहाँ क मैं गाँव नहीं जाऊँगा |

प्रधान उपवाक्य = वेदांत ने कहाँ

आश्रत उपवाक्य = क मैं गाँव नहीं जाऊँगा |

(2) वे सफल होते हैं जो परिश्रम करते है |

प्रधान उपवाक्य = वे सफल होते हैं

आश्रत उपवाक्य = जो परिश्रम करते है |

रचना के आधार पर वाक्यों में परिवर्तन

सरल वाक्य

चाय या कॉफी में से कोई पी लेंगे |

माँ ने गोलू को डाँटकर सुलाया |

संयुक्त वाक्य

चाय पी लेंगे या कॉफी पी लेंगे

माँ ने गोलू को डाँटा और सुला दिया

सरल वाक्य

लापरवाह मजदूर छत से गर गया |

ईमानदार व्यक्ति का सभी आदर करते हैं |

मश्र वाक्य

जो मज़दूर लापरवाह था, वह छत से गर गया |

जो व्यक्ति ईमानदार होता है, सभी उसका आदर करते हैं |

संयुक्त वाक्य

शालू आई और पढ़ने लगी |

घबराओ मत और कवता सुनाओ |

सरल वाक्य

शालू आकर पढ़ने लगी |

बिना घबराए कवता सुनाओ |

(संयुक्त वाक्य से मश्र वाक्य)

संयुक्त वाक्य

घंटी बज गई और बच्चे कक्षा में जाने लगे |

राधा आई तो रेखा चली गई |

मश्र वाक्य

जब घंटी बजी तब बच्चे कक्षा में जाने लगे |

जब राधा आई तब रेखा चली गई |

सरल वाक्य से संयुक्त वाक्य तथा मिश्र वाक्य

(1) कक्षा में अध्यापक आते ही सभी शांत हो गए | (सरल वाक्य)

कक्षा में अध्यापक आए और सभी शांत हो गए | (संयुक्त वाक्य)

जैसे ही कक्षा में अध्यापक आए वैसे ही सब शांत हो गए| (मिश्र वाक्य)

(2) माँ के आते ही दोनों बच्चे उनसे लपट गए | (सरल वाक्य)

माँ आई और दोनों बच्चे उनसे लपट गए | (संयुक्त वाक्य)

ज्यों ही माँ आई दोनों बच्चे उनसे लपट गए | (मिश्र वाक्य)

*-सरल वाक्य से संयुक्त वाक्य में परिवर्तन:-

(1)सरल वाक्य- अस्वस्थ रहने के कारण वह परीक्षा में सफल न हो सका।

संयुक्त वाक्य- वह अस्वस्थ था और इसलिए परीक्षा में सफल न हो सका।

(2)सरल वाक्य- सूर्योदय होने पर कुहासा जाता रहा।

संयुक्त वाक्य- सूर्योदय हुआ और कुहासा जाता रहा।

(3)सरल वाक्य- गरीब को लूटने के अतिरिक्त उसने उसकी हत्या भी कर दी।

संयुक्त वाक्य- उसने न केवल गरीब को लूटा, बल्कि उसकी हत्या भी कर दी।

(4)सरल वाक्य- पैसा साध्य न होकर साधन है।

संयुक्त वाक्य- पैसा साध्य नहीं है, किन्तु साधन है।

(5)सरल वाक्य- अपने गुणों के कारण उसका सब जगह आदर-सत्कार होता है।

संयुक्त वाक्य- उसमें गुण थे, इसलिए उसका सब जगह आदर-सत्कार होता था।

(6)सरल वाक्य- दोनों में से कोई काम पूरा नहीं हुआ।

संयुक्त वाक्य- न एक काम पूरा हुआ न दूसरा।

(7) सरल वाक्य- पंगु होने के कारण वह घोड़े पर नहीं चढ़ सकता।

संयुक्त वाक्य- वह पंगु है इसलिए घोड़े पर नहीं चढ़ सकता।

(8) सरल वाक्य- परिश्रम करके सफलता प्राप्त करो।

संयुक्त वाक्य- परिश्रम करो और सफलता प्राप्त करो।

(9) सरल वाक्य- रमेश दण्ड के भय से झूठ बोलता रहा।

संयुक्त वाक्य- रमेश को दण्ड का भय था, इसलिए वह झूठ बोलता रहा।

(10) सरल वाक्य- वह खाना खाकर सो गया।

संयुक्त वाक्य- उसने खाना खाया और सो गया।

(11) सरल वाक्य- उसने गलत काम करके अपयश कमाया।

संयुक्त वाक्य- उसने गलत काम किया और अपयश कमाया।

संयुक्त वाक्य से सरल वाक्य में परिवर्तन

(1)संयुक्त वाक्य- सूर्योदय हुआ और कुहासा जाता रहा।

सरल वाक्य- सूर्योदय होने पर कुहासा जाता रहा।

(2)संयुक्त वाक्य- जल्दी चलो, नहीं तो पकड़े जाओगे।

सरल वाक्य- जल्दी न चलने पर पकड़े जाओगे।

(3)संयुक्त वाक्य- वह धनी है पर लोग ऐसा नहीं समझते।

सरल वाक्य- लोग उसे धनी नहीं समझते।

(4)संयुक्त वाक्य- वह अमीर है फर भी सुखी नहीं है।

सरल वाक्य- वह अमीर होने पर भी सुखी नहीं है।

(5)संयुक्त वाक्य- बाँस और बाँसुरी दोनों नहीं रहेंगे।

सरल वाक्य- न रहेगा बाँस न बजेगी बाँसुरी।

(6)संयुक्त वाक्य- राजकुमार ने भाई को मार डाला और स्वयं राजा बन गया।

सरल वाक्य- भाई को मारकर राजकुमार राजा बन गया।

सरल वाक्य से मश्र वाक्य में परिवर्तन

(1)सरल वाक्य- उसने अपने मत्र का पुस्तकालय खरीदा।

मश्र वाक्य- उसने उस पुस्तकालय को खरीदा, जो उसके मत्र का था।

(2)सरल वाक्य- अच्छे लड़के परिश्रमी होते हैं।

मश्र वाक्य- जो लड़के अच्छे होते है, वे परिश्रमी होते हैं।

(3)सरल वाक्य- लोकप्रय कव का सम्मान सभी करते हैं।

मश्र वाक्य- जो कव लोकप्रय होता है, उसका सम्मान सभी करते हैं।

(4)सरल वाक्य- लड़के ने अपना दोष मान लया।

मश्र वाक्य- लड़के ने माना क दोष उसका है।

(5)सरल वाक्य- राम मुझसे घर आने को कहता है।

मश्र वाक्य- राम मुझसे कहता है क मेरे घर आओ।

(6)सरल वाक्य- मैं तुम्हारे साथ खेलना चाहता हूँ।

मश्र वाक्य- मैं चाहता हूँ क तुम्हारे साथ खेलूँ।

(7)सरल वाक्य- आप अपनी समस्या बताएँ।

मश्र वाक्य- आप बताएँ क आपकी समस्या क्या है ?

(8)सरल वाक्य- मुझे पुरस्कार मलने की आशा है।

मश्र वाक्य- आशा है क मुझे पुरस्कार मलेगा।

(9)सरल वाक्य- महेश सेना में भर्ती होने योग्य नहीं है।

मश्र वाक्य- महेश इस योग्य नहीं है क सेना में भर्ती हो सके।

(10)सरल वाक्य- राम के आने पर मोहन जाएगा।

मश्र वाक्य- जब राम जाएगा तब मोहन आएगा।

(11)सरल वाक्य- मेरे बैठने की जगह कहाँ है ?

मश्र वाक्य- वह जगह कहाँ है जहाँ मैं बैठूँ ?

(12)सरल वाक्य- मैं तुम्हारे साथ व्यापार करना चाहता हूँ।
मश्र वाक्य- मैं चाहता हूँ क तुम्हारे साथ व्यापार करूँ।

मश्र वाक्य से सरल वाक्य में परिवर्तन

(1)मश्र वाक्य- उसने कहा क मैं निर्दोष हूँ।
सरल वाक्य- उसने अपने को निर्दोष घोषत कया।
(2)मश्र वाक्य- मुझे बताओ क तुम्हारा जन्म कब और कहाँ हुआ था।
सरल वाक्य- तुम मुझे अपने जन्म का समय और स्थान बताओ।
(3)मश्र वाक्य- जो छात्र परिश्रम करेंगे, उन्हें सफलता अवश्य मलेगी।
सरल वाक्य- परिश्रमी छात्र अवश्य सफल होंगे।
(4)मश्र वाक्य- ज्यों ही मैं वहाँ पहुँचा त्यों ही घण्टा बजा।
सरल वाक्य- मेरे वहाँ पहुँचते ही घण्टा बजा।
(5)मश्र वाक्य- यदि पानी न बरसा तो सूखा पड़ जाएगा।
सरल वाक्य- पानी न बरसने पर सूखा पड़ जाएगा।
(6)मश्र वाक्य- उसने कहा क मैं निर्दोष हूँ।
सरल वाक्य- उसने अपने को निर्दोष बताया।
(7)मश्र वाक्य- यह निश्चित नहीं है क वह कब आएगा?
सरल वाक्य- उसके आने का समय निश्चित नहीं है।
(8)मश्र वाक्य- जब तुम लौटकर आओगे तब मैं जाऊँगा।
सरल वाक्य- तुम्हारे लौटकर आने पर मैं जाऊँगा।
(9)मश्र वाक्य- जहाँ राम रहता है वहीं श्याम भी रहता है।
सरल वाक्य- राम और श्याम साथ ही रहते हैं।
(10)मश्र वाक्य- आशा है क वह साफ बच जाएगा।
सरल वाक्य- उसके साफ बच जाने की आशा है।

संयुक्त वाक्य से मश्र वाक्य में परिवर्तन

(1) संयुक्त वाक्य- सूर्य निकला और कमल खल गए।
मश्र वाक्य- जब सूर्य निकला, तो कमल खल गए।
(2) संयुक्त वाक्य- छुट्टी की घंटी बजी और सब छात्र भाग गए।
मश्र वाक्य- जब छुट्टी की घंटी बजी, तब सब छात्र भाग गए।
(3)संयुक्त वाक्य- काम पूरा कर डालो नहीं तो जुर्माना होगा।
मश्र वाक्य- यदि काम पूरा नहीं करोगे तो जुर्माना होगा।
(4)संयुक्त वाक्य- इस समय सर्दी है इसलए कोट पहन लो।
मश्र वाक्य- क्योंक इस समय सर्दी है, इसलए कोट पहन लो।

(5)संयुक्त वाक्य- वह मरणासन्न था, इसलए मैंने उसे क्षमा कर दिया।

मश्र वाक्य- मैंने उसे क्षमा कर दिया, क्योंक वह मरणासन्न था।

(6)संयुक्त वाक्य- वक्त निकल जाता है पर बात याद रहती है।

मश्र वाक्य- भले ही वक्त निकल जाता है, फर भी बात याद रहती है।

(7)संयुक्त वाक्य- जल्दी तैयार हो जाओ, नहीं तो बस चली जाएगी।

मश्र वाक्य- यदि जल्दी तैयार नहीं होओगे तो बस चली जाएगी।

(8)संयुक्त वाक्य- इसकी तलाशी लो और घड़ी मल जाएगी।

मश्र वाक्य- यदि इसकी तलाशी लोगे तो घड़ी मल जाएगी।

(9)संयुक्त वाक्य- सुरेश या तो स्वयं आएगा या तार भेजेगा।

मश्र वाक्य- यदि सुरेश स्वयं न आया तो तार भेजेगा।

मश्र वाक्य से संयुक्त वाक्य में परिवर्तन

(1)मश्र वाक्य- वह उस स्कूल में पढ़ा जो उसके गाँव के निकट था।

संयुक्त वाक्य- वह स्कूल में पढ़ा और वह स्कूल उसके गाँव के निकट था।

(2)मश्र वाक्य- मुझे वह पुस्तक मल गई है जो खो गई थी।

संयुक्त वाक्य- वह पुस्तक खो गई थी परन्तु मुझे मल गई है।

(3)मश्र वाक्य- जैसे ही उसे तार मला वह घर से चल पड़ा।

संयुक्त वाक्य- उसे तार मला और वह तुरन्त घर से चल पड़ा।

(4)मश्र वाक्य- काम समाप्त हो जाए तो जा सकते हो।

संयुक्त वाक्य- काम समाप्त करो और जाओ।

(5)मश्र वाक्य- मुझे वश्वास है क दोष तुम्हारा है।

संयुक्त वाक्य- दोष तुम्हारा है और इसका मुझे वश्वास है।

(6)मश्र वाक्य- आश्चर्य है क वह हार गया।

संयुक्त वाक्य- वह हार गया परन्तु यह आश्चर्य है।

(7)मश्र वाक्य- जैसा बोओगे वैसा काटोगे।

संयुक्त वाक्य- जो जैसा बोएगा वैसा ही काटेगा।

अर्थ की दृष्टि से वाक्य में परिवर्तन

अर्थ की दृष्टि से वाक्य के आठ भेद हम पढ़ चुके हैं। उनका भी रूपान्तरण हो सकता है। एक वाक्य का उदाहरण देखए-

वधानवाचक- अनुपमा पुस्तक पढ़ेगी।

निषेधवाचक- अनुपमा पुस्तक नहीं पढ़ेगी।

प्रश्नवाचक- क्या अनुपमा पुस्तक पढ़ेगी ?

वस्मयवाचक- अरे! अनुपमा पुस्तक पढ़ेगी।

आज्ञावाचक- अनुपमा, पुस्तक पढ़ो।
इच्छावाचक- अनुपमा पुस्तक पढ़ती होगी।
संकेतवाचक- अनुपमा पुस्तक पढ़े तो ......
वधवाचक से निषेधवाचक वाक्य में परिवर्तन
(1)वधवाचक वाक्य- वह मुझसे बड़ा है।
निषेधवाचक- मैं उससे बड़ा नहीं हूँ।
(2)वधवाचक वाक्य- अपने देश के लए हरएक भारतीय अपनी जान देगा।
निषेधवाचक वाक्य- अपने देश के लए कौन भारतीय अपनी जान न देगा ?
वधानवाचक वाक्य से निषेधवाचक वाक्य में परिवर्तन
(1) वधानवाचक वाक्य- यह प्रस्ताव सभी को मान्य है।
निषेधवाचक- इस प्रस्ताव के वरोधाभास में कोई नहीं है।
(2) वधानवाचक वाक्य- तुम असफल हो जाओगे।
निषेधवाचक- तुम सफल नहीं हो पाओगे।
(3) वधानवाचक वाक्य- शेरशाह सूरी एक बहादुर बादशाह था।
निषेधवाचक- शेरशाह सूरी से बहादुर कोई बादशाह नहीं था।
(4) वधानवाचक वाक्य- रमेश सुरेश से बड़ा है।
निषेधवाचक- रमेश सुरेश से छोटा नहीं है।
(5) वधानवाचक वाक्य- शेर गुफा के अन्दर रहता है।
निषेधवाचक- शेर गुफा के बाहर नहीं रहता है।
(6) वधानवाचक वाक्य- मुझे सन्देह हुआ क यह पत्र आपने लखा।
निषेधवाचक- मुझे वश्वास नहीं हुआ क यह पत्र आपने लखा।
(7) वधानवाचक वाक्य- मुगल शासकों में अकबर श्रेष्ठा था।
निषेधवाचक- मुगल शासकों में अकबर से बढ़कर कोई नहीं था।
निश्चयवाचक वाक्य से प्रश्नवाचक वाक्य में परिवर्तन
(1) निश्चयवाचक- आपका भाई यहाँ नहीं हैं।
प्रश्नवाचक- आपका भाई कहाँ है ?
(2) निश्चयवाचक- कसी पर भरोसा नहीं कया जा सकता है।
प्रश्नवाचक- कस पर भरोसा कया जाए ?
(3) निश्चयवाचक- गाँधीजी का नाम सबने सुन रखा है।
प्रश्नवाचक- गाँधीजी का नाम कसने नहीं सुना?
(4) निश्चयवाचक- तुम्हारी पुस्तक मेरे पास नहीं हैं।
प्रश्नवाचक- तुम्हारी पुस्तक मेरे पास कहाँ है?

(5) निश्चयवाचक- तुम कसी न कसी तरह उत्तीर्ण हो गए।
प्रश्नवाचक- तुम कैसे उत्तीर्ण हो गए?
(6) निश्चयवाचक- अब तुम बिल्कुल स्वस्थ हो गए हो।
प्रश्नवाचक- क्या तुम अब बिल्कुल स्वस्थ हो गए हो?
(7) निश्चयवाचक- यह एक अनुकरणीय उदाहरण है।
प्रश्नवाचक- क्या यह अनुकरणीय उदाहरण नहीं हैं?
वस्मयादिबोधक वाक्य से वधानवाचक वाक्य में परिवर्तन
(1)वस्मयादिबोधक- वाह! कतना सुन्दर नगर है!
वधानवाचक वाक्य- बहुत ही सुन्दर नगर है!
(2) वस्मयादिबोधक- काश! मैं जवान होता।
वधानवाचक वाक्य- मैं चाहता हूँ क मैं जवान होता।
(3) वस्मयादिबोधक- अरे! तुम फेल हो गए।
वधानवाचक वाक्य- मुझे तुम्हारे फेल होने से आश्चर्य हो रहा है।
(4) वस्मयादिबोधक- ओ हो! तुम खूब आए।
वधानवाचक वाक्य- मुझे तुम्हारे आगमन से अपार ख़ुशी है।
(5) वस्मयादिबोधक- कतना क्रूर!
वधानवाचक वाक्य- वह अत्यन्त क्रूर है।
(6) वस्मयादिबोधक- क्या! मैं भूल कर रहा हूँ!
वधानवाचक वाक्य- मैं तो भूल नहीं कर रहा।
(7) वस्मयादिबोधक- हाँ हाँ! सब ठीक है।
वधानवाचक वाक्य- मैं अपनी बात का अनुमोदन करता हूँ।

*-पत्र-लेखन

प्रश्नः 1.
अपने वद्यालय के प्रधानाचार्य को प्रार्थना पत्र लखए जिसमें अपने परिवार की खराब आर्थक स्थिति का उल्लेख करते हुए आर्थक सहायता पाने का निवेदन कया गया हो।
उत्तरः

सेवा में
प्रधानाचार्य महोदय
नव सृजन पब्लिक
स्कूल सोहना रोड, गुड़गाँव
वषय-आर्थक सहायता पाने के संबंध में

मान्यवर

वनम्र निवेदन यह है क मैं इस वद्यालय की दसवीं कक्षा का छात्र हूँ। मेरे पता जी जिस फैक्ट्री में काम करते थे, वह सीलंग के कारण बंद हो गई है जिससे वे बेरोज़गार हो गए हैं। इस स्थिति में वे मेरा मासक शुल्क, छात्रावास शुल्क, सरदी की ड्रेस आदि दिलवाने में असमर्थ हैं। मैं अपनी कक्षा में गतवर्ष प्रथम आया था। इसके अलावा मैं वद्यालयी क्रकेट टीम का कप्तान भी हूँ।

अतः आपसे प्रार्थना है क मुझे वद्यालय से आर्थक सहायता प्रदान करने की कृपा करें ताक मैं अपनी पढ़ाई जारी रख सकूँ। आपकी इस कृपा के लए मैं आपका आभारी रहूँगा।

सधन्यवाद,
आपका आज्ञाकारी शष्य
वकास कुमार
दसवीं-ए,
अनुक्रमांक-12
10 अक्टूबर, 20XX

प्रश्नः 2.वद्यालय की प्रयोगशाला में प्रयोग करते हुए आपसे कुछ सामान टूट गया है, जिसके कारण वज्ञान शक्षका ने आप पर एक हज़ार रुपये का जुर्माना कर दिया है। इसे माफ़ कराने का निवेदन करते हुए प्रार्थना पत्र लखए।
उत्तरः

सेवा में
नवांकुर पब्लिक स्कूल
योग संस्थान रोड
रोहतक, हरियाणा
वषय-जुर्माना माफ़ करने के संबंध में

महोदय

सवनय निवेदन यह है क मैं इस वद्यालय की दसवीं कक्षा का छात्र हूँ। कल तीसरे पीरियड में प्रयोगशाला में प्रयोग करते समय नाइट्रिक एसड की बोतल मेरे हाथ से छूटकर गर गई, जिससे बोतल टूट गई और फ़र्श पर एसड बिखर गया। यद्यप वज्ञान शक्षका से मैं यह कहता रह गया क जान-बूझकर मैंने ऐसा नहीं कया है, फर भी उन्होंने मुझे दोषी मानते हुए एक हज़ार रुपये का जुर्माना कर दिया है। श्रीमान जी, मेरे पता जी चतुर्थ श्रेणी के कर्मचारी हैं, जो यह जुर्माना भरने में असमर्थ हैं।

अतः आपसे प्रार्थना है क मेरे परिवार की आर्थक स्थिति पर सहानुभूति पूर्वक वचार करते हुए जुर्माना माफ़ करने की कृपा करें। भवष्य में मैं ऐसी गलती नहीं करूँगा।

सधन्यवाद,
आपका आज्ञाकारी शष्य
मयंक मौर्य
दसवीं 'ब', अनुक्रमांक-28
28 जनवरी, 20XX

३- आप दसवीं कक्षा में पढ़ने वाली मानसी शर्मा है। आपकी बड़ी बहन का ववाह पड़ने के कारण आप वद्यालय नहीं जा सकेंगी। इस संबंध में चार दिन के अवकाश हेतु अपने वद्यालय की प्रधानाचार्या को प्रार्थना पत्र लखए।

उत्तरः

सेवा में
प्रधानाचार्या महोदया
वकास भारती पब्लिक स्कूल
सेक्टर-28, रोहिणी
दिल्ली
वषय-चार दिन के अवकाश के संबंध में

महोदया

वनम्र निवेदन यह है क मैं इस वद्यालय की दसवीं कक्षा की छात्रा हूँ। मेरी बड़ी बहन का ववाह आगामी 14 फरवरी, 20XX को होना तय हुआ है। ववाहोत्सव के कारण घर में मेहमानों का आना-जाना लगा हुआ है। इससे घर में काम-काज बढ़ गया है। मुझे भी घर के कार्यों में माँ का हाथ बँटाना पड़ रहा

है। इस कारण मैं 13 फरवरी से 16 फरवरी, 20XX तक वद्यालय आने में असमर्थ हूँ। आपसे प्रार्थना है क मुझे 13 से 16 फरवरी, 20XX तक अवकाश प्रदान करने की कृपा करें। आपकी अति कृपा होगी।

सधन्यवाद,
आपका आज्ञाकारी शष्य
मयंक मौर्य
दसवीं 'ब', अनुक्रमांक-28
28 जनवरी, 20XX

४ आपके शहर में सड़कों पर आवारा पशु घूमते रहते हैं, जिससे यातायात व्यवस्था में बाधा उत्पन्न होती है। कई बार ये पशु दुर्घटनाओं का कारण बनते हैं। इन पर नियंत्रण लगाने के उददेश्य से आप कसी समाचार-पत्र के संपादक को पत्र लखए। सेवा में
संपादक महोदय
राष्ट्रीय सहारा
कैंट रोड मेरठ (उ०प्र०)
वषय-शहर में आवारा घूमते पशुओं के संबंध में

महोदय

मैं आपके सम्मानित पत्र के माध्यम से आपका ध्यान शहर की सड़कों पर आवारा घूमते पशुओं की ओर आकर्षत कराना चाहता हूँ जो आए दिन दुर्घटनाओं का कारण बनते हैं।

वगत कुछ वर्षों से हमारे शहर में आवारा पशुओं की संख्या बढ़ती जा रही है। कुछ दधए गाय और भैंसों का सुबह-शाम दूध निकालकर उन्हें खुला छोड़ देते हैं। जिससे ये जानवर कुछ खाने की लालच में इधर-उधर और सड़कों पर घूमते हैं। इससे यातायात बाधत होता है तथा कई बार ये जानवर राहगीरों को सींग मार देते हैं। इन पशुओं के कारण कई साइकल और मोटरसाइकल दुर्घटनाग्रस्त हो चुके हैं।

आपसे प्रार्थना है क आप इसे अपने समाचार-पत्र में स्थान दें ताक इन्हें खुला छोड़ने वाले ग्वालों और इन्हें पकड़ने वाले कर्मचारियों का ध्यान इस ओर जाए और वे इन पर नियंत्रण करें। .

सधन्यवाद
भवदीय
रूपेश कुमार
सी-25, लोहिया नगर,

गाजियाबाद (उ०प्र०)
12 मार्च, 20xx

*-चत्र-लेखन-

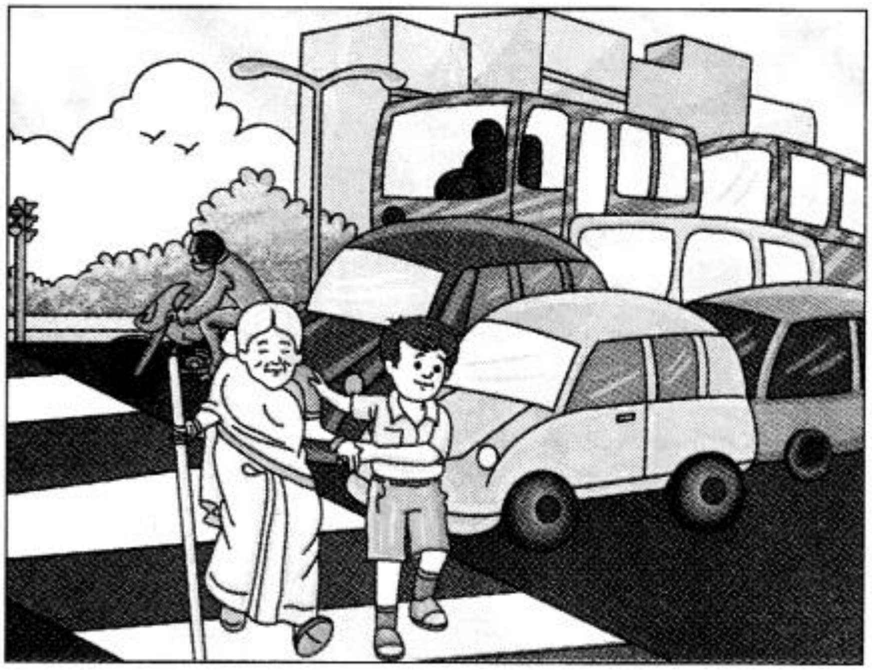

यह दृश्य कसी महानगर के चौराहे का है। लाल बत्ती होने के कारण गाड़याँ रुकी हुई हैं। फुटपाथ पर एक बच्चा एक वृद्‌ध महिला को सड़क पार करवा रहा है। एक व्यक्ति अपने स्कूटर को आधे फुटपाथ तक ले आया है यह नियम के वरुद्‌ध है यातायात के लए बनाए गए नियमों का पालन न करने से ही दुर्घटनाएँ होती हैं। कुछ लोग हरी बत्ती होने का इंतजार नहीं करते और गाड़ी दौड़ाकर ले जाते हैं। ऐसा करते समय गाड़याँ परस्पर टकरा जाती हैं और दुर्घटना हो जाती है। अतः वाहन चलाते समय यातायात के नियमों का पालन करना चाहिए।

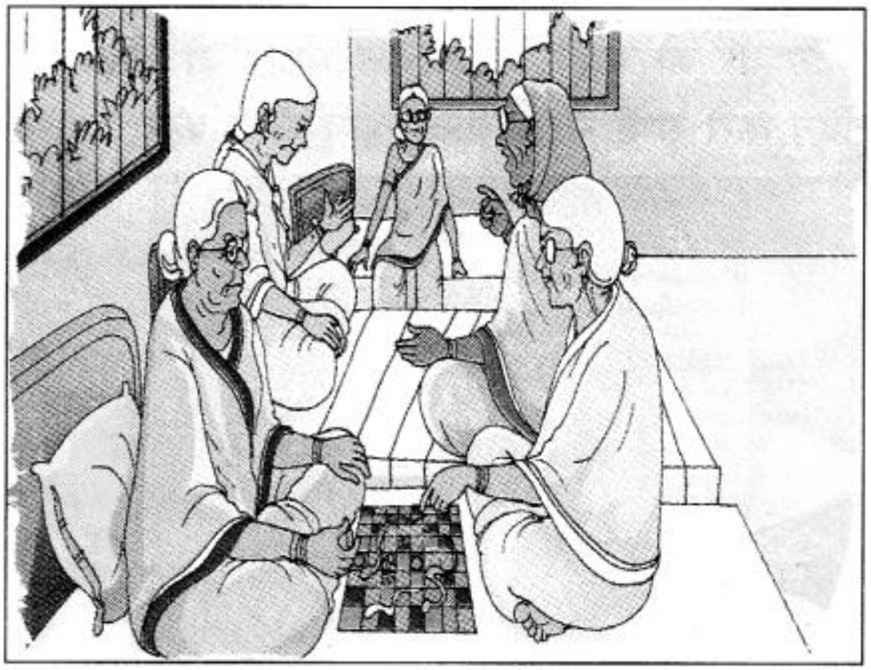

इस चत्र में एक वृद्धाश्रम का दृश्य नज़र आ रहा है। इस चत्र को देखकर हमारे समाज में फैली संवेदनहीनता की भावना उजागर हो रही है। हमारे माता-पता या बुजुर्गों जो हमारी सामाजिक व्यवस्था के स्तंभ होते हैं, उन्हें जिस समय पारिवारिक सहयोग तथा साथ की ज़रूरत होती है उस समय वृद्धाश्रमों में भेजकर आज का युवक अपनी जिम्मेदारी से मुँह मोड़ रहा है। यहाँ सभी बुजुर्ग एक-दूसरे के साथ बातें करते, सैर करते हुए, बैठकर कैरम तथा साँप-सीढ़ी जैसे खेल खेलकर अपना मनोरंजन करते हुए दिखाई दे रहे हैं। सभी के चेहरे पर दिखाई देने वाली मुस्कान बता रही है क इस पल में वे सभी प्रसन्न हैं। यदि उनकी मानसक स्थिति की बात की जाए तो निश्चित ही कहीं कसी कोने में वे अपने परिवार, अपने बच्चों की कमी अवश्य महसूस करते होंगे। लेकन मेरा यह सोचना है क आज की सामाजिक व्यवस्था को देखते हुए वृद्धों के लए इससे बेहतर और कोई जगह नहीं हो सकती जहाँ वे अपने हमउम्र के लोगों के साथ आनंदपूर्वक अपना जीवन व्यतीत कर रहे हैं।

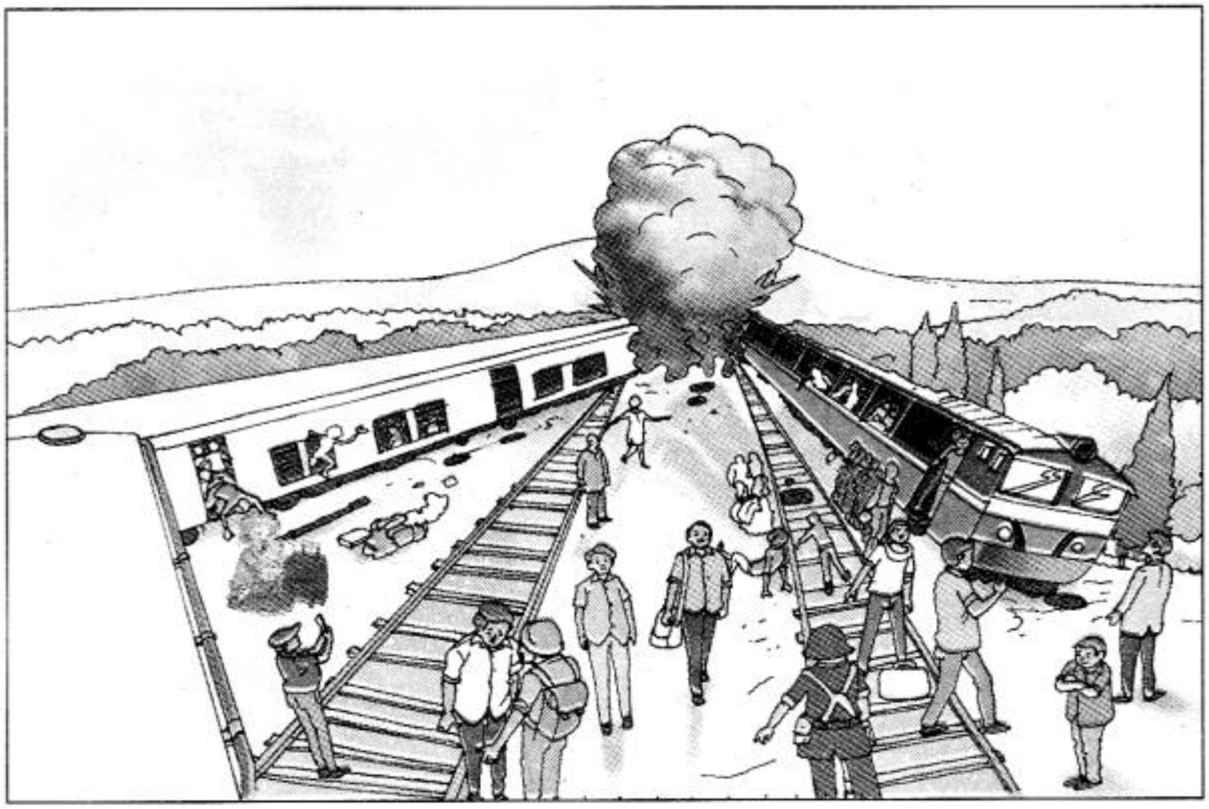

इस हृदय वदारक दृश्य को देखकर रोम-रोम सहर उठता है। रेल दुर्घटना में इंजन सहित चार डब्बे पटरी से उतर गए हैं। जिस दूसरी ट्रेन से वह टकराई है उसके भी दो डब्बे क्षतिग्रस्त हो गए हैं। चारों ओर अफरा-तफरी का माहौल है। लोगों की चीख-पुकार से सारा वातावरण गूंज उठा है। सभी लोग असमंजस की स्थिति में नज़र आ रहे हैं। कुछ यात्री अपने साथ के यात्रियों की सहायता में जुटे हुए हैं। सेना के जवान भी लोगों की सहायता के लए अपनी पूरी शक्ति लगा रहे हैं। एक बच्चा अपने मृत माँ के पास बैठा रो रहा है। उस बच्चे के रोने को देख आस-पास के लोगों के हृदय भी पीडा से भर गए हैं। ऐसा लगता है क यह आपदा प्रकति के प्रकोप की नहीं बल्कि मानवीय भल का परिणाम है। ऐसी दुर्घटनाओं को सावधान रहकर रोका जा सकता है। काश! मनुष्य अपनी लापरवाही को थोड़ी लगाम देना सीख जाए।

==

पाठ 12 ततााँरा वामीरो कथा

लेखक लीलाधर मंडलोई -

जन्म -1954 (छिंदवाड़ा –गुढ़ी)

पाठ सार

प्रस्तुत पाठ 'ततााँरा वामीरो कथा' अंडमान निकोबार द्वीप समूह के एक छोटे से द्वीप पर केंद्रित है। उस द्वीप पर एक -दूसरे से शत्रुता का भाव अपनी अंतिम सीमा पर पहुँच चूका था। इस शत्रुता की भावना को जड़ से उखाड़ने के लए एक जोड़े को आत्मब लदान देना पड़ा था। उसी जोड़े के ब लदान का वर्णन लेखक ने प्रस्तुत पाठ में कया है।

बहुत समय पहले ,जब लटिल अंदमान और कार -निकोबार एक साथ जुड़े हुए थे ,तब वहाँ एक बहुत सुंदर गाँव हुआ करता था। उसी गाँव के पास में ही एक सुंदर और शक्तिशाली युवक रहा करता था। जिसका नाम ततााँरा था। निकोबार के सभी व्यक्ति उससे बहुत प्यार करते थे। इसका एक कारण था क ततााँरा एक भला और सबकी मदद करने वाला व्यक्ति था।जब भी कोई मुसीबत में होता तो हर कोई उसी को याद करता था और वह भी भागा -भागा वहाँ उनकी मदद करने के लए पहुँच जाता था।

ततााँरा हमेशा अपनी पारम्परिक पोशाक ही पहनता था और हमेशा अपनी कमर में एक लकड़ी की तलवार को बाँधे रखता था। लोगों का मानना था क उस तलवार में लकड़ी की होने के बावजूद भी अनोखी दैवीय शक्तियाँ हैं। ततााँरा कभी भी अपनी तलवार को अपने से अलग नहीं करता था। वह दूसरों के सामने तलवार का प्रयोग भी नहीं करता था। ततााँरा की तलवार जिज्ञासा पैदा करने वाला एक ऐसा राज था जिसको कोई नहीं जानता था।

एक शाम को ततााँरा दिन भर की कठोर मेहनत करने के बाद समुद्र के कनारे घूमने के लए चल पड़ा।समुद्र से ठंडी ठंडी हवाएँ आ रही थी। शाम के समय प क्षयों की जो चहचहाहटें होती हैं वे भी धीरे -धीरे शांत हो रही थी। अपने ही वचारों में खोया हुआ ततााँरा समुद्री बालू पर बैठ कर सूरज की आखरी करणों को समुद्र के पानी पर देख रहा था जो बहुत रंग -बिरंगी लग रही थी। तभी कहीं से उसे मधुर संगीत सुनाई दिया जो उसी के आस पास कोई गा रहा था।ततााँरा बैचेन मन से उस दिशा की ओर बढ़ता गया। आ खरकार ततााँरा की नज़र एक युवती पर पड़ी उस युवती को यह पता नहीं था क कोई युवक उसे बिना कुछ बोले बस देखता जा रहा है। उसी समय अचानक एक ऊँची लहर उठी और उसको भगो कर चली गई। इस तरह अचानक

भीगने से वह युवती हड़बड़ा गई और अपना गाना भूल गई। तताँरा ने बहुत ही वनम्र तरीके से उस युवती से पूछा 'तुमने अचानक इतना सुरीला और अच्छा गाना अधूरा ही क्यों छोड़ दिया ?'

अपने सामने एक सुंदर युवक को देख कर वह युवती आश्चर्यच कत हो गई।उसने नकली नाराजगी दिखाते हुए उत्तर दिया।

"पहले ये बताओ क तुम कौन हो,मुझे इस तरह क्यों देख रहे हो और इस तरह के अनु चत या बेकार के प्रश्न पूछने का क्या कारण है ?"

तताँरा बार- बार अपना प्रश्न दोहराता रहा। तताँरा के बार - बार एक ही प्रश्न को दोहराने के कारण युवती चढ़ गई। युवती ने कहा -आ खर मैं गीत क्यों गाऊं अर्थात मैं तुम्हारी बात क्यों मानूं ?क्या उसे गाँव का नियम नहीं मालूम क एक गाँव का व्यक्ति दूसरे गाँव के व्यक्ति से बात नहीं कर सकता ? इतना कह कर वह युवती जाने के लए तेज़ी से मुड़ी। उसके मुड़ते ही मानो तताँरा को कुछ होश आया। अब उसे अपनी गलती का एहसास हो रहा था। तताँरा उस युवती के सामने चला गया और उसका रास्ता रोक कर लाचारी के साथ प्रार्थना करने लगा क तुम बस अपना नाम बता दो मैं तुम्हें जाने दूंगा। तताँरा द्वारा नाम पूछे जाने पर युवती ने जवाब दिया " वामीरो " यह नाम सुनना तताँरा को ऐसा लगा जैसे उसके कानों में कसी ने रस घोल दिया हो। तताँरा ने वामीरो से कहा क कल वह वही चट्टान पर उसकी प्रतीक्षा करेगा । वह वामीरो को जरूर आने के लए कहता है।

वामीरो ने तताँरा के बारे में बहुत सी कहानियाँ सुनी थी। उसकी सोच में तताँरा एक बहुत ही शक्तिशाली युवक था। परन्तु वही तताँरा जब वामीरो के सामने आया तो बिलकुल अलग ही रूप में था। वह सुंदर और शक्तिशाली तो था ही साथ ही साथ वह बहुत शांत ,समझदार और सीधा साधा था। वह बिलकुल वैसा ही था जैसा वामीरो अपने जीवन साथी के बारे में सोचती थी। परन्तु दूसरे गाँव के युवक के साथ उसका सम्बन्ध रीति रिवाजों के वरुद्ध था। इस लए वामीरो ने तताँरा को भूल जाना ही समझदारी समझा। परन्तु यह आसान नहीं लग रहा था क्यो क तताँरा बार -बार उसकी आँखों के सामने आ रहा था जैसे वह बिना पलकों को झपकाए उसकी प्रतीक्षा कर रहा हो।

तताँरा दिन ढलने से बहुत पहले ही लपाती गाँव की उस समुद्री चट्टान पर पहुँच गया था जहाँ उसने वामीरो को आने के लए कहा था। वामीरो के इन्तजार में उसे हर एक पल बहुत अ धक लम्बा लग रहा था। उसके अंदर एक शक भी पैदा हो गया था क अगर वामीरो आई ही नहीं

तो।उसके पास प्रतीक्षा करने के अलावा और कोई चारा नहीं था। वामीरो तताँरा से मलने आए गई।

तताँरा और वामीरो अब हर रोज उसी जगह मलने लगे। लपाती के कुछ युवकों को इस प्रेम के बारे में पता चल गया और ये खबर हवा की तरह हर जगह फैल गई। वामीरो लपाती गाँव की रहने वाली थी और तताँरा पासा गाँव का। दोनों का सम्बन्ध कसी भी तरह संभव नहीं था। क्यों क रीतिरिवाज़ के अनुसार दोनों के सम्बन्ध के लए दोनों का एक ही गाँव का होना जरुरी था।

कुछ समय के बाद पासा गाँव में 'पशु पर्व 'का आयोजन कया गया। पशु पर्व में हटे -कटे पशुओं के दिखावे के अलावा पशुओं से युवकों की शक्ति परखने की प्रतियो गतायें भी होती थी। तताँरा का मन इन में से कसी भी कार्यक्रम में नहीं लग रहा था। उसकी परेशान आँखे तो वामीरों को ढूंढने में व्यस्त थी।जब तताँरा ने वामीरो को देखा तो उसकी आँखें नमी से भरी थी और उसके होंठ डर कर काँप रहे थे। तताँरा को देखते ही वामीरो फुट -फुटकर रोने लगी। तताँरा इस तरह वामीरो को रोता देखकर भावुक हो गया। वामीरो के रोने की आवाज सुनकर वामीरो की माँ वहाँ आ गई और दोनों को एक साथ देख कर गुस्सा हो गई। उसने तताँरा को कई तरह से अपमानित करना शुरू कर दिया। गाँव वाले भी तताँरा के वरोध में बोलने लगे। लोगो की बातों को सुनना अब ततांरा के लए सहन कर पाना मुश्किल हो रहा था।अचानक उसका हाथ उसकी तलवार पर आकर टिक गया। गुस्से से उसने तलवार निकली। उसने अपने गुस्से को शांत करने के लए अपनी पूरी शक्ति से तलवार को धरती में गाड़ दिया और अपनी पूरी ताकत से उसे खींचने लगा ।जो लकीर ततांरा ने खींची थी उस लकीर की सीध में धरती फटती जा रही थी।ततांरा द्वीप के एक ओर था और वामीरो दूसरी ओर। ततांरा को जैसे ही होश आया ,उसने देखा क द्वीप के जिस ओर वह है वो टुकड़ा समुद्र में धँसने लगा है। अब वह तड़पने लगा, वह छलांग लगा कर दूसरी ओर जाना चाहता था परन्तु उसकी पकड़ ढीली पड़ गई और वह निचे की ओर फसलने लगा।वह उस कटे हुए द्वीप के उस आखरी भू -भाग पर बेहोश पड़ा हुआ था जो संयोगवश उस द्वीप से जुड़ा हुआ था। बहता हुआ ततांरा कहा गया ,उसके बाद उसका क्या हुआ ये कोई नहीं जान सका। इधर वामीरो ततांरा से अलग होने के कारण पागल हो गई। वह हर समय बस ततांरा को ही खोजती रहती और उसी जगह आकर घंटों बैठी रहती जहाँ वो ततांरा से मलने आया करती थी। उसने खाना -पीना छोड़ दिया था। परिवार से वह कही अलग हो गई। लोगो ने उसे ढूंढने की बहुत को शश की परन्तु अब वामीरो का भी कोई सुराग नहीं मला क वह कहा गई।

आज ना तो तताँरा है और ना ही वामीरो है,परन्तु फर भी आज उनकी प्रेमकथा हर घर में सुनाई जाती है। निकोबार के निवा सयों का मानना है क ततााँरा की तलवार से कार -निकोबार के जो दो टुकड़े हुए, उसमे से दूसरा टुकड़ा आज लटिल अंदमान के नाम से प्र सद्ध है जो कार -निकोबार से 96 क.मी. दूर स्थित है।निकोबार निवासीयों ने इस घटना के बाद अपनी परम्परा को बदला और दूसरे गाँव में भी ववाह सम्बन्ध बनने लगे। ततााँरा - वामीरो की जो एक -दूसरे के लए त्यागमयी मृत्यु थी वह शायद इसी सुखद बदलाव के लए थी।

*-बहुवैकल्पिक-प्रश्नोत्तर-

Q1- तताँरा वामीरो कथा के लेखक कौन हैं ?

A) श्री लीलाधर मंडलोई

B) श्री प्रेम चंद

C) प्रहलाद अग्रवाल

D) कोई नहीं

Q2- श्री लीलाधर का जन्म कब हुआ ?

A) १९५४ में

B) १९४५ में

C) १९६४ में

D) कोई नहीं

Q3- इनका जन्म कहाँ हुआ ?

A) छिंदवाड़ा के गांव गुड़ी में

B) भोपाल में

C) रायपुर में

D) कोई नहीं

Q4- मंडलोई जी ने कौन सी शैली प्रयोग की है ?

A) व्यवहारात्मक

B) उपमायुक्त

C) वर्णात्मक और संवेदात्मक

D) कोई नहीं

Q5- कस के प्रयोग से मंडलोई जी की भाषा प्रभावशाली हो गई है ?

A) लोक कथा से

B) गीतों से

C) मुहावरों के प्रयोग से

D) कोई नहीं

Q6- लीलाधर मंडलोई कस प्रकार का लेखन लखते हैं?

A) लेख

B) कहानी

C) क वता

D) गीत

Q7- इनके द्वारा अंडमान निकोबार द्वीप समूह पर लखा गद्य कसका अध्यन है ?

A) समाज शास्त्र का

B) अर्थ शास्त्र का

C) राजनीती का

D) भूगोल का

Q8- मंडलोई जी की क वताये कस से संबन्धित हैं ?

A) छत्तीसगढ़ अंचल से

B) मध्यप्रदेश भोपाल से

C) रायपुर से

D) उत्तराखंड से

Q9- मंडलोई जी की प्रमुख रचनाओं के नाम बताएं |

A) घर घर घूमा

B) रात बिरात

C) देखा अनदेखा और कला पानी

D) सभी

Q10- तताँरा वामीरो कथा कस पर आधारित है ?

A) अंडमान निकोबार द्वीप समूह की लोक कथा पर

B) मुहावरों पर

c) लोक गीतों पर

D) कसी पर नहीं

*-निम्न ल खत प्रश्नों के उत्तर एक-दो पंक्तियों में दीजिए-

प्रश्न 1.तताँरा-वामीरो कहाँ की कथा है?

प्रश्न 2.वामीरो अपना गाना क्यों भूल गई?
उत्तर-वामीरो मंत्रमुग्ध होकर गाना गा रही थी क एकाएक समुद्र की एक ऊँची लहर ने उसे भगो दिया था। वह हड़बड़ाकर उठ । बैठी। ऐसी स्थिति में उसने गाना बंद कर दिया था।
प्रश्न 3.तताँरा ने वामीरो से क्या याचना की?
उत्तर-तताँरा ने वामीरो से अगले दिन उसी स्थान पर उससे मलने की याचना की। इससे पूर्व उसने एक और याचना की क वह अपना अधूरा गाना पूरा करे।

प्रश्न 4.तताँरा और वामीरो के गाँव की क्या रीति थी?
उत्तर-तताँरा और वामीरो के गाँव की रीति थी क वहाँ के निवासी केवल अपने गाँववालों के साथ ही ववाह कर सकते थे। गाँव के बाहर के कसी लड़के या लड़की से ववाह करना अनुचत माना जाता था।

प्रश्न 5.क्रोध में तताँरा ने क्या कया?
उत्तर-गाँववालों और वामीरो की माँ द्वारा अपमानित होने के बाद तताँरा के क्रोध का ठिकाना न रहा। क्रोध में ही उसने अपनी तलवार निकालकर उसे पूरी शक्ति से धरती में घोंप दिया और पूरी ताकत से खींचने लगा, जिससे धरती में सीधी दरार आ गई और धरती दो टुकड़ों में बँट गई।

(क) निम्नलखत प्रश्नों के उत्तर (25-30 शब्दों में) लखए-

प्रश्न 1.तताँरा की तलवार के बारे में लोगों का क्या मत था?
उत्तर-तताँरा की तलवार के बारे में लोगों का यह मत था क लकड़ी की होने के बावजूद उस तलवार में अद्भुत दैवीय शक्ति थी। वह अपनी तलवार को अपने से कभी भी अलग न होने देता था और दूसरों के सामने उसका उपयोग नहीं करता था।

प्रश्न 2.वामीरो ने तताँरा को बेरुखी से क्या जवाब दिया?
उत्तर-वामीरो ने तताँरा को बेरुखी से जवाब दिया क वह उसके कहने पर गाना क्यों गाए? वह पहले उसे बताए क वह कौन है? वह उससे असंगत प्रश्न क्यों कर रहा है? वह उसे घूर क्यों रहा है? वह अपने गाँव के पुरुष के अलावा कसी अन्य को जवाब देने को ववश नहीं है।

प्रश्न 3.तताँरा-वामीरो की त्यागमयी मृत्यु से निकोबार में क्या परिवर्तन आया?
उत्तर-तताँरा-वामीरो की त्यागमयी मृत्यु से निकोबार में यह परिवर्तन आया क वहाँ लोग अब दूसरे गाँवों से भी वैवाहिक संबंध स्थापत करने लगे। दोनों की त्यागमयी मृत्यु ने लोगों की वचारधारा में एक सुखद तथा अद्भुत परिवर्तन ला दिया तथा उनकी रूढ़िवादी परंपराएँ भी परिवर्तित हो गईं।

प्रश्न 4.निकोबार के लोग तताँरा को क्यों पसंद करते थे?
उत्तर-निकोबार के लोग तताँरा को उसके साहसी और परोपकारी स्वभाव के कारण पसंद करते थे। वह सदैव दूसरों की सहायता करने में वश्वास रखता था और समूचे दूद्वीपवासयों की सेवा करना अपना कर्तव्य समझता था।

(ख) निम्नलखत प्रश्नों के उत्तर (50-60 शब्दों में) लखए-

प्रश्न 1.निकोबार द्वीप समूह के वभक्त होने के बारे में निकोबारियों का क्या वश्वास है?
उत्तर-निकोबार द्वीपसमूह के वभक्त होने के बारे में निकोबारियों का यह वश्वास है क प्राचीन काल में ये दोनों द्वीप एक ही थे। इनके वभक्त होने में तताँरा और वामीरो की प्रेम-कथा की त्यागमयी मृत्यु है, जो एक सुखद परिवर्तन के लए थी।

प्रश्न 2.तताँरा खूब परिश्रम करने के बाद कहाँ गया? वहाँ के प्राकृतिक सौंदर्य का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।
उत्तर-तताँरा खूब परिश्रम करने के बाद समुद्र के कनारे टहलने गया था। संध्या का समय था। उस समय क्षतिज पर सूरज डूबने को था। ठंडी हवाएँ चल रही थीं। पक्षयों की चहचहाहट से वातावरण गूंज रहा था। सूरज की अंतिम रंग-बिरंगी करणें, पानी में घुलकर अद्भुत स्वर्गक सौंदर्य की रचना कर रही थीं।

प्रश्न 3.वामीरो से मलने के बाद तताँरा के जीवन में क्या परिवर्तन आया?
उत्तर-वामीरो से मलने के बाद तताँरा के जीवन में अद्भुत परिवर्तन आया। वह वामीरो से मलकर सम्मोहित-सा हो गया।
उसके शांत जीवन में हलचल मच गई। वह स्वयं को रोमांचत अनुभव कर रहा था। वह वामीरो की

प्रतीक्षा में दिन बिताने लगा। प्रतीक्षा का एक-एक पल उसे पहाड़ की तरह भारी प्रतीत होता था। वह हमेशा अनिर्णय की स्थिति में रहता था क दामीरो उससे मलने आएगी या नहीं अर्थात् उसके मन में आशंका-सी बनी रहती थी।

प्रश्न 4.प्राचीन काल में मनोरंजन और शक्ति-प्रदर्शन के लए कस प्रकार के आयोजन कए जाते थे?
उत्तर-प्राचीन काल में मनोरंजन और शक्ति प्रदर्शन के लए अनेक प्रकार के आयोजन कए जाते थे। पशु-पर्व, कुश्ती, दंगल तथा मेलों का आयोजन कया जाता था। पशु-पर्व में हृष्ट-पुष्ट पशुओं का प्रदर्शन होता था। युवकों की शक्ति-परीक्षा के लए उन्हें पशुओं से भड़ाया जाता था। इसमें सभी लोग हिस्सा लेते थे। पासा गाँव में वर्ष में एक ऐसा मेला होता था जिसमें सभी गाँवों के लोग इकट्ठे होते थे। उसमें नृत्य-संगीत और भोजन का भी प्रबंध होता था।

प्रश्न 5.रूढ़ियाँ जब बंधन बन बोझ बनने लगें तब उनका टूट जाना ही अच्छा है। क्यों? स्पष्ट कीजिए।
उत्तर-रूढ़ियाँ जब बंधन बन बोझ बनने लगें, तब वास्तव में उनका टूट जाना ही उचत है तथा इनमें परिवर्तन करना श्रेयस्कर होता है, क्योंक रूढ़ियाँ व्यक्ति को बंधनों में जकड़ लेती हैं, जिससे व्यक्ति का वकास होना बंद हो जाता है। इनके टूट जाने से व्यक्ति के दिलो-दिमाग पर छाया बोझ हट जाता है। व्यक्ति की उन्नति तथा स्वतंत्रता हेतु इन रूढ़ियों को तोड़ देना चाहिए, नहीं तो ये हमारी उन्नति में बाधक बनकर खड़ी रहेंगी।

(ग) निम्नलखत के आशय स्पष्ट कीजिए-

प्रश्न 1.जब कोई राह न सूझी तो क्रोध का शमन करने के लए उसने शक्ति भर उसे धरती में घोंप दिया और ताकत से उसे खींचने लगा।
उत्तर-इसका आशय है क गाँववालों और वामीरो की माँ दुवारा अपमानित होने के बाद तताँरा के क्रोध का ठिकाना न रहा। क्रोध में ही उसने अपनी तलवार निकालकर उसे पूरी शक्ति से धरती में घोंप दिया और पूरी ताकत से खींचने लगा, जिससे धरती में सीधी दरार आ गई और धरती दो टुकड़ों में बँट गई।

प्रश्न 2.बस आस की एक करण थी जो समुद्र की देह पर डूबती करणों की तरह कभी भी डूब सकती थी।
उत्तर-तताँरा वामीरो को पहली ही नज़र में बेहद प्रेम करने लगा था। वह उसकी प्रतीक्षा में अपने जीवन की संपूर्ण आस लगाए बैठा था। उसने उसे पुनः साँझ को समुद्री चट्टान पर आने के लए कहा था। अतः वह छटपटाते हुए अधीरता से उसकी प्रतीक्षा कर रहा था। उसके मन में एक आशंका यह भी थी क कहीं वामीरो न आए। इस आशंका से उसका मन काँप उठता था, परंतु साथ ही एक आशा की करण भी थी।

पद्य-पाठ-४- मनुष्यता

क व - मै थलीशरण गुप्त

जन्म - 1886(चरगाँव)

मृत्यु – 1964

मनुष्यता पाठ सार

इस क वता में क व मनुष्यता का सही अर्थ समझाने का प्रयास कर रहा है। पहले भाग में क व कहता है क मृत्यु से नहीं डरना चाहिए क्यों क मृत्यु तो निश्चित है पर हमें ऐसा कुछ करना चाहिए क लोग हमें मृत्यु के बाद भी याद रखें। असली मनुष्य वही है जो दूसरों के लए जीना व मरना सीख ले। दूसरे भाग में क व कहता है क हमें उदार बनना चाहिए क्यों क उदार मनुष्यों का हर जगह गुण गान होता है। मनुष्य वही कहलाता है जो दूसरों की चंता करे। तीसरे भाग में क व कहता है क पुराणों में उन लोगों के बहुत उदाहरण हैं जिन्हे उनकी त्याग भाव के लए आज भी याद कया जाता है। सच्चा मनुष्य वही है जो त्याग भाव जान ले। चौथे भाग में क व कहता है क मनुष्यों के मन में दया और करुणा का भाव होना चाहिए, मनुष्य वही कहलाता है जो दूसरों के लए मरता और जीता है। पांचवें भाग में क व कहना चाहता है क यहाँ कोई अनाथ नहीं है क्यों क हम सब उस एक ईश्वर की संतान हैं। हमें भेदभाव से ऊपर उठ कर सोचना चाहिए।छठे भाग में क व कहना चाहता है क हमें दयालु बनना चाहिए क्यों क दयालु और परोपकारी मनुष्यों का देवता भी स्वागत करते हैं। अतः हमें दूसरों का परोपकार व कल्याण करना चाहिए।सातवें भाग में क व कहता है क मनुष्यों के बाहरी कर्म अलग अलग हो परन्तु हमारे वेद साक्षी है की सभी की आत्मा एक है ,हम सब एक ही ईश्वर की संतान है अतः सभी मनुष्य भाई -बंधु हैं और मनुष्य वही है जो दुःख में दूसरे मनुष्यों के काम आये।अंतिम भाग में क व कहना चाहता है क वप त्त और वघ्न को हटाते हुए मनुष्य को अपने चुने हुए रास्तों पर चलना चाहिए ,आपसी समझ को बनाये रखना चाहिए और भेदभाव को नहीं बढ़ाना चाहिए ऐसी सोच वाला मनुष्य ही अपना और दूसरों का कल्याण और उद्धार कर सकता है|

*मनुष्यता की पाठ व्याख्या-

वचार लो क मर्त्य हो न मृत्यु से डरो कभी,
मरो, परंतु यों मरो क याद जो करें सभी।
हुई न यों सुमृत्यु तो वृथा मरे, वृथा जिए,
मरा नहीं वही क जो जिया न आपके लए।
वही पशु- प्रवृति है क आप आप ही चरे,
वही मनुष्य है क जो मनुष्य के लए मरे।।

प्रसंग -: प्रस्तुत क वता हमारी पाठ्य पुस्तक 'स्पर्श भाग -2 ' से ली गई है। इसके क व मै थलीशरण गुप्त हैं। इन पंक्तिओं में क व बताना चाहता है क मनुष्यों को कैसा जीवन जीना चाहिए।

व्याख्या -: क व कहता है क हमें यह जान लेना चाहिए क मृत्यु का होना निश्चित है, हमें मृत्यु से नहीं डरना चाहिए। क व कहता है क हमें कुछ ऐसा करना चाहिए क लोग हमें मरने के बाद भी याद रखे। जो मनुष्य दूसरों के लए कुछ भी ना कर सकें, उनका जीना और मरना दोनों बेकार है । मर कर भी वह मनुष्य कभी नहीं मरता जो अपने लए नहीं दूसरों के लए जीता है, क्यों क अपने लए तो जानवर भी जीते हैं। क व के अनुसार मनुष्य वही है जो दूसरे मनुष्यों के लए मरे अर्थात जो मनुष्य दूसरों की चंता करे वही असली मनुष्य कहलाता है।

उसी उदार की कथा सरस्वती बखानती,
उसी उदार से धरा कृतार्थ भाव मानती।
उसी उदार की सदा सजीव कीर्ति कूजती;
तथा उसी उदार को समस्त सृष्टि पूजती।
अखंड आत्म भाव जो असीम वश्व में भरे,
वही मनुष्य है क जो मनुष्य के लए मरे।।

प्रसंग -: प्रस्तुत क वता हमारी पाठ्य पुस्तक 'स्पर्श भाग -2 ' से ली गई है। इसके क व मै थलीशरण गुप्त हैं। इन पंक्तिओं में क व बताना चाहता है क जो मनुष्य दूसरों के लए जीते हैं उनका गुणगान युगों - युगों तक कया जाता है।

व्याख्या -: क व कहता है क जो मनुष्य अपने पूरे जीवन में दूसरों की चंता करता है उस महान व्यक्ति की कथा का गुण गान सरस्वती अर्थात पुस्तकों में कया जाता है। पूरी धरती उस महान व्यक्ति की आभारी रहती है। उस व्यक्ति की बातचीत हमेशा जी वत व्यक्ति की तरह की

जाती है और पूरी सृष्टि उसकी पूजा करती है। क व कहता है क जो व्यक्ति पुरे संसार को अखण्ड भाव और भाईचारे की भावना में बाँधता है वह व्यक्ति सही मायने में मनुष्य कहलाने योग्य होता है|

क्षुधार्त रंतिदेव ने दिया करस्थ थाल भी,
तथा दधी च ने दिया परार्थ अस्थिजाल भी।
उशीनर क्षतीश ने स्वमांस दान भी कया,
सहर्ष वीर कर्ण ने शरीर-चर्म भी दिया।
अनित्य देह के लए अनादि जीव क्या डरे?
वही मनुष्य है क जो मनुष्य के लए मरे।।

प्रसंग -: प्रस्तुत क वता हमारी पाठ्य पुस्तक 'स्पर्श भाग -2 ' से ली गई है। इसके क व मै थलीशरण गुप्त हैं। इन पंक्तिओं में क व ने महान पुरुषों के उदाहरण दिए हैं जिनकी महानता के कारण उन्हें याद कया जाता है।

व्याख्या -: क व कहता है क पौरा णक कथाएं ऐसे व्यक्तिओं के उदाहरणों से भरी पड़ी हैं जिन्होंने अपना पूरा जीवन दूसरों के लए त्याग दिया जिस कारण उन्हें आज तक याद कया जाता है। भूख से परेशान रतिदेव ने अपने हाथ की आखरी थाली भी दान कर दी थी और मह र्ष दधी च ने तो अपने पूरे शरीर की हड् डयाँ वज्र बनाने के लए दान कर दी थी। उशीनर देश के राजा शबि ने कबूतर की जान बचाने के लए अपना पूरा मांस दान कर दिया था। वीर कर्ण ने अपनी ख़ुशी से अपने शरीर का कवच दान कर दिया था। क व कहना चाहता है क मनुष्य इस नश्वर शरीर के लए क्यों डरता है क्यों क मनुष्य वही कहलाता है जो दूसरों के लए अपने आप को त्याग देता है|

सहानुभूति चाहिए, महा वभूति है यही;
वशीकृता सदैव है बनी हुई स्वयं मही।
वरुद्धभाव बुद्ध का दया-प्रवाह में बहा,
वनीत लोकवर्ग क्या न सामने झुका रहा ?
अहा ! वही उदार है परोपकार जो करे,
वही मनुष्य है क जो मनुष्य के लए मरे।।

प्रसंग -: प्रस्तुत क वता हमारी पाठ्य पुस्तक 'स्पर्श भाग -2 ' से ली गई है। इसके क व मै थलीशरण गुप्त हैं। इन पंक्तिओं में क व ने महात्मा बुद्ध का उदाहरण देते हुए दया ,करुणा को सबसे बड़ा धन बताया है।

व्याख्या -: क व कहता है क मनुष्यों के मन में दया व करुणा का भाव होना चाहिए ,यही सबसे बड़ा धन है। स्वयं ईश्वर भी ऐसे लोगों के साथ रहते हैं । इसका सबसे बड़ा उदाहरण महात्मा बुद्ध हैं जिनसे लोगों का दुःख नहीं देखा गया तो वे लोक कल्याण के लए दुनिया के नियमों के वरुद्ध चले गए। इसके लए क्या पूरा संसार उनके सामने नहीं झुकता अर्थात उनके दया भाव व परोपकार के कारण आज भी उनको याद कया जाता है और उनकी पूजा की जाती है। महान उस को कहा जाता है जो परोपकार करता है वही मनुष्य ,मनुष्य कहलाता है जो मनुष्यों के लए जीता है और मरता है।

रहो न भूल के कभी मदांध तुच्छ वत्त में,
सनाथ जान आपको करो न गर्व चत्त में।
अनाथ कौन है यहाँ ? त्रिलोकनाथ साथ हैं,
दयालु दीन बन्धु के बड़े वशाल हाथ हैं।
अतीव भाग्यहीन है अधीर भाव जो करे,
वही मनुष्य है क जो मनुष्य के लए मरे।।

प्रसंग -: प्रस्तुत क वता हमारी पाठ्य पुस्तक 'स्पर्श भाग -2 ' से ली गई है। इसके क व मै थलीशरण गुप्त हैं। इन पंक्तिओं में क व कहता है क सम्पति पर कभी घमण्ड नहीं करना चाहिए और कसी को अनाथ नहीं समझना चाहिए क्यों क ईश्वर सबके साथ हैं।

व्याख्या -: क व कहता है क भूल कर भी कभी संप त्त या यश पर घमंड नहीं करना चाहिए। इस बात पर कभी गर्व नहीं करना चाहिए क हमारे साथ हमारे अपनों का साथ है क्यों क क व कहता है क यहाँ कौन सा व्यक्ति अनाथ है ,उस ईश्वर का साथ सब के साथ है। वह बहुत दयावान है उसका हाथ सबके ऊपर रहता है। क व कहता है क वह व्यक्ति भाग्यहीन है जो इस प्रकार का उतावलापन रखता है क्यों क मनुष्य वही व्यक्ति कहलाता है जो इन सब चीजों से ऊपर उठ कर सोचता है|

अनंत अंतरिक्ष में अनंत देव हैं खड़े,
समक्ष ही स्वबाहु जो बढ़ा रहे बड़े-बड़े।
परस्परावलंब से उठो तथा बढ़ो सभी,
अभी अमर्त्य-अंक में अपंक हो चढ़ो सभी।

रहो न यां क एक से न काम और का सरे,
वही मनुष्य है क जो मनुष्य के लए मरे।।

प्रसंग -: प्रस्तुत क वता हमारी पाठ्य पुस्तक 'स्पर्श भाग -2 ' से ली गई है। इसके क व मै थलीशरण गुप्त हैं। इन पंक्तिओं में क व कहता है क कलंक रहित रहने व दूसरों का सहारा बनने वाले मवषयों का देवता भी स्वागत करते हैं।

व्याख्या -: क व कहता है क उस कभी न समाप्त होने वाले आकाश में असंख्य देवता खड़े हैं, जो परोपकारी व दयालु मनुष्यों का सामने से खड़े होकर अपनी भुजाओं को फैलाकर स्वागत करते हैं। इस लए दूसरों का सहारा बनो और सभी को साथ में लेकर आगे बड़ो। क व कहता है क सभी कलंक रहित हो कर देवताओं की गोद में बैठो अर्थात यदि कोई बुरा काम नहीं करोगे तो देवता तुम्हे अपनी गोद में ले लेंगे। अपने मतलब के लए नहीं जीना चाहिए अपना और दूसरों का कल्याण व उद्धार करना चाहिए क्यों क इस मरणशील संसार में मनुष्य वही है जो मनुष्यों का कल्याण करे व परोपकार करे।

'मनुष्य मात्र बन्धु हैं' यही बड़ा ववेक है,
पुराणपुरुष स्वयंभू पता प्र सद्ध एक है।
फलानुसार कर्म के अवश्य बाह्य भेद हैं,
परंतु अंतरैक्य में प्रमाणभूत वेद हैं।
अनर्थ है क बन्धु ही न बन्धु की व्यथा हरे,
वही मनुष्य है क जो मनुष्य के लए मरे।।

प्रसंग -: प्रस्तुत क वता हमारी पाठ्य पुस्तक 'स्पर्श भाग -2 ' से ली गई है। इसके क व मै थलीशरण गुप्त हैं। इन पंक्तिओं में क व कहता है क हम सब एक ईश्वर की संतान हैं। अतः हम सभी मनुष्य एक - दूसरे के भाई - बन्धु हैं।

व्याख्या -: क व कहता है क प्रत्येक मनुष्य एक दूसरे के भाई - बन्धु हैं ।यह सबसे बड़ी समझ है। पुराणों में जिसे स्वयं उत्पन्न पुरुष मना गया है, वह परमात्मा या ईश्वर हम सभी का पता है, अर्थात सभी मनुष्य उस एक ईश्वर की संतान हैं। बाहरी कारणों के फल अनुसार प्रत्येक मनुष्य के कर्म भले ही अलग अलग हों परन्तु हमारे वेद इस बात के साक्षी है क सभी की आत्मा एक है। क व कहता है क यदि भाई ही भाई के दुःख व कष्टों का नाश नहीं करेगा

तो उसका जीना व्यर्थ है क्योंक मनुष्य वही कहलाता है जो बुरे समय में दूसरे मनुष्यों के काम आता है|

चलो अभीष्ट मार्ग में सहर्ष खेलते हुए,
वप त, वघ्न जो पड़ें उन्हें ढकेलते हुए।
घटे न हेलमेल हाँ, बढ़े न भन्नता कभी,
अतर्क एक पंथ के सतर्क पंथ हों सभी।
तभी समर्थ भाव है क तारता हुआ तरे,
वही मनुष्य है क जो मनुष्य के लए मरे।।

प्रसंग -: प्रस्तुत क वता हमारी पाठ्य पुस्तक 'स्पर्श भाग -2 ' से ली गई है। इसके क व मै थलीशरण गुप्त हैं। इन पंक्तिओं में क व कहता है क यदि हम ख़ुशी से,सारे कष्टों को हटते हुए ,भेदभाव रहित रहेंगे तभी संभव है की समाज की उन्नति होगी।

व्याख्या -: क व कहता है क मनुष्यों को अपनी इच्छा से चुने हुए मार्ग में ख़ुशी ख़ुशी चलना चाहिए,रास्ते में कोई भी संकट या बाधाएं आये, उन्हें हटाते चले जाना चाहिए। मनुष्यों को यह ध्यान रखना चाहिए क आपसी समझ न बिगड़े और भेद भाव न बड़े। बिना कसी तर्क वतर्क के सभी को एक साथ ले कर आगे बढ़ना चाहिए तभी यह संभव होगा क मनुष्य दूसरों की उन्नति और कल्याण के साथ अपनी समृद् ध भी कायम करे

क)निम्न लखत प्रश्नों के उत्तर दीजिये -

प्रश्न 1 -: क व ने कैसी मृत्यु को समृत्यु कहा है?

उत्तर-: क व ने ऐसी मृत्यु को समृत्यु कहा है जिसमें मनुष्य अपने से पहले दूसरे की चंता करता है और परोपकार की राह को चुनता है जिससे उसे मरने के बाद भी याद कया जाता है।

प्रश्न 2 -: उदार व्यक्ति की पहचान कैसे हो सकती है?

उत्तर -: उदार व्यक्ति परोपकारी होता है, वह अपने से पहले दूसरों की चंता करता है और लोक कल्याण के लए अपना जीवन त्याग देता है।

प्रश्न 3 -: क व ने दधी च, कर्ण आदि महान व्यक्तिओं के उदाहरण दे कर 'मनुष्यता ' के लए क्या उदाहरण दिया है**?**

उत्तर -: क व ने दधी च, कर्ण आदि महान व्यक्तिओं के उदाहरण दे कर 'मनुष्यता ' के लए यह सन्देश दिया है क परोपकार करने वाला ही असली मनुष्य कहलाने योग्य होता है। मानवता की रक्षा के लए दधी च ने अपने शरीर की सारी अस्थियां दान कर दी थी,कर्ण ने अपनी जान की परवाह कये बिना अपना कवच दे दिया था जिस कारण उन्हें आज तक याद कया जाता है। क व इन उदाहरणों के द्वारा यह समझाना चाहता है क परोपकार ही सच्ची मनुष्यता है।

प्रश्न 4 -: क व ने कन पंक्तियों में यह व्यक्त कया है क हमें गर्व - रहित जीवन व्यतीत करना चाहिए?

उत्तर -: क व ने निम्न ल खत पंक्तियों में गर्व रहित जीवन व्यतीत करने की बात कही है-: रहो न भूल के कभी मगांध तुच्छ वत्त में,सनाथ जान आपको करो न गर्व चत्त में।अर्थात सम्पति के घमंड में कभी नहीं रहना चाहिए और न ही इस बात पर गर्व करना चाहिए क आपके पास आपके अपनों का साथ है क्यों क इस दुनिया में कोई भी अनाथ नहीं है सब उस परम पता परमेश्वर की संतान हैं।

प्रश्न 5 -: ' मनुष्य मात्र बन्धु है ' से आप क्या समझते हैं ? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर -: ' मनुष्य मात्र बन्धु है ' अर्थात हम सब मनुष्य एक ईश्वर की संतान हैं अतः हम सब भाई - बन्धु हैं। भाई -बन्धु होने के नाते हमें भाईचारे के साथ रहना चाहिए और एक दूसरे का बुरे समय में साथ देना चाहिए।

प्रश्न 6 -: क व ने सबको एक होकर चलने की प्रेरणा क्यों दी है ?

उत्तर -: क व ने सबको एक होकर चलने की प्रेरणा इस लए दी है ता क आपसी समझ न बिगड़े और न ही भेदभाव बड़े। सब एक साथ एक होकर चलेंगे तो सारी बाधाएं मट जाएगी और सबका कल्याण और समृद् ध होगी।

प्रश्न 7 -: व्यक्ति को कस तरह का जीवन व्यतीत करना चाहिए ?इस क वता के आधार पर ल खए।

उत्तर -: मनुष्य को परोपकार का जीवन जीना चाहिए ,अपने से पहले दूसरों के दुखों की चंता करनी चाहिए। केवल अपने बारे में तो जानवर भी सोचते हैं, क व के अनुसार मनुष्य वही कहलाता है जो अपने से पहले दूसरों की चंता करे।

प्रश्न 8 -: ' मनुष्यता ' क वता के द्वारा क व क्या सन्देश देना चाहता है ?

उत्तर -: 'मनुष्यता ' क वता के माध्यम से क व यह सन्देश देना चाहता है क परोपकार ही सच्ची मनुष्यता है। परोपकार ही एक ऐसा साधन है जिसके माध्यम से हम युगों तक लोगो के दिल में अपनी जगह बना सकते है और परोपकार के द्वारा ही समाज का कल्याण व समृद् ध संभव है। अतः हमें परोपकारी बनना चाहिए ता क हम सही मायने में मनुष्य कहलाये।

ख)निम्नलखत का भाव स्पष्ट कीजिये-

1)सहानुभूति चाहिए, महा वभूति है यही;
वशीकृता सदैव है बनी हुई स्वयं मही।
वरुद्धभाव बुद्ध का दया-प्रवाह में बहा,
वनीत लोकवर्ग क्या न सामने झुका रहा ?

उत्तर -: क व इन पंक्तियों में कहना चाहता है क मनुष्यों के मन में दया व करुणा का भाव होना चाहिए, यही सबसे बड़ा धन है। स्वयं ईश्वर भी ऐसे लोगों के साथ रहते हैं । इसका सबसे बड़ा उदाहरण महात्मा बुद्ध हैं जिनसे लोगों का दुःख नहीं देखा गया तो वे लोक कल्याण के लए दुनिया के नियमों के वरुद्ध चले गए। इसके लए क्या पूरा संसार उनके सामने नहीं झुकता अर्थात उनके दया भाव व परोपकार के कारण आज भी उनको याद कया जाता है और उनकी पूजा की जाती है।

2) रहो न भूल के कभी मदांघ तुच्छ वत्त में,
सनाथ जान आपको करो न गर्व चत्त में।
अनाथ कौन है यहाँ ? त्रिलोकनाथ साथ हैं,
दयालु दीन बन्धु के बड़े वशाल हाथ हैं।

उत्तर -: क व इन पंक्तियों में क व कहना चाहता है क भूल कर भी कभी संप त्त या यश पर घमंड नहीं करना चाहिए। इस बात पर कभी गर्व नहीं करना चाहिए क हमारे साथ हमारे अपनों का साथ है क्यों क क व कहता है क यहाँ कौन सा व्यक्ति अनाथ है ,उस ईश्वर का साथ सब के साथ है। वह बहुत दयावान है उसका हाथ सबके ऊपर रहता है।

3) चलो अभीष्ट मार्ग में सहर्ष खेलते हुए,
वप त्त, वघ्न जो पड़ें उन्हें ढकेलते हुए।

घटे न हेलमेल हाँ, बढ़े न भन्नता कभी,
अतर्क एक पंथ के सतर्क पंथ हों सभी।

उत्तर -: क व इन पंक्तियों में कहना चाहता है क मनुष्यों को अपनी इच्छा से चुने हुए मार्ग में ख़ुशी ख़ुशी चलना चाहिए,रास्ते में कोई भी संकट या बाधाएं आये उन्हें हटाते चले जाना चाहिए। मनुष्यों को यह ध्यान रखना चाहिए क आपसी समझ न बिगड़े और भेद भाव न बड़े। बिना कसी तर्क वतर्क के सभी को एक साथ ले कर आगे बढ़ना चाहिए तभी यह संभव होगा क मनुष्य दूसरों की उन्नति और कल्याण के साथ अपनी समृद् ध भी कायम करे।

*-बहुवैकल्पिक प्रश्नोत्तर-

Q1- मै थ ल शरण गुप्त का जनम कब और कहाँ हुआ?

A) १८८६ में झाँसी के चरगांव में
B) १८८७ में झाँसी
C) १८८९ में महोबा में में महोबा में
D) वाराणसी में

Q2- मै थ ल शरण गुप्त का कन भाषाओं पर समान अ धकार था ?

A) संस्कृत
B) बांग्ला
C) मराठी और अंग्रेजी
D) ब्रज और संस्कृत

Q3- कवी ने कन पंक्तियों में गर्व रहित जीवन जीने की सलाह दी है ?

A) सहानुभूति चाहिए, महा वभूति है यही
B) रहो न भूल के कभी मगांघ तुच्छ वत्त में,
C) सनाथ जान आपको करो न गर्व चत्त में।
D) मनुष्य मात्र बन्धु है
कोई नहीं

Q4- गुप्त जी की चरसं चत अ भलाषा क्या थी?

A) भगवान राम का कीर्तिमान

B) श्री कृष्ण का कीर्तिमान

C) अपने पता का कीर्तिमान

D) अपने माता पता का कीर्तिमान

Q5- गुप्त जी की क वताओं में कौन सी भाषा का प्रभाव है ?

A) संस्कृत

B) हिंदी

C) गुजराती

D) सभी

Q6- गुप्त जी की काव्य की कथावस्तु पाठक के सामने क्या प्रस्तुत करती है ?

A) भारत के अतीत का स्वर्ण चत्र

B) भारत के भ वष्य का स्वर्ण चत्र

C) भारत के वर्तमान का स्वर्ण चत्र

D) सभी

Q7- गुप्त जी की प्रमुख कृतियों के नाम बताये |

A) साकेत

B) यशोधरा

C) जय द्रथ वध

D) सभी

Q8- गुप्त जी के पता कौन थे ?

A) सेठ रामचरण दास

B) सेठ चरणदास

C) सेठ तरणदास

D) कोई नहीं

Q9- गुप्त जी के छोटे भाई कौन थे ?

A) सयाराम शरण

B) रामनाथ शरण

C) भरतनाथ शरण

D) कोई नहीं

Q10- इस क वता में, क व कन मनुष्यो को महान मानते हैं?

A) परोपकारी मनुष्यो को

B) अपना भला करने वाले मनुष्यो को

C) अपने रिश्ते नाटो का भला करने वालो को

D) सभी को

क)निम्नलखत प्रश्नों के उत्तर दीजिये -

प्रश्न 1 -: क व ने कैसी मृत्यु को समृत्यु कहा है?

उत्तर-: क व ने ऐसी मृत्यु को समृत्यु कहा है जिसमें मनुष्य अपने से पहले दूसरे की चंता करता है और परोपकार की राह को चुनता है जिससे उसे मरने के बाद भी याद कया जाता है।

प्रश्न 2 -: उदार व्यक्ति की पहचान कैसे हो सकती है?

उत्तर -: उदार व्यक्ति परोपकारी होता है, वह अपने से पहले दूसरों की चंता करता है और लोक कल्याण के लए अपना जीवन त्याग देता है।

प्रश्न 3 -: क व ने दधी च, कर्ण आदि महान व्यक्तिओं के उदाहरण दे कर 'मनुष्यता ' के लए क्या उदाहरण दिया है?

उत्तर -: क व ने दधी च, कर्ण आदि महान व्यक्तिओं के उदाहरण दे कर 'मनुष्यता ' के लए यह सन्देश दिया है क परोपकार करने वाला ही असली मनुष्य कहलाने योग्य होता है। मानवता की रक्षा के लए दधी च ने अपने शरीर की सारी अस्थियां दान कर दी थी,कर्ण ने अपनी जान की परवाह कये बिना अपना कवच दे दिया था जिस कारण उन्हें आज तक याद कया जाता है। क व इन उदाहरणों के द्वारा यह समझाना चाहता है क परोपकार ही सच्ची मनुष्यता है।

प्रश्न 4 -: क व ने कन पंक्तियों में यह व्यक्त कया है क हमें गर्व - रहित जीवन व्यतीत करना चाहिए?

उत्तर -: क व ने निम्न ल खत पंक्तियों में गर्व रहित जीवन व्यतीत करने की बात कही है-:
रहो न भूल के कभी मगांघ तुच्छ वत्त में,
सनाथ जान आपको करो न गर्व चत्त में।
अर्थात सम्पति के घमंड में कभी नहीं रहना चाहिए और न ही इस बात पर गर्व करना चाहिए क आपके पास आपके अपनों का साथ है क्यों क इस दुनिया में कोई भी अनाथ नहीं है सब उस परम पता परमेश्वर की संतान हैं।

प्रश्न 5 -: ' मनुष्य मात्र बन्धु है ' से आप क्या समझते हैं ? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर -: ' मनुष्य मात्र बन्धु है ' अर्थात हम सब मनुष्य एक ईश्वर की संतान हैं अतः हम सब भाई - बन्धु हैं। भाई -बन्धु होने के नाते हमें भाईचारे के साथ रहना चाहिए और एक दूसरे का बुरे समय में साथ देना चाहिए।

प्रश्न 6 -: क व ने सबको एक होकर चलने की प्रेरणा क्यों दी है ?

उत्तर -: क व ने सबको एक होकर चलने की प्रेरणा इस लए दी है ता क आपसी समझ न बिगड़े और न ही भेदभाव बड़े। सब एक साथ एक होकर चलेंगे तो सारी बाधाएं मट जाएगी और सबका कल्याण और समृद् ध होगी।

प्रश्न 7 -: व्यक्ति को कस तरह का जीवन व्यतीत करना चाहिए ?इस क वता के आधार पर ल खए।

उत्तर -: मनुष्य को परोपकार का जीवन जीना चाहिए ,अपने से पहले दूसरों के दुखों की चंता करनी चाहिए। केवल अपने बारे में तो जानवर भी सोचते हैं, क व के अनुसार मनुष्य वही कहलाता है जो अपने से पहले दूसरों की चंता करे।

प्रश्न 8 -: ' मनुष्यता ' क वता के द्वारा क व क्या सन्देश देना चाहता है ?

उत्तर -: 'मनुष्यता ' क वता के माध्यम से क व यह सन्देश देना चाहता है क परोपकार ही सच्ची मनुष्यता है। परोपकार ही एक ऐसा साधन है जिसके माध्यम से हम युगों तक लोगो के

दिल में अपनी जगह बना सकते है और परोपकार के द्वारा ही समाज का कल्याण व समृद् ध संभव है। अतः हमें परोपकारी बनना चाहिए ता क हम सही मायने में मनुष्य कहलाये।

व्याकरण-

वे शब्दांश, जो कसी शब्द के शुरू (आरंभ) में जुड़कर उसके अर्थ में परिवर्तन या वशेषता ला देते हैं, उन्हें उपसर्ग कहते हैं; जैसे उपसर्ग मूल शब्द

अति-(आ धक्य) अतिशय, अतिरेक,

अ ध-(मुख्य) अ धपति, अध्यक्ष,

अ ध-(वर) अध्ययन, अध्यापन,

अनु-(मागुन) अनुक्रम, अनुताप, अनुज,

अनु-(प्रमाणें) अनुकरण, अनुमोदन,

अप-(खालीं येणें) अपकर्ष, अपमान,

अप-(वरुद्ध होणें) अपकार, अपजय,

अ प-(आवरण) अ पधान = अच्छादन,

अ भ-(अ धक) अ भनंदन, अ भलाप,

अ भ-(जवळ) अ भमुख, अ भनय,

अ भ-(पुढें) अभ्युत्थान, अभ्युदय,

अव-(खालीं) अवगणना, अवतरण,

अव-(अभाव, वरूद्धता) अवकृपा, अवगुण,

आ-(पासून, पर्यंत) आकंठ, आजन्म,

आ-(कंचीत) आरक्त,

आ-(उलट) आगमन, आदान,

आ-(पलीकडे) आक्रमण, आकलन,

उत्-(वर) उत्कर्ष, उत्तीर्ण, उद् भज्ज,

उप-(जवळ) उपाध्यक्ष, उपदिशा,

उप-(गौण) उपग्रह, उपवेद, उपनेत्र,

दुर्, दुस्-(वाईट) दुराशा, दुरुक्ति, दुश्चिन्ह, दुष्कृत्य,

नि-(अत्यंत) निमग्न, निबंध,

नि-(नकार) निकामी, निजोर,

निर्-(अभाव) निरंजन, निराषा,

निस् (अभाव) निष्फळ, निश्चल, नि:शेष,

परा-(उलट) पराजय, पराभव,

परि-(पूर्ण) परिपाक, परिपूर्ण (व्याप्त), परि मत, परिश्रम, परिवार,

प्र-(आ धक्य) प्रकोप, प्रबल, प्र पता,

प्रति-(उलट) प्रतिकूल, प्रतिच्छाया,

प्रति-(एकेक) प्रतिदिन, प्रतिवर्ष, प्रत्येक,

व-(वशेष) वख्यात, वनंती, ववाद,

व-(अभाव) वफल, वधवा, वसंगति,

सम्-(चांगले) संस्कृत, संस्कार, संगीत,

सम्-(बरोबर) संयम, संयोग, संकीर्ण,

सु-(चांगले) सुभा षत, सुकृत, सुग्रास,

सु-(सोपें) सुगम, सुकर, स्वल्प,

सु-(अ धक) सुबो धत, सु श क्षत,

उर्दू और फ़ारसी के उपसर्ग -

उपसर्ग - अर्थ - शब्दरूप

अल - निश्चित, अन्तिम - अल वदा, अलबत्ता

कम - हीन, थोड़ा, अल्प - कम सन, कमअक्ल, कमज़ोर

खुश - श्रेष्ठता के अर्थ में - खुशबू, खुशनसीब, खुश कस्मत, खुशदिल, खुशहाल, खुश मजाज

ग़ैर - निषेध - ग़ैरहाज़िर ग़ैरकानूनी ग़ैरवाजिब ग़ैरमुम कन ग़ैरसरकारी ग़ैरमुना सब

दर - मध्य में - दरम्यान दरअसल दरहकीकत

ना - अभाव - नामुम कन नामुराद नाकामयाब नापसन्द नासमझ नालायक नाचीज़ नापाक नाकाम

फ़ी - प्रति - फ़ीसदी फ़ीआदमी

ब - से, के, में, अनुसार - बनाम बदस्तूर बमुश्किल बतकल्लुफ़

बद - बुरा - बदनाम बदमाश बद कस्मत बदबू बदहज़मी बददिमाग बदमज़ा बदहवास बददुआ बदनीयत बदकार

बर - पर, ऊपर, बाहर - बरकरार बरवक्त बरअक्स बरजमां कंठस्थ

बा - सहित - बाकायदा बाकलम बाइज्जत बाइन्साफ बामुलाहिज़ा

बिला - बिना - बिलावज़ह बिला लहाज़ बिलाशक बिलानागा

बे - बिना - बेबुनियाद बेईमान बेवक्त बेरहम बेतरह बेइज्जत बेअक्ल बेकसूर बेमानी बेशक

ला - बिना, नहीं - लापता लाजबाब लावारिस लापरवाह लाइलाज लामानी लाइल्म लाज़वाल

सर - मुख्य - सरहद सरताज सरकार सरगना

अंग्रेज़ी के उपसर्ग -

क्रम उपसर्ग अर्थ शब्द

1 सब अधीन, नीचे सब-जज सब-कमेटी, सब-इंस्पेक्टर

2 डप्टी सहायक डप्टी-कलेक्टर, डप्टी-रजिस्ट्रार, डप्टी- मनिस्टर

3 वाइस सहायक वाइसराय, वाइस-चांसलर, वाइस-प्रेसीडेंट

4 जनरल प्रधान जनरल मैनेजर, जनरल सेक्रेटरी

5 चीफ़ प्रमुख चीफ़- मनिस्टर, चीफ़-इंजीनियर, चीफ़-सेक्रेटरी

6 हेड मुख्य हेडमास्टर, हेड क्लर्क

उपसर्ग के समान प्रयुक्त संस्कृत के अव्यय -

क्रम उपसर्ग अर्थ शब्द

1 अधः नीचे अधःपतन, अधोगति, अधोमुखी, अधो ल खत

2 अंतः भीतरी अंतःकरण, अंतःपुर, अंतर्मन, अंतर्देशीय

3 अ अभाव अशोक ,अकाल, अनीति

4 चर बहुत देर चरंजीवी, चरकुमार, चरकाल, चरायु

5 पुनर् फर पुनर्जन्म, पुनर्लेखन, पुनर्जीवन

6 बहिर् बाहर बहिर्गमन, बहिष्कार

7 सत् सच्चा सज्जन, सत्कर्म, सदाचार, सत्कार्य

8 पुरा पुरातन पुरातत्त्व, पुरावृत्त

9 सम समान समकालीन, समदर्शी, समकोण, समका लक

10 सह साथ सहकार, सहपाठी, सहयोगी, सहचर

उपसर्ग : अन्य अर्थ

बुरा लक्षण या अपशगुन

वह पदार्थ जो कोई पदार्थ बनाते समय बीच में संयोगवश बन जाता या निकल आता है (बाई प्राडक्ट)। जैसे-गुड़ बनाते समय जो शीरा निकलता है, वह गुड़ का उपसर्ग है।

कसी प्रकार का उत्पात, उपद्रव या वघ्न

यो गयों की योगसाधना के बीच होने वाले वघ्न को उपसर्ग कहते हैं। ये पाँच प्रकार के बताए गए हैं : (1) प्रतिभ, (2) श्रावण, (3) दैव, (4)। मुनियों पर होनेवाले उक्त उपसर्गों के वस्तृत ववरण मलते हैं। जैन साहित्य में वशेष रूप से इनका उल्लेख रहता है क्यों क जैन धर्म के अनुसार साधना करते समय उपसर्गो का होना अनिवार्य है और केवल वे ही व्यक्ति अपनी साधना में सफल हो सकते हैं जो उक्त सभी उपसर्गों को अ वच लत रहकर झेल लें। हिंदू धर्मकथाओं में भी साधना करनेवाले व्यक्तियों को अनेक वघ्नबाधाओं का सामना करना पड़ता है कंतु वहाँ उन्हें उपसर्ग की संज्ञा यदाकदा ही गई है।

प्रत्यय

प्रत्यय (suffix) उन शब्दों को कहते हैं जो कसी अन्य शब्द के अन्त में लगाये जाते हैं। इनके लगाने से शब्द के अर्थ में भन्नता या वै शष्ट्य आ जाता है।

धन + वान = धनवान

वद्या + वान = वद्वान

उदार + ता = उदारता

पण्डित + ई = पण्डिताई

चालाक + ई = चालाकी

सफल + ता = सफलता

प्रत्यय के दो भेद हैं-

कृत् प्रत्यय

तद् धत प्रत्यय

वे प्रत्यय जो धातु में जोड़े जाते हैं, कृत प्रत्यय कहलाते हैं। कृत् प्रत्यय से बने शब्द कृदंत (कृत्+अंत) शब्द कहलाते हैं। जैसे- लेख् + अक = लेखक। यहाँ अक कृत् प्रत्यय है, तथा लेखक कृदंत शब्द है।

क्रम प्रत्यय मूल शब्दधातु उदाहरण

1 अक लेख्, पाठ्, कृ, गै लेखक, पाठक, कारक, गायक

2 अन पाल्, सह्, ने, चर् पालन, सहन, नयन, चरण

3 अना घट्, तुल्, वंद्, वद् घटना, तुलना, वन्दना, वेदना

4 अनीय मान्, रम्, दृश्, पूज्, श्रु माननीय, रमणीय, दर्शनीय, पूजनीय, श्रवणीय

5 आ सूख, भूल, जाग, पूज, इष्, भक्ष् सूखा, भूला, जागा, पूजा, इच्छा, भक्षा

6 आई लड़, सल, पढ़, चढ़ लड़ाई, सलाई, पढ़ाई, चढ़ाई

7 आन उड़, मल, दौड़ उड़ान, मलान, दौड़ान

8 इ हर, गर, दशरथ, माला हरि, गरि, दाशर थ, माली

9 इया छल, जड़, बढ़, घट छ लया, ज ड़या, बढ़िया, घटिया

10 इत पठ, व्यथा, फल, पुष्प पठित, व्य थत, फ लत, पुष्पित

11 इत्र चर्, पो, खन् चरित्र, प वत्र, खनित्र

12 इयल अड़, मर, सड़ अ ड़यल, मरियल, स ड़यल

13 ई हँस, बोल, त्यज्, रेत हँसी, बोली, त्यागी, रेती

14 उक इच्छ्, भक्ष् इच्छुक, भक्षुक

15 तव्य कृ, वच् कर्तव्य, वक्तव्य

16 ता आ, जा, बह, मर, गा आता, जाता, बहता, मरता, गाता

17 ति अ, प्री, शक्, भज अति, प्रीति, शक्ति, भक्ति

18 ते जा, खा जाते, खाते

19 त्र अन्य, सर्व, अस् अन्यत्र, सर्वत्र, अस्त्र

20 न क्रंद, वंद, मंद, खद्, बेल, ले क्रंदन, वंदन, मंदन, खन्न, बेलन, लेन

21 ना पढ़, लख, बेल, गा पढ़ना, लखना, बेलना, गाना

22 म दा, धा दाम, धाम

23 , य गद्, पद्, कृ, पं डत, पश्चात्, दंत्, ओष्ठ् गद्य, पद्य, कृत्य, पाण्डित्य, पाश्चात्य, दंत्य, ओष्ठ्य

24 या मृग, वद् मृगया, वद्या

25 रू गे गेरू

26 वाला देना, आना, पढ़ना देनेवाला, आनेवाला, पढ़नेवाला

27 ऐयावैया रख, बच, डाँटगा, खा रखैया, बचैया, डटैया, गवैया, खवैया

28 हार होना, रखना, खेवना होनहार, रखनहार, खेवनहार

वे प्रत्यय जो धातु को छोड़कर अन्य शब्दों- संज्ञा, सर्वनाम व वशेषण में जुड़ते हैं, तद्धत प्रत्यय कहलाते हैं। तद्धत प्रत्यय से बने शब्द तद्धतांत शब्द कहलाते हैं। जैसे- सेठ + आनी = सेठानी। यहाँ आनी तद्धत प्रत्यय हैं तथा सेठानी तद्धतांत शब्द है।

क्रम प्रत्यय शब्द उदाहरण

1 आइ पछताना, जगना पछताइ, जगाइ

2 आइन पण्डित, ठाकुर पण्डिताइन, ठकुराइन

3 आई पण्डित, ठाकुर, लड़, चतुर, चौड़ा पण्डिताई, ठकुराई, लड़ाई, चतुराई, चौड़ाई

4 आनी सेठ, नौकर, मथ सेठानी, नौकरानी, मथानी

5 आयत बहुत, पंच, अपना बहुतायत, पंचायत, अपनायत

6 आर/आरा लोहा, सोना, दूध, गाँव लोहार, सुनार, दूधार, गँवार

7 आहट चकना, घबरा, चल्ल, कड़वा चकनाहट, घबराहट, चल्लाहट, कड़वाहट

8 इल फेन, कूट, तन्द्र, जटा, पंक, स्वप्न, धूम फेनिल, कुटिल, तन्द्रिल, जटिल, पं कल, स्वप्निल, धू मल

9 इष्ठ कन्, वर्, गुरु, बल कनिष्ठ, वरिष्ठ, गरिष्ठ, ब लष्ठ

10 ई सुन्दर, बोल, पक्ष, खेत, ढोलक, तेल, देहात सुन्दरी, बोली, पक्षी, खेती, ढोलकी, तेली, देहाती

11 ईन ग्राम, कुल ग्रामीण, कुलीन

12 ईय भवत्, भारत, पा णनी, राष्ट्र भवदीय, भारतीय, पा णनीय, राष्ट्रीय

13 ए बच्चा, लेखा, लड़का बच्चे, लेखे, लड़के

14 एय अति थ, अत्रि, कुंती, पुरुष, राधा आतिथेय, आत्रेय, कौंतेय, पौरुषेय, राधेय

15 एल फुल, नाक फुलेल, नकेल

16 ऐत डाका, लाठी डकैत, लठैत

17 एरा/ऐरा अंध, साँप, बहुत, मामा, काँसा, लुट अँधेरा, सँपेरा, बहुतेरा, ममेरा, कसेरा, लुटेरा

18 ओला खाट, पाट, साँप खटोला, पटोला, सँपोला

19 औती बाप, ठाकुर, मान बपौती, ठकरौती, मनौती

20 औटा बिल्ला, काजर बिलौटा, कजरौटा

21 क धम, चम, बैठ, बाल, दर्श, ढोल धमक, चमक, बैठक, बालक, दर्शक, ढोलक

22 कर   वशेष, ख़ास   वशेषकर, ख़ासकर

23 का खट, झट खटका, झटका

24 जा भ्राता, दो भतीजा, दूजा

25 ड़ा, ड़ी चाम, बाछा, पंख, टाँग चमड़ा, बछड़ा, पंखड़ी, टँगड़ी

26 त रंग, संग, खप रंगत, संगत, खपत

27 तन अद्य अद्यतन

28 तर गुरु, श्रेष्ठ गुरुतर, श्रेष्ठतर

29 तः अंश, स्व अंशतः, स्वतः

30 ती कम, बढ़, चढ़ कमती, बढ़ती, चढ़ती

गद्य-पाठ-१३-तीसरी कसम

खक - प्रहलाद अग्रवाल
जन्म - 1947 (मध्य प्रदेश, जबलपुर)

पाठ सार

एक गीतकार के रूप में फ़ल्मी जगत से जुड़े रहने वाले क व और गीतकार शैलेंद्र ने जब फणीश्वर नाथ रेणु की अमर कृति 'तीसरी कसम उर्फ़ मारे गए गुलफाम' को सनेमा परदे पर उतारा तो ये फल्म मील का पत्थर सद्ध हुई अर्थात इस फल्म की जगह कोई दूसरी फल्म नहीं ले पाई। 'तीसरी कसम' को आज इस लए भी याद कया जाता है क्यों क इस फल्म को बनाने के बाद यह भी सद्ध हो गया क हिंदी फल्म जगत में एक सार्थक और उदेश्य से भरपूर फल्म को बनाना कतना कठिन और कतना जो खम भरा काम है।

'संगम' नाम की फल्म की आश्चर्यजनक सफलता के बाद फल्म के नायक राजकपूर में गहरा आत्म वश्वास आ गया जिसके कारण उन्होंने एक साथ चार फल्मों में काम करने की सार्वजनिक बात कर दी। इन्हीं फल्मों में सन 1966 में क व शैलेंद्र के द्वारा बनाई गई फल्म 'तीसरी कसम' भी शा मल है। कहा जा सकता है क 'तीसरी कसम' फल्म नहीं बल्कि क व शैलेंद्र द्वारा कैमरे की रील पर लखी गई एक क वता थी।

'तीसरी कसम' फल्म क व शैलेंद्र के जीवन की पहली और अंतिम फल्म है। इस फल्म को बहुत सारे पुरूस्कारों से सम्मानित कया गया। यह फल्म कला से परिपूर्ण थी जिसके लए इस फल्म की बहुत तारीफ़ हुई थी। इस फल्म में शैलेंद्र की भावुकता पूरी तरह से दिखाई देती है। अ भनय को देखते हुए 'तीसरी कसम' फल्म राजकपूर के द्वारा उनके जीवन में की गई सभी फल्मों में से सबसे खूबसरत फल्म मानी जाती है। राजकपूर को ए शया के सबसे बड़े शोमैन का ख़िताब हा सल था। वे अपनी आँखों से अ भनय करने और अपनी आँखों से ही भावनाओं को

दिखने में माहिर थे। इसके वपरीत शैलेंद्र एक उमदा गीतकार थे जो भावनाओं को क वता का रूप देने में माहिर थे। शैलेंद्र ने राजकपूर की भावनाओं को अपनी क वता और फल्म की कहानी में शब्द रूप दिए और राजकपूर ने भी उनको बड़ी ही खूबी से निभाया।

राजकपूर जानते थे क 'तीसरी कसम' फल्म शैलेंद्र की पहली फल्म है इस लए उन्होंने एक अच्छे और सच्चे मत्र के नाते शैलेंद्र को फल्म की असफलता के खतरों से भी परि चत करवाया। परन्तु शैलेंद्र को न तो अ धक धन-सम्पति का लालच था न ही नाम कमाने की इच्छा। उसे तो केवल अपने आप से संतोष की कामना थी। 'तीसरी कसम' चाहे आज बहुत कामयाब फल्मों में गनी जाती हो, ले कन यह एक कड़वा सच रहा है क इसे परदे पर दिखाने और प्रसारित करने के लए लोग बहुत ही मुश्किल से मले थे। इस फल्म की कहानी में जो भावनाएँ थी उनको समझना कसी मुनाफा कमाने वालों के लए आसान नहीं था। इस फल्म में जिस करुणा के साथ भावनाओं को दर्शाया गया था उनको कसी तराज़ू में नहीं तौला जा सकता था।

'श्री 420' का एक गीत - 'प्यार हुआ, इकरार हुआ है, प्यार से फर क्यूँ डरता है दिल' की एक पंक्ति -'रातें दसों दिशाओं से कहेंगी अपनी कहानियाँ", इस पंक्ति में संगीतकार जय कशन ने आप त्त जताई थी। ले कन शैलेन्द्र इस पंक्ति को बदलने के लए तैयार नहीं हुए। वे चाहते थे क दर्शकों की पसंद को ध्यान में रख कर कसी भी फल्म निर्माता को कोई भी बिना मतलब की चीज़ दर्शकों को नहीं दिखानी चाहिए। उनका मानना था क एक कलाकार का यह कर्तव्य भी है क वह दर्शकों की पसंद को अच्छा और सुंदर भी बनाने की को शश करे।

शैलेंद ने जो भी गीत लखे वे सभी बहुत पसंद कये जाते रहे है। शैलेंद्र ने कभी भी झूठे रंग-ढ़ग या दिखावे को नहीं अपनाया। उनके गीत नदी की तरह शांत तो लगते थे

परन्तु उनका अर्थ समुद्र की तरह गहरा होता था। इसी वशेषता को उन्होंने अपनी जिंदगी में भी अपनाया था और अपनी फल्म में भी इसी वशेषता को साबित कया था।

'तीसरी कसम' अगर सर्फ एकलौती नहीं तो उन कुछ सफल फल्मों में जरूर है जिन्होंने साहित्य-रचना के साथ शत-प्रतिशत न्याय कया है। 'तीसरी कसम' फल्म की यह खास बात थी क उसमें दुःख को कसी भी तरह बड़ा-चढ़ा कर प्रस्तुत नहीं कया गया था उसमे दुःख को जीवन की सही परिस्थितियों की ही भाँति प्रस्तुत कया गया था। 'तीसरी कसम' की जो मुख्य कहानी है वह खुद लेखक फणीश्वरनाथ रेणु ने लखी है। कहानी का एक छोटे-से-छोटा भाग, उसकी छोटी-से-छोटी बारी कयाँ फल्म में पूरी तरह से दिखाई देती है|

क) निम्नलखत प्रश्नों के उत्तर (25-30 शब्दों में) लखए

प्रश्न **1 -** 'तीसरी कसम' फल्म को सेल्यूलाइट पर लखी क वता क्यों कहा है **?**

उत्तर -'तीसरी कसम' फल्म को सेल्यूलाइट पर लखी क वता इस लए कहा जाता है क्यों क सेल्यूलाइट का अर्थ होता है क कहानी को हुहु कैमरे की सहायता से परदे पर उतरना -ब- और इस फल्म में हिंदी साहित्य की एक दिल को छू लेने वाली कहानी को बड़ी ही सफलता के साथ कैमरे की रील में उतार कर चल चत्र द्वारा प्रस्तुत कया गया था। इस फल्म के क वता के सभी भाग जैसेभावुकता -, संवेदना और मा र्मकता भरी हुई थी इसी लए कहा जाता है क 'तीसरी कसम' फल्म नहीं बल्कि क व शैलेंद्र द्वारा कैमरे की रील पर लखी गई एक क वता थी।

प्रश्न 2 - 'तीसरी कसम' फल्म को खरीददार क्यों नहीं मल रहे थे ?

उत्तर - 'तीसरी कसम' फल्म की कहानी में जो भावनाएँ थी उनको समझना कसी मुनाफा कमाने वालों के लए आसान नहीं था। इस फल्म में जिस करुणा के साथ भावनाओं को दर्शाया गया था उनको कसी तराज़ू में नहीं तौला जा सकता था इसी लए 'तीसरी कसम' फल्म को खरीददार नहीं मल रहे थे।

प्रश्न 3 - शैलेंद्र के अनुसार कलाकार का कर्तव्य क्या है ?

उत्तर -शैलेंद्र के अनुसार दर्शकों की पसंद को ध्यान में रख कर कसी भी फल्म निर्माता को कोई भी बिना मतलब की चीज़ दर्शकों को नहीं दिखानी चाहिए। उनका मानना था क एक कलाकार का यह कर्तव्य है क वह दर्शकों की पसंद को अच्छा और सुंदर भी बनाने की को शश करे।

प्रश्न 4 - फल्मों में त्रासद स्थितियों का चत्रांकन ग्लोरिफ़ाई क्यों कर दिया जाता है ?

उत्तर - फल्मों में अगर फल्मों में कहीं त्रासद अर्थात दुखद स्थितियों का वर्णन कया जाता है तो उसको बहुत अ धक बड़ा-चढ़ा कर प्रस्तुत कया जाता है। दुःख को इतना अ धक भयानक रूप से प्रस्तुत कया जाता है क वो लोगो को भावनात्मक रूप से कमजोर कर सके और लोग ज्यादा-से-ज्यादा फल्मों की ओर आक र्षत हो सकें।

प्रश्न 5 - 'शैलेंद ने राजकपूर की भावनाओं को शब्द दिए हैं' - इस कथन से आप क्या समझते हैं ? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर - राजकपूर को ए शया के सबसे बड़े शोमैन का ख़िताब हा सल था। वे अपनी आँखों से अ भनय करने और अपनी आँखों से ही भावनाओं को दिखने में माहिर थे। इसके वपरीत शैलेंद्र एक उमदा गीतकार थे जो भावनाओं को क वता का रूप देने में माहिर थे। शैलेंद्र ने राजकपूर

की भावनाओं को अपनी कविता और फिल्म की कहानी में शब्द रूप दिए और राजकपूर ने भी उनको बड़ी ही खूबी से निभाया।

प्रश्न 6 - लेखक ने राजकपूर को एशिया का सबसे बड़ा शोमैन कहा है। शोमैन से आप क्या समझते हैं ?
उत्तर - शोमैन का अर्थ होता है जो अपने अभिनय से लोगो को आकर्षित कर सके, अपने निभाय गए करदार से जो सबको मनोरंजित करे और अंत तक लोगो को अपने अभिनय के साथ जोड़ कर रखे। ये सारी खूबियाँ राजकपूर में कूट-कूट कर भरी थी इसीलिए लेखक ने राजकपूर को एशिया का सबसे बड़ा शोमैन कहा है।

प्रश्न 7 - 'श्री 420' के गीत - 'रातें दसों दिशाओं से कहेंगी अपनी कहानियाँ' पर संगीतकार जयकिशन ने आपत्ति क्यों की ?
उत्तर - 'श्री 420' के गीत - 'रातें दसों दिशाओं से कहेंगी अपनी कहानियाँ' पर संगीतकार जयकिशन ने आपत्ति की क्योंकि उनका मानना था कि दर्शकों को चार दिशायें तो समझ आ सकती है परन्तु दर्शक दस दिशाओं को समझने में परेशान हो सकते हैं। सामान्यतः दिशायें चार ही कही जाती हैं और संगीतकार जयकिशन भी चार दिशाओं का ही प्रयोग करना चाहते थे।

(ख) निम्नलिखित प्रशनो के उत्तर (50-60 शब्दों में) दीजिए
प्रश्न 1 - राजकपूर द्वारा फिल्म की असफलता के खतरों के आगाह करने पर भी शैलेंद्र ने यह फिल्म क्यों बनाई ?
उत्तर - राजकपूर जानते थे कि 'तीसरी कसम' फिल्म शैलेंद्र की पहली फिल्म है इसलिए उन्होंने एक अच्छे और सच्चे मित्र के नाते शैलेंद्र को फिल्म की असफलता के खतरों से भी परिचित करवाया। परन्तु शैलेंद्र तो एक सज्जन भावनाओं में बहने वाला कवि था, जिसको न तो अधिक धन-सम्पति का लालच था न ही नाम कमाने की इच्छा। उसे तो केवल अपने आप से संतोष की कामना थी। 'तीसरी कसम' की मुख्य कहानी में जो भावनाएँ थी वे शैलेंद्र के दिल को छूं गई थी और वे इस फिल्म को बनाने का मन बना चुके थे।

प्रश्न 2 - 'तीसरी कसम' में राजकपूर का महिमामय व्यक्तित्व किस तरह हिरामन की आत्मा में उतर गया। स्पष्ट कीजिए।
उत्तर - 'तीसरी कसम' फिल्म राजकपूर के फ़िल्मी जीवन में अभिनय का वह पड़ाव था, जब

राजकपूर को ए शया के सबसे बड़े शोमैन का स्थान मल चूका था। राजकपूर का अपना खुद का व्यक्तित्व ही कहावत बन चूका था, लोग उनकी मसाल देने लगे थे। ले कन 'तीसरी कसम' फल्म में राजकपूर ने अपने उस महान व्यक्तित्व को पूरी तरह से हिरामन बना दिया था। पूरी फल्म में राजकपूर कहीं पर भी हिरामन का अ भनय करते हुए नहीं दिखे, बल्कि वे तो खुद ही हिरामन बन गए थे। ऐसा हिरामन जो हीराबाई की फेनू- गलासी बोली पर प्यार दिखता है, उसकी 'मनुआ-नटुआ' जैसी भोली सूरत पर अपना सब कुछ हारने को तैयार है और हीराबाई के थोड़े से भी गुस्सा हो जाने पर आपने आप को ही दोषी ठहरता हुआ सच्चा हिरामन बन जाता है।

प्रश्न 3-लेखक ने ऐसा क्यों लखा है क तीसरी कसम ने साहित्य-रचना के साथ शत-प्रतिशत न्याय कया है ?
उत्तर - 'तीसरी कसम' फल्म फणीश्वरनाथ रेणु की पुस्तक मारे गए गुलफाम पर आधारित है। शैलेंद्र ने इस साहित्य के सभी पात्रों, भावनाओं, घटनाओं को हु-ब-हु दर्शाया है। कहानी का एक छोटे-से-छोटा भाग, उसकी छोटी-से-छोटी बारी कयाँ फल्म में पूरी तरह से दिखाई गई है। राजकपूर जानते थे क 'तीसरी कसम' फल्म शैलेंद्र की पहली फल्म है और यह एक भावनात्मक फल्म है इस लए उन्होंने एक अच्छे और सच्चे मत्र के नाते शैलेंद्र को फल्म की असफलता के खतरों से भी परि चत करवाया। परन्तु शैलेंद्र तो एक सज्जन भावनाओं में बहने वाला व्यक्ति था, जिसको न तो अ धक धन-सम्पति का लालच था न ही नाम कमाने की इच्छा। उसे तो केवल अपने आप से संतोष की कामना थी। इस फल्म की कहानी में जो भावनाएँ थी उनको समझना कसी मुनाफा कमाने वालों के लए आसान नहीं था। इस फल्म में जिस करुणा के साथ भावनाओं को दर्शाया गया था उनको कसी तराज़ू में नहीं तौला जा सकता था। शैलेंद्र ने मूल कथा को यथा रूप में प्रस्तुत कया था। इन सभी कारणों की वजह से लेखक ने लखा है क तीसरी कसम ने साहित्य-रचना के साथ शत-प्रतिशत न्याय कया है।

प्रश्न 4 - शैलेंद्र के गीतों की क्या वशेषताएँ हैं। अपने शब्दों में ल खए।
उत्तर - शैलेंद ने जो भी गीत लखे वे सभी बहुत पसंद कये जाते रहे है। शैलेंद्र ने कभी भी झूठे रंग-ढ़ग या दिखावे को नहीं अपनाया। वे अपने गीतों में भावनाओं को अ धक महत्त्व देने वाले थे न की अपने गीतों को कठिन बनाने वाले। 'मेरा जूता है जापानी, ये पतलून इंग्लिस्तानी, सर पे लाल टोपी रुसी, फर भी दिल है हिन्दुस्तानी' -यह गीत शैलेंद्र ही लख सकते थे, क्यों क इसमें सच्ची भावना झलक रही है। उनके गीत नदी की तरह शांत तो लगते थे परन्तु उनका अर्थ समुद्र की तरह गहरा होता था। उनका मानना था क एक कलाकार का यह कर्तव्य भी है क वह दर्शकों की पसंद को अच्छा और सुंदर भी बनाने की को शश करे।

प्रश्न 5 - फल्म निर्माता के रूप में शैलेंद्र की वशेषताओं पर प्रकाश डा लए ?

उत्तर - 'तीसरी कसम' फल्म शैलेंद्र की पहली और आखरी फल्म थी। शैलेन्द्र को न तो अ धक धन-सम्पति का लालच था, न ही नाम कमाने की इच्छा। उन्हें तो केवल अपने आप से संतोष की कामना थी। इस फल्म में जिस करुणा के साथ भावनाओं को दर्शाया गया था उनको कसी तराज़ू में नहीं तौला जा सकता था। शैलेंद्र ने राजकपूर और वहीदा रहमान की भावनाओं को शब्द दिए हैं। उनका मानना था क फल्म निर्माता को कोई भी बिना मतलब की चीज़ दर्शकों को नहीं दिखानी चाहिए। एक कलाकार का यह कर्तव्य भी है क वह दर्शकों की पसंद को अच्छा और सुंदर भी बनाने की को शश करे। शैलेंद ने जो भी गीत लखे वे सभी बहुत पसंद कये जाते रहे है। शैलेंद्र ने कभी भी झूठे रंग-ढ़ग या दिखावे को नहीं अपनाया। 'तीसरी कसम' फल्म फणीश्वरनाथ रेणु की पुस्तक मारे गए गुलफाम पर आधारित है। शैलेंद्र ने इस साहित्य के सभी पात्रों, भावनाओं, घटनाओं को हु-ब-हु दर्शाया है। कहानी का एक छोटे-से-छोटा भाग, उसकी छोटी-से-छोटी बारी कयाँ फल्म में पूरी तरह से दिखाई गई है।

प्रश्न 6 - शैलेन्द्र के निजी जीवन की छाप उनकी फल्म में झलकती है-कैसे ? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर - शैलेन्द्र के निजी जीवन की छाप उनकी फल्म में झलकती है। शैलेंद्र ने कभी भी झूठे रंग-ढ़ग या दिखावे को नहीं अपनाया। वे अपने गीतों में भावनाओं को अ धक महत्त्व देने वाले थे न की अपने गीतों को कठिन बनाने वाले। वे चाहते थे क दर्शकों की पसंद को ध्यान में रख कर कसी भी फल्म निर्माता को कोई भी बिना मतलब की चीज़ दर्शकों को नहीं दिखानी चाहिए। उनका मानना था क एक कलाकार का यह कर्तव्य भी है क वह दर्शकों की पसंद को अच्छा और सुंदर भी बनाने की को शश करनी चाहिए। उनके गीत नदी की तरह शांत तो लगते थे परन्तु उनका अर्थ समुद्र की तरह गहरा होता था। इसी वशेषता को उन्होंने अपनी जिंदगी में भी अपनाया था और अपनी फल्म में भी इसी वशेषता को साबित कया था।

प्रश्न 7 - लेखक के इस कथन से क 'तीसरी कसम' फल्म कोई सच्चा क व-हृदय ही बना सकता था, आप कहा तक सहमत हैं ? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर - शैलेंद्र ने ऐसी फल्म बनाई थी जिसे सर्फ एक सच्चा क व-हृदय ही बना सकता था क्यों क इतनी भावुकता केवल एक क व के हृदय में ही हो सकती है।यह फल्म कला से परिपूर्ण थी जिसके लए इस फल्म की बहुत तारीफ़ हुई थी। इस फल्म में शैलेंद्र की भावुकता पूरी तरह से दिखाई देती है। इस फल्म की कहानी में जो भावनाएँ थी उनको समझना कसी मुनाफा कमाने वालों के लए आसान नहीं था। इस फल्म में जिस करुणा के साथ भावनाओं को दर्शाया गया था उनको कसी तराज़ू में नहीं तौला जा सकता था। शैलेंद्र के द्वारा लखे गीतों

में सच्ची भावना झलकती है। उनके गीत नदी की तरह शांत तो लगते थे परन्तु उनका अर्थ समुद्र की तरह गहरा होता था। लेखक के इस कथन से क 'तीसरी कसम' फल्म कोई सच्चा क व-हृदय ही बना सकता था, हम पूरी तरह सहमत हैं।

(ग) निम्न ल खत के आशय स्पष्ट कीजिए

1 - ......वह तो एक आदर्शवादी भावुक क व था, जिसे अपार सम्पति और यश तक की इतनी कामना नहीं थी जितनी आत्म-संतुष्टि के सुख की अ भलाषा थी।

उत्तर - जब राजकपूर ने एक अच्छे और सच्चे मत्र के नाते शैलेंद्र को फल्म की असफलता के खतरों से भी परि चत करवाया। तो शैलेन्द्र ने उनकी बात नहीं म ण क्यों क शैलेन्द्र एक भावनात्मक क व था, जिसको न तो अ धक धन-सम्पति का लालच था न ही नाम कमाने की इच्छा। उसे तो केवल अपने आप से संतोष की कामना थी।

2 - उनका दृढ़ मंतव्य था क दर्शकों की रू च की आड़ में हमें उथलेपन को उन पर नहीं थोपना चाहिए। कलाकार का यह कर्तव्य भी है क वह उपभोक्ता की रु चयों का परिष्कार करने का प्रयत्न करे।

उत्तर - जब संगीतकार जय कशन ने गीत 'प्यार हुआ, इकरार हुआ है, प्यार से फर क्यूँ डरता है दिल' की एक पंक्ति 'रातें दसों दिशाओं से कहेंगी अपनी कहानियाँ' में आप त्त जताई थी,और उनका कहना था क दर्शकों को चार दिशायें तो समझ आ सकती है परन्तु दर्शक दस दिशाओं को समझने में परेशान हो सकते हैं। ले कन शैलेन्द्र इस पंक्ति को बदलने के लए तैयार नहीं हुए। वे चाहते थे क दर्शकों की पसंद को ध्यान में रख कर कसी भी फल्म निर्माता को कोई भी बिना मतलब की चीज़ दर्शकों को नहीं दिखानी चाहिए। उनका मानना था क एक कलाकार का यह कर्तव्य भी है क वह दर्शकों की पसंद को अच्छा और सुंदर भी बनाने की को शश करे।/p>

3 - व्यथा आदमी को पराजित नहीं करती, उसे आगे बढ़ने का संकेत देती है।

उत्तर - शैलेन्द्र के गीतों में सर्फ दुःख-दर्द नहीं होता था, उन दुखों से निपटने या उनका सामना करने का इशारा भी होता था। और वो सारी क्रया-प्रणाली भी मौजूद रहती थी जिसका सहारा ले कर कोई भी व्यक्ति अपनी मंजिल तक पहुँच सकता है। उनका मानना था क दुःख कभी भी इंसान को हरा नहीं सकता बल्कि हमेशा आगे बढ़ने का इशारा देता है।

4 - दरअसल इस फल्म की संवेदना कसी दो से चार बनाने का ग णत जानने वाले की समझ से परे थी।

उत्तर - 'तीसरी कसम' फल्म की कहानी में जो भावनाएँ थी उनको समझना कसी मुनाफा कमाने वालों के लए आसान नहीं था। इस फल्म में जिस करुणा के साथ भावनाओं को दर्शाया गया था उनको कसी तराज़ू में नहीं तोला जा सकता था।

5 - उनके गीत भाव-प्रणव थे-दुरूह नहीं।

उत्तर - शैलेंद ने जो भी गीत लखे, वे सभी बहुत पसंद कये जाते रहे है। शैलेंद्र ने कभी भी झूठे रंग-ढ़ग या दिखावे को नहीं अपनाया। वे अपने गीतों में भावनाओं को अ धक महत्त्व देने वाले थे न की अपने गीतों को कठिन बनाने वाले। 'मेरा जूता है जापानी, ये पतलून इंग्लिस्तानी, सर पे लाल टोपी रुसी, फर भी दिल है हिन्दुस्तानी' -यह गीत शैलेंद्र ही लख सकते थे, क्यों क इसमें सच्ची भावना झलक रही है। उनके गीत नदी की तरह शांत तो लगते थे परन्तु उनका अर्थ समुद्र की तरह गहरा होता था।

लेखन-. अपने वद्यालय की संस्था 'पहरेदार' की ओर से जल का दुरुपयोग रोकने का आग्रह करते हुए लगभग 30 शब्दों में एक वज्ञापन का आलेख तैयार कीजिए।

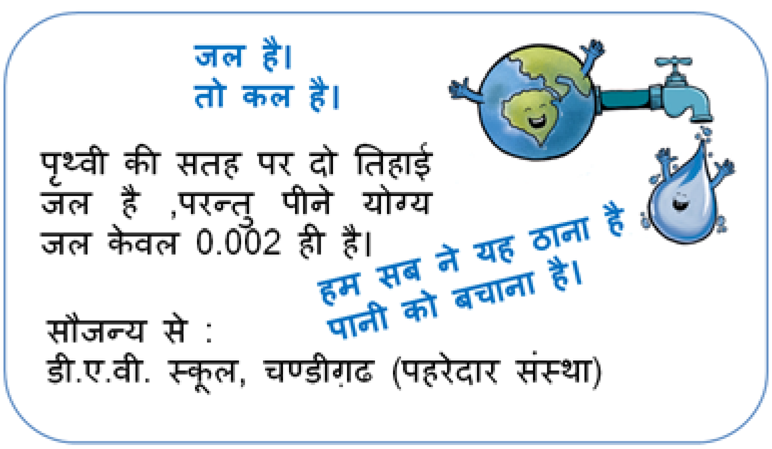

\2. वद्यालय की कला व थ में कुछ चत्र (पेंटिंग्स) बिक्री के लए उपलब्ध हैं। इसके लए एक वज्ञापन लगभग 50 शब्दों में ल खए।

3. हिंदी की पुस्तकों की प्रदर्शनी में आधे मूल्य पर बिक रही महत्तवपूर्ण पुस्तकों को खरीदकर लाभ उठाने के लए लगभग 25-30 शब्दों में एक वज्ञापन ल खए।

Related - Paragraph Writing in Hindi

4. अपने पुराने मकान के बेचने सम्बन्धी वज्ञापन का आलेख लगभग 25-30 शब्दों में तैयार कीजिए।

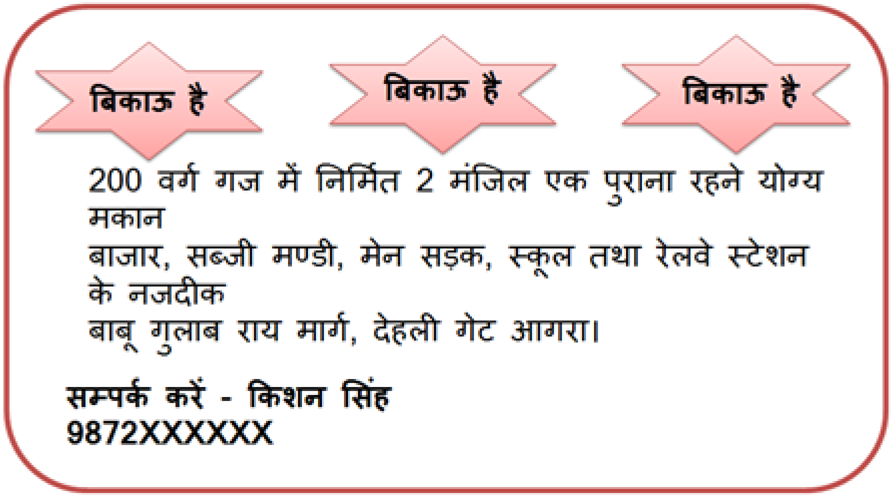

5. आपके वद्यालय में वा र्षकोत्सव के अवसर पर वद्या र्थयों द्वारा हस्तनि र्मत, टिकाऊ और उपयोगी सामग्री के वक्रय हेतु दिवाली मेले के लए एक वज्ञापन लगभग 50 शब्दों में ल खए।

6. सड़क पर टहलते हुए आपको एक बैग मला, जिसमे कुछ रुपये, मोबाइल फोन तथा अन्य कई महत्वपूर्ण कागज़ात थे। लगभग 25-30 शब्दों में एक वज्ञापन तैयार कीजिए क अ धकारी व्यक्ति आपसे संपर्क कर अपना बैग ले जाए।

खोया-पाया

मैं पार्थ शर्मा, दिल्ली निवासी आप सभी को सूचित करना चाहता हूँ कि मुझे 20 जुलाई, 2019 को सड़क पर टहलते हुए, पीरागढ़ी चौक पर एक काला बैग मिला। जिसमें कुछ बहुत जरुरी कागजात, कुछ रुपये और एक मोबाइल फोन है। बैग सम्बन्धी अन्य जानकारी हेतु संपर्क करें।

दूरभाष - 9823XXXXXX

==

गद्य-पाठ-15 अब कहाँ दूसरे के दुख से दुखी होने वाले

खक - निदा फ़ाज़ली

जन्म - 12 अक्तूबर 1938 (दिल्ली)

इस पाठ में वर्णन कया गया है क कस तरह आदमी नाम का जीव सब कुछ समेटना चाहता है और उसकी यह भूख कभी भी शांत होने वाली नहीं है। वह इतना स्वार्थी हो गया है क दूसरे प्रा णयों को तो पहले ही बेदखल कर चुका था परन्तु अब वह अपनी ही जाति अर्थात मनुष्यों को ही बेदखल करने में जरा भी नहीं हिच कचाता। परिस्थिति यह हो गई है क न तो उसे कसी के सुख-दुःख की चंता है और न ही कसी को सहारा या कसी की सहायता करने का इरादा।

लेखक पाठ में ऐसे व्यक्तिओं के उदाहरण देते हैं जो सभी तरह के प्राणधारियों की रक्षा करना अपना कर्तव्य मानते थे। इनमे सबसे पहला उदाहरण सुलेमान का है।सुलेमान ईसा से 1025 वर्ष पहले एक बादशाह थे। वह सभी पशु-प क्षयों की भाषा भी जानते थे। एक बार सुलेमान अपनी सेना के साथ एक रास्ते से गुज़र रहे थे। रास्ते में कुछ चींटियों ने जब रास्ते से गुजरते हुए घोड़ों के चलने की आवाज़ सुनी तो वे डर गई और एक दूसरे से कहने लगी क जल्दी से सभी अपने-अपने बिलों में चलो। सुलेमान ने उनकी बातें सुन ली, वे चींटियों से बोले क तुम में से कसी को भी घबराने की जरुरत नहीं है, सुलेमान को खुदा ने सबकी रक्षा करने के लए बनाया

है। सुलेमान की नेक दिली की तरह एक और उसी तरह की घटना का वर्णन संधी भाषा के महाक व शेख अयाज़ ने अपनी जीवन कथा में कया है। एक दिन शेख अयाज़ के पता कुँए से नहाकर लौटे। अभी उनके पता ने रोटी का पहला टुकड़ा तोड़ा ही था क उनकी नज़र उनके बाज़ू पर धीरे-धीरे चलते हुए एक काले च्योंटे पर पड़ी। जैसे ही उन्होंने कीड़े को देखा वे भोजन छोड़ कर खड़े हो गए। इस पर माँ ने पूछा क क्या भोजन अच्छा नहीं लगा? इस पर शेख अयाज़ के पता ने जवाब दिया क ऐसी कोई बात नहीं है। उन्होंने एक घर वाले को बेघर कर दिया है वे उसी को उसके घर यानि कुँए के पास छोड़ने जा रहें हैं। बाइबिल और जितने भी दूसरे प वत्र ग्रन्थ हैं उनमें नूह नाम के एक ईश्वर के सन्देश वाहक का वर्णन मलता है। उनका असली नाम नूह नहीं था उनका नाम लश्कर था, ले कन अरब के लोग उनको इस नाम से याद करते हैं क्यों क वे सारी उम्र रोते रहे अर्थात दूसरों के दुःख में दुखी रहते थे।

लेखक कहता है क जब पृथ्वी अस्तित्व में आई थी, उस समय पूरा संसार एक परिवार की तरह रहा करता था ले कन अब इसके टुकड़ें हो गए हैं और सभी एक-दूसरे से दूर हो गए हैं। वातावरण में इतना अ धक बदलाव हो गया है क गर्मी में बहुत अ धक गर्मी पड़ती है, बरसात का कोई निश्चित समय नहीं रह गया है, भूकम्प, सैलाब, तूफ़ान और रोज कोई न कोई नई बीमारियाँ न जाने और क्या-क्या ,ये सब मानव द्वारा कये गए प्रकृति के साथ छेड़-छाड़ का नतीजा है। कहा जाता है क जो जितना बड़ा होता है उसको गुस्सा उतना ही कम आता है परन्तु जब आता है तो उनके गुस्से को कोई शांत नहीं कर सकता। समुद्र के साथ भी वही हुआ जब समुद्र को गुस्सा आया तो एक रात वह अपनी लहरों के ऊपर दौड़ता हुआ आया और तीन जहाज़ों को ऐसे उठा कर तीन दिशाओं में फेंक दिया जैसे कोई कसी बच्चे की गेंद को उठा कर फेंकता है।

लेखक कहता है क बचपन में उनकी माँ हमेशा कहती थी क शाम के समय पेड़ों से पत्ते नहीं तोड़ने चाहिए क्यों क उस समय यदि पत्ते तोड़ोगे तो पेड़ रोते हैं। पूजा के समय फूलों को नहीं तोड़ना चाहिए क्यों क उस समय फूलों को तोड़ने पर फूल श्राप देते हैं। नदी पर जाओ तो उसे नमस्कार करनी चाहिए वह खुश हो जाती है। कभी भी कबूतरों और मुर्गों को परेशान नहीं करना चाहिए।

ग्वा लयर में लेखक का एक मकान था, उस मकान के बरामदे में दो रोशनदान थे। उन रोशनदानों में कबूतर के एक जोड़े ने अपना घोंसला बना रखा था। बिल्ली ने जब कबूतर के एक अंडे को तोड़ दिया तो लेखक की माँ ने स्टूल पर चढ़ कर दूसरे अंडे को बचाने की को शश की। परन्तु इस को शश में दूसरा अंडा लेखक की माँ के हाथ से छूट गया और टूट गया।

कबूतरों की आँखों में उनके बच्चों से बिछुड़ने का दुःख देख कर लेखक की माँ की आँखों में आँसू आ गए। इस पाप को खुदा से माफ़ कराने के लए लेखक की माँ ने पुरे दिन का उपवास रखा। अब लेखक समय के साथ मनुष्यों की बदलती भावनाओं के लए एक उदाहरण देते हैं -दो कबूतरों ने लेखक के फ्लैट में एक ऊँचे स्थान पर आपने घोंसला बना रखा था। उनके बच्चे अभी छोटे थे। उनके पालन-पोषण की जिम्मेवारी उन बड़े कबूतरों की थी। ले कन उनके आने-जाने के कारण लेखक और लेखक के परिवार को बहुत परेशानी होती थी। कभी कबूतर कसी चीज़ से टकरा जाते थे और चीज़ों को गराकर तोड़ देते थे। कबूतरों के बार-बार आने-जाने और चीज़ों को तोड़ने से परेशान हो कर लेखक की पत्नी ने जहाँ कबूतरों का घर था वहाँ जाली लगा दी थी, कबूतरों के बच्चों को भी वहाँ से हटा दिया था। जहाँ से कबूतर आते-जाते थे उस खड़की को भी बंद कया जाने लगा था। अब दोनों कबूतर खड़की के बाहर रात-भर चुप-चाप और दुखी बैठे रहते थे। मगर अब न तो सोलोमेन है जो उन कबूतरों की भाषा को समझ कर उनका दुःख दूर करे और न ही लेखक की माँ है जो उन कबूतरों के दुःख को देख कर रत भर प्रार्थना करती रहे। अर्थ यह हुआ क समय के साथ-साथ व्यक्तियों की भावनाओं में बहुत अंतर आ गया है।

अंत में लेखक हमें बताना चाहता है क हमें नदी और सूरज की तरह दुसरो के हित के कार्य करने चाहिए और तोते की तरह सभी को सामान समझना चाहिए तभी संसार के सभी जीवधारी प्रसन्न और सुखी रह सकते हैं।

अब कहाँ दूसरे के दुख से दुखी होने वाले प्रश्न अभ्यास (महत्वपूर्ण प्रश्न उत्तर)

(क) निम्न ल खत प्रश्नों के उत्तर (25-30 शब्दों में) दीजिए -

प्रश्न 1 - अरब में लशकर को नूह के नाम से क्यों याद करते हैं ?

उत्तर- अरब में लशकर को नूह के नाम से इस लए याद करते हैं क्यों क वे हमेशा रोते रहते थे अर्थात दूसरों के दुःख में दुखी रहते थे। नूह को ईश्वर का सन्देश वाहक भी कहा जाता है।

प्रश्न 2 - लेखक की माँ कस समय पेड़ों के पत्ते तोड़ने के लए मना करती थी और क्यों ?

उत्तर , लेखक की माँ कहती थी क जब भी सूरज ढले अर्थात शाम के समय पेड़ों से पत्ते नहीं तोड़ने चाहिए क्यों क उस समय यदि पत्ते तोड़ोगे तो पेड़ रोते हैं।

प्रश्न 3 - प्रकृति में आए असंतुलन का क्या परिणाम हुआ ?

उत्तर ,प्रकृति में आए असंतुलन का बहुत अधिक भयानक परिणाम हुआ, गर्मी में बहुत अधिक गर्मी पड़ती है, बरसात का कोई निश्चित समय नहीं रह गया है, भूकम्प, सैलाब, तूफ़ान और रोज कोई न कोई नई बीमारियाँ जन्म ले लेती है और मानव का जीवन बहुत अधिक कठिन हो गया है।

प्रश्न 4 - लेखक की माँ ने पुरे दिन का रोज़ा क्यों रखा ?

उत्तर , बिल्ली ने जब कबूतर के एक अंडे को तोड़ दिया तो लेखक की माँ ने स्टूल पर चढ़ कर दूसरे अंडे को बचाने की कोशिश की। परन्तु इस कोशिश में दूसरा अंडा लेखक की माँ के हाथ से छूट गया और टूट गया। ये सब देख कर कबूतरों का जोड़ा परेशान हो कर इधर-उधर फड़फड़ाने लगा। कबूतरों की आँखों में उनके बच्चों से बिछुड़ने का दुःख देख कर लेखक की माँ की आँखों में आँसू आ गए। इस पाप को खुदा से माफ़ कराने के लिए लेखक की माँ ने पुरे दिन का उपवास रखा।

प्रश्न 5 - लेखक ने ग्वालियर से बम्बई तक किन बदलावों को महसूस किया? पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर , लेखक कहता है कि ग्वालियर से बंबई के बीच समय के साथ काफी बदलाव हुए हैं। वर्सोवा में जहाँ लेखक का घर है, वहाँ लेखक के अनुसार किसी समय में दूर तक जंगल ही जंगल था। पेड़-पौधे थे, पशु-पक्षी थे और भी न जाने कितने जानवर थे। अब तो यहाँ समुद्र के किनारे केवल लम्बे-चौड़े गाँव बस गए हैं। इन गाँव ने न जाने कितने पशु-पक्षियों से उनका घर छीन लिया है। इन पशु-पक्षियों में से कुछ तो शहर को छोड़ कर चले गए हैं और जो नहीं जा सके उन्होंने यहीं कहीं पर भी अस्थाई घर बना लिए हैं। अस्थाई इसलिए क्योंकि कब कौन उनका घर तोड़े कर चला जाये कोई नहीं जनता।

प्रश्न 6 - 'डेरा ढलने ' से आप क्या समझते हैं?स्पष्ट कीजिए।

उत्तर , 'डेरा' अर्थात अस्थाई घर। अस्थाई इसलिए क्योंकि कब कौन तोड़ कर चला जाये कोई नहीं जनता। बड़ी-बड़ी इम्मारतें बन जाने के कारण कई पक्षी बेघर हो गए और जब उन्हें अपना घोंसला बनाने की जगह नहीं मिली तो उन्होंने इन इमारतों में अपना डेरा डाल लिया।

प्रश्न 7 - शेख अयाज़ के पता अपनी बाजू पर काला च्योंटा रेंगता देख भोजन छोड़ कर क्यों उठ खड़े हुए?

उत्तर , एक दिन शेख अयाज़ के पता कुँए से नहाकर लौटे। उनकी माँ ने भोजन परोसा। अभी उनके पता ने रोटी का पहला टुकड़ा तोड़ा ही था क उनकी नज़र उनके बाजू पर धीरे-धीरे चलते हुए एक काले च्योंटे पर पड़ी। जैसे ही उन्होंने कीड़े को देखा वे भोजन छोड़ कर खड़े हो गए। उनको खड़ा देख कर शेख अयाज़ा की माँ ने पूछा क क्या बात है? क्या भोजन अच्छा नहीं लगा? इस पर शेख अयाज़ के पता ने जवाब दिया क ऐसी कोई बात नहीं है। उन्होंने एक घर वाले को बेघर कर दिया है वे उसी को उसके घर यानि कुँए के पास छोड़ने जा रहें हैं।

(ख) निम्न ल खत प्रश्नों के उत्तर (50-60 शब्दों में) दीजिए

प्रश्न 1 - बढ़ती हुई आबादी का पर्यावरण पर क्या प्रभाव पड़ा ?

उत्तर , जैसे-जैसे जनसंख्या बढ़ रही है वैसे-वैसे समुद्र अपनी जगह से पीछे हटने लगा है, लोगों ने पेड़ों को काट कर रास्ते बनाना शुरू कर दिया है। प्रदुषण इतना अ धक फैल रहा है क उससे परेशान हो कर पंछी बस्तियों को छोड़ कर भाग रहे हैं। बारूद से होने वाली मुसीबतों ने सभी को परेशान कर रखा है। वातावरण में इतना अ धक बदलाव हो गया है क गर्मी में बहुत अ धक गर्मी पड़ती है, बरसात का कोई निश्चित समय नहीं रह गया है, भूकम्प, सैलाब, तूफ़ान और रोज कोई न कोई नई बीमारियाँ न जाने और क्या-क्या ,ये सब मानव द्वारा कये गए प्रकृति के साथ छेड़-छाड़ का नतीजा है। इन सभी के कारण मानव जीवन अस्त-व्यस्त हो गया है। मानव के जीवन पर इसका बहुत अ धक प्रभाव पड़ा है।

प्रश्न 2 - लेखक की पत्नी को खड़की पर जाली क्यों लगानी पड़ी **?**

उत्तर - दो कबूतरों ने लेखक के फ्लैट में एक ऊँचे स्थान पर अपना घोंसला बना रखा है। उनके बच्चे अभी छोटे हैं। उनके पालन-पोषण की जिम्मेवारी उन बड़े कबूतरों की थी। बड़े कबूतर दिन में बहुत बार उन छोटे कबूतरों को खाना खलाने आते जाते रहते थे। ले कन उनके आने-जाने के कारण लेखक और लेखक के परिवार को बहुत परेशानी होती थी। कभी कबूतर कसी चीज़ से टकरा जाते थे और चीज़ों को गराकर तोड़ देते थे। कबूतरों के बार-बार आने-जाने और चीज़ों को तोड़ने से परेशान हो कर लेखक की पत्नी ने जहाँ कबूतरों का घर था वहाँ जाली लगा थी,

कबूतरों के बच्चों को भी वहाँ से हटा दिया था। जहाँ से कबूतर आते-जाते थे उस खड़की को भी बंद कया जाने लगा था।

प्रश्न 3 - समुद्र के गुस्से की क्या वजह थी ? उसने अपना गुस्सा कैसे निकाला ?

उत्तर , कई सालों से बड़े-बड़े मकानों को बनाने वाले बिल्डर मकान बनाने के लए समुद्र को पीछे धकेल कर उसकी जमीन पर कब्ज़ा कर रहे थे। बेचारा समुद्र लगातार सकुड़ता जा रहा था। पहले तो समुद्र ने अपनी फैली हुई टांगों को इकठ्ठा कया और सकुड़ कर बैठ गया। फर जगह कम होने के कारण घुटने मोड़ कर बैठ गया। अब भी बिल्डर नहीं माने तो समुद्र खड़ा हो गया.... जब समुद्र के पास खड़े रहने की जगह भी कम पड़ने लगी और समुद्र को गुस्सा आ गया। कहा जाता है क जो जितना बड़ा होता है उसको गुस्सा उतना ही कम आता है परन्तु जब आता है तो उनके गुस्से को कोई शांत नहीं कर सकता। समुद्र के साथ भी वही हुआ जब समुद्र को गुस्सा आया तो एक रात वह अपनी लहरों के ऊपर दौड़ता हुआ आया और तीन जहाज़ों को ऐसे उठा कर तीन दिशाओं में फेंक दिया जैसे कोई कसी बच्चे की गेंद को उठा कर फेंकता है। एक को वर्ली के समुद्र के कनारे फेंका तो दूसरे को बांद्रा के कार्टर रोड के सामने मुँह के बल गरा दिया और तीसरे को गेट-वे-ऑफ इं डया के पास पटक दिया जो अब घूमने आये लोगों का मनोरंजन का साधन बना हुआ है। समुद्र ने तीनों को इस तरह फेंका की को शश करने पर भी उन्हें चलने लायक नहीं बनाया जा सका।

प्रश्न 4 - मट्टी से मट्टी मले,
खो के सभी निशान।
कसमें कतना कौन है,
कैसे हो पहचान।।
इन पंक्तियों के माध्यम से लेखक क्या कहना चाहता है ?स्पष्ट कीजिए।

उत्तर , लेखक इन पंक्तियों के माध्यम से कहना चाहता है क उस ईश्वर ने हम सभी प्राणधारियों को एक ही मट्टी से बनाया है। यदि सभी से प्राण निकाल कर वा पस मट्टी बना दिया जाए तो कसी का कोई निशान नहीं रहेगा जिससे पहचाना जा सके क कौन सी मट्टी कस प्राणी की है। भाव यह हुआ की लेखक कहना चाहता है व्यक्ति को अपने व्यक्तित्व पर घमण्ड नहीं करना चाहिए क्यों क यह कोई नहीं जानता की उसमें कतनी मनुष्यता है और कतनी पशुता।

(ग) निम्न ल खत के आशय स्पष्ट कीजिए

(1) प्रकृति की सहनशक्ति की एक सीमा होती है। प्रकृति के गुस्से का एक नमूना कुछ साल पहले बंबई (मुंबई) में देखने को मला था।

उत्तर ,प्रकृति एक सीमा तक ही सहन कर सकती है। कहा जाता है क जो जितना बड़ा होता है उसको गुस्सा उतना ही कम आता है परन्तु जब आता है तो उनके गुस्से को कोई शांत नहीं कर सकता। प्रकृति को भी जब गुस्सा आता है तो क्या होता है इसका एक नमूना कुछ साल पहले मुंबई में आई सुनामी के रूप में देख ही चुके हैं। ये नमूना इतना डरावना था क मुंबई के निवासी डर कर अपने-अपने देवी-देवताओं से उस मुसीबत से बचाने के लए प्रार्थना करने लगे थे।

(2) जो जितना बड़ा होता है उसको गुस्सा उतना ही कम आता है।

>उत्तर -कई सालों से बड़े-बड़े मकानों को बनाने वाले बिल्डर मकान बनाने के लए समुद्र को पीछे धकेल कर उसकी जमीन पर कब्ज़ा कर रहे थे। जब समुद्र के पास खड़े रहने की जगह भी कम पड़ने लगी और समुद्र को गुस्सा आ गया। कहा जाता है क जो जितना बड़ा होता है उसको गुस्सा उतना ही कम आता है परन्तु जब आता है तो उनके गुस्से को कोई शांत नहीं कर सकता। समुद्र के साथ भी वही हुआ जब समुद्र को गुस्सा आया तो एक रात वह अपनी लहरों के ऊपर दौड़ता हुआ आया और तीन जहाज़ों को ऐसे उठा कर तीन दिशाओं में फेंक दिया जैसे कोई कसी बच्चे की गेंद को उठा कर फेंकता है।

(3) इस बस्ती ने न जाने कतने परिंदों-चरिन्दों से उनका घर छीन लया है। इनमें से कुछ शहर छोड़ कर चले गए हैं। जो नहीं जा सके हैं उन्होंने यहाँ-वहाँ डेरा दाल लया है।

उत्तर , लेखक कहता है क ग्वा लयर से बंबई के बीच कसी समय में दूर तक जंगल ही जंगल थे। पेड़-पौधे थे, पशु-पक्षी थे और भी न जाने कतने जानवर थे। अब तो यहाँ समुद्र के कनारे केवल लम्बे-चौड़े गाँव बस गए हैं। इन गाँव ने न जाने कतने पशु-प क्षयों से उनका घर छीन लया है। इन पशु-प क्षयों में से कुछ तो शहर को छोड़ कर चले गए हैं और जो नहीं जा सके उन्होंने यहीं कहीं पर भी अस्थाई घर बना लए हैं। अस्थाई इस लए क्यों क कब कौन उनका घर तोड़े कर चला जाये कोई नहीं जनता।

(4) शेख अयाज़ के पता बोले,'नहीं यह बात नहीं है। मैंने एक घर वाले को बेघर कर दिया है। उस बेघर को कुँए पर उसके घर छोड़ने जा रहा हूँ।' इन पंक्तियों में छिपी हुई उनकी भावना को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर , शेख अयाज़ के पता बोले,'नहीं यह बात नहीं है। मैंने एक घर वाले को बेघर कर दिया है। उस बेघर को कुँए पर उसके घर छोड़ने जा रहा हूँ।' इन पंक्तियों में शेख अयाज़ के पता की छिपी हुई भावना यह थी क वे पशु-प क्षयों की भावना को समझते थे। वे अपना खाना छोड़ कर केवल एक काले च्योंटे को उसके घर कुँए पर छोड़ने चल पड़े। उनका व्यक्तित्व ऐसा था जो कसी को भी तकलीफ नहीं देना चाहते थे।

समास

समास की पूरी जानकारी | समास के भेद परिभाषा और उदाहरण –Samas in hindi

इस लेख में आपको समास (हिंदी व्याकरण) से जुडी संपूर्ण जानकारी प्राप्त होगी। जिसमे अर्थ, परिभाषा, भेद, प्रकार और उदाहरण शा मल हैं। इस वषय पर अपनी पकड़ मजबूत करने के लए इस लेख को अंत तक अवश्य पढ़ें।

समास का अर्थ 'सं क्षप्त' या 'संछेप' होता है। समास का तात्पर्य है 'सं क्षप्तीकरण'। दो या दो से अ धक शब्दों से मलकर बने हुए एक नवीन एवं सार्थक शब्द को समास कहते हैं। कम से कम दो शब्दों में अ धक से अ धक अर्थ प्रकट करना समास का लक्ष्य होता है।

जैसे –

'रसोई के लए घर' इसे हम 'रसोईघर' भी कह सकते हैं।

समास का प्रयोग

- संस्कृत एवं अन्य भारतीय भाषाओं में समास का बहुतायत में प्रयोग होता है।
- जर्मन आदि भाषाओं में भी इस का बहुत अ धक प्रयोग होता है।
- समा सक शब्द अथवा पद को अर्थ के अनुकूल वभाजित करना वग्रह कहलाता है।

सरल भाषा में पहचानने का तरीका =>

पूर्व प्रधान – अव्ययीभाव समास

उत्तर पद प्रधान – तत्पुरुष , कर्मधारय व द् वगु
दोनों पद प्रधान – द्वंद समास
दोनों पद प्रधान – बहुव्रीहि इसमें कोई तीसरा अर्थ प्रधान होता है
सामान्यतः समास छह प्रकार के माने गए हैं। १ अव्ययीभाव, २ तत्पुरुष, ३ कर्मधारय, ४ द् वगु, ५ द्वन्द्व और ६ बहुव्रीहि.

१. अव्ययीभाव => पूर्वपद प्रधान होता है।
२. तत्पुरुष => उत्तरपदप्रधान होता है।
३. कर्मधारय => दोनों पद प्रधान।
४. द् वगु => पहला पद संख्यावाचक होता है।
५. द्वन्द्व => दोनों पद प्रधान होते है , वग्रह करने पर दोनों शब्द के बिच (-)हेफन लगता है।
६. बहुव्रीहि => कसी तीसरे शब्द की प्रतीति होती है।

समास की संपूर्ण जानकारी

सामा सक शब्द, समास वग्रह और पूर्व पद – उत्तर पद की जानकारी आपको नीचे दी जा रही है। उसके बाद आपको समास के भेद की वस्तार में जानकारी प्राप्त होगी।

सामा सक शब्द

समास के नियमों से नि र्मत शब्द सामा सक शब्द कहलाता है। इसे समस्तपद भी कहते हैं। समास होने के बाद वभक्तियों के चहन (परसर्ग) लुप्त हो जाते हैं। जैसे-राजपुत्र।

समास वग्रह (Samas vigrah) –

सामा सक शब्दों के बीच के संबंध को स्पष्ट करना समास- वग्रह कहलाता है।
जैसे-

- राजपुत्र राजा का पुत्र –
- देशवासी देश के वासी –
- हिमालय हिम का आलय –

पूर्वपद और उत्तरपद

समास में दो पद (शब्द) होते हैं। पहले पद को पूर्वपद और दूसरे पद को उत्तरपद कहते हैं।

जैसे-गंगाजल। इसमें गंगा पूर्वपद और जल उत्तरपद है।
संस्कृत में समासों का बहुत प्रयोग होता है। अन्य भारतीय भाषाओं में भी समास उपयोग होता है। समास के बारे में संस्कृत में एक सूक्ति प्र सद्ध है:
वन्द्वो द् वगुर प चाहं मद्गेहे नित्यमव्ययीभावः।तत् पुरुष कर्म धारय येनाहं स्यां बहुव्रीहिः॥

समास के भेद –Samas ke bhed

सामान्यतः समास छह प्रकार के माने गए हैं। १ अव्ययीभाव, २ तत्पुरुष, ३ कर्मधारय, ४ द् वगु, ५ द्वन्द्व and ६ बहुब्रीहि. अब हम बारीकी से समाज के प्रति एक भेद को समझेंगे और उसका गहराई से वश्लेषण करेंगे। आपको साथ ही साथ अनेकों उदाहरण भी देखने को मलेंगे जिसके बाद आपको हर एक भेद अच्छे से समझ आएगा।

1. अवययीभाव समासः- (Avyayibhav Samas)

जिस सामा सक पद का पूर्वपद (पहला पद प्रधान) प्रधान हो , तथा समा सक पद अव्यय हो , उसे अव्ययीभाव समास कहते हैं। इस समास में समूचा पद क्रया वशेषण अव्यय हो जाता है।
जैसे प्रतिदिन , आमरण , यथासंभव इत्यादि।
अन्य उदाहरण

प्रति + कूल = प्रतिकूल
आ + जन्म = आजन्म
प्रति + दिन = प्रतिदिन
यथा + संभव = यथासंभव
अनु + रूप = अनुरूप।
पेट + भर = भरपेट
आजन्म – जन्म से लेकर
यथास्थान – स्थान के अनुसार
आमरण – मृत्यु तक
अभूतपूर्व – जो पहले नहीं हुआ
निर्भय – बिना भय के
नि र्ववाद – बिना ववाद के

निर्विकार – बिना विकार के

प्रतिपल – हर पल

अनुकूल – मन के अनुसार

अनुरूप – रूप के अनुसार

यथासमय – समय के अनुसार

यथाक्रम – क्रम के अनुसार

यथाशीघ्र – शीघ्रता से

अकारण – बिना कारण के

अ +अंत =अनंत

2. तत्पुरुष समास (Tatpurush samas)

तत्पुरुष समास का उत्तरपद अथवा अंतिम पद प्रधान होता है। ऐसे समास में परायः प्रथम पद विशेषण तथा द्वितीय पद विशेष्य होते हैं। द्वितीय पद के विशेष्य होने के कारण समास में इसकी प्रधानता होती है।

ऐसे समास तीन प्रकार के हैं तत्पुरुष , कर्मधारय तथा द्विगु।

तत्पुरुष समास के छः भेद हैं

- कर्म तत्पुरुष को
- करण तत्पुरुष से (जुड़ा हुआ) के द्वारा
- संप्रदान तत्पुरुष के लिए
- अपादान तत्पुरुष से (अलग होना)
- संबंध तत्पुरुष का, की , के ,रा ,री, रे
- अधिकरण तत्पुरुष में ,पर

तत्पुरुष समास में दोनों शब्दों के बीच का कारक चिन्ह लुप्त हो जाता है।

राजा का कुमार = राजकुमार

धर्म का ग्रंथ = धर्मग्रंथ

रचना को करने वाला = रचनाकार

कर्म तत्पुरुष

इसमें कर्म कारक की वभक्ति 'को' का लोप हो जाता है।

सर्वभक्षी – सब का भक्षण करने वाला

यशप्राप्त – यश को प्राप्त

मनोहर – मन को हरने वाला

गरिधर – गरी को धारण करने वाला

माखनचोर – माखन को चुराने वाला।

शत्रुघ्न – शत्रु को मारने वाला

मुंहतोड़ – मुंह को तोड़ने वाला

कुंभकार – कुंभ को बनाने वाला

करण तत्पुरुष

अंकत।

सूररचत – सूर द्वारा रचत

शोकग्रस्त – शोक से ग्रस्त

रोगातुर – रोग से आतुर

अकाल पीड़त – अकाल से पीड़त

कर्मवीर – कर्म से वीर

रक्तरंजित – रक्त से रंजीत

करुणा पूर्ण – करुणा से पूर्ण

रोगग्रस्त – रोग से ग्रस्त

मदांध – मद से अंधा

गुणयुक्त – गुणों से युक्त

अंधकार युक्त – अंधकार से युक्त

पददलत – पद से दलत

मनचाहा – मन से चाहा

संप्रदान तत्पुरुष

इसमें संप्रदान कारक की वभक्ति ' के लए ' लुप्त हो जाती है।

रसोईघर – रसोई के लए घर

सत्याग्रह – सत्य के लए आग्रह

हथकड़ी – हाथ के लए कड़ी

धर्मशाला – धर्म के लए शाला

देवालय – देव के लए आलय

भक्षाटन – भक्षा के लए ब्राह्मण

वद्यालय – वद्या के लए आलय

वधानसभा – वधान के लए सभा

स्नानघर – स्नान के लए घर

डाकगाड़ी – डाक के लए गाड़ी

प्रयोगशाला – प्रयोग के लए शाला

अपादान तत्पुरुष

इसमें अपादान कारक की वभक्ति ' ः लुप्त हो जाती है।

जन्मांध – जन्म से अंधा

नेत्रहीन – नेत्र से हीन

धनहीन – धन से हीन

ऋणमुक्त – ऋण से मुक्त

पापमुक्त – पाप से मुक्त

फलहीन – फल से हीन

भयभीत – भय से डरा हुआ

संबंध तत्पुरुष

जलयान – जल का यान

छात्रावास – छात्र का वास

चरित्रहीन – चरित्र से हीन

कार्यकर्ता – कार्य का करता

वद्याभ्यास – वद्या अभ्यास

कन्यादान – कन्या का दान

गंगाजल – गंगा का जल

गोपाल – गो का पालक

पराधीन – पर के अधीन

राजपूत्र – राजा का पुत्र

वद्यासागर – वद्या का सागर

राजाज्ञा – राजा की आज्ञा

देशरक्षा – देश की रक्षा

अ धकरण तत्पुरुष

रणधीर – रण में धीर

क्षणभंगुर – क्षण में भंगुर

पुरुषोत्तम – पुरुषों में उत्तम

आपबीती – आप पर बीती

लोकप्रय – लोक में प्रय

कवश्रेष्ठ – कवयों में श्रेष्ठ

शरणागत – शरण में आगत

कलाप्रवीण – कला में प्रवीण

युधष्ठिर – युद्ध में स्थिर

कलाश्रेष्ठ – कला में श्रेष्ठ

आनंदमग्न – आनंद में मग्न

गृहप्रवेश – गृह में प्रवेश

आत्मनिर्भर – आत्म पर निर्भर

शोकमग्न – शोक में मगन

धर्मवीर – धर्म में वीर

3. कर्मधारय समास (Karmdharay samas)

होते हैं। उनके लंग , वचन भी समान हो वहां कर्मधारय समास होता है।

कर्मधारय समास चार प्रकार के होते हैं :

१ वशेषण पूर्वपद ,

२ वशेष्य पूर्वपद ,

३ वशेषणोभय पद तथा ,

४ वशेष्योभय पद।

उपमेय तथा वशेषण -वशेष्य संबंध हो कर्मधारय समास कहलाता है।

पाठ-५ पर्वत प्रदेश में पावस

(क) निम्न ल खत प्रश्नों के उत्तर दीजिए -:

प्रश्न 1-: पावस ऋतु में प्रकृति में कौन -कौन से परिवर्तन आते हैं ? क वता के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-: वर्षा ऋतु में मौसम हर पल बदलता रहता है। कभी तेज़ बारिश आती है तो कभी मौसम साफ हो जाता है। पर्वत अपनी पुष्प रूपी आँखों से अपने चरणों में स्थित तालाब में अपने आप को देखता हुआ प्रतीत होता है। बादलों के धरती पर आ जाने के कारण ऐसा लग रहा है क जैसे आसमान धरती पर आ गया हो और कोहरा धुएं की तरह लग रहा है जिसके कारण लग रहा है क तालाब में आग लग गई हो।

प्रश्न 2-: 'मेखलाकार ' शब्द का क्या अर्थ है ?क व ने इस शब्द का प्रयोग यहाँ क्यों कया है?

उत्तर -: 'मेखलाकार ' शब्द का अर्थ है – करघनी अर्थात कमर का आभूषण। क व ने यहाँ इस शब्द का प्रयोग इस लए कया है क्यों क वर्षा ऋतु में पर्वतों की श्रृंखला करघनी की तरह टेडी मेडी लग रही है। अतः क व ने पर्वतों की श्रृंखला की तुलना करघनी से की है।

प्रश्न 3-: 'सहस्र दृग – सुमन ' से क्या तात्पर्य है ?क व ने इस पद का प्रयोग कसके लए कया होगा ?

उत्तर-: 'सहस्र दृग – सुमन ' से क व का तात्पर्य पहाड़ों पर खले हजारों फूलों से है। क व को ये फूल पहाड़ ही आंखों के समान लग रहे हैं अतः क व ने इस पद का प्रयोग कया है।

प्रश्न 4-: क व ने तालाब की समानता कसके साथ दिखाई है और क्यों ?

उत्तर-: क व ने तालाब की समानता आईने के साथ दिखाई है क्यों क तालाब पर्वत के लए आईने का काम कर रहा है वह स्वच्छ और निर्मल दिखाई दे रहा है।

प्रश्न 5 -: पर्वत के ह्रदय से उठ कर ऊँचे ऊँचे वृक्ष आकाश की ओर क्यों देख रहे थे और वे कस बात को प्रतिबिंबित करते हैं ?

उत्तर-: पर्वत पर उगे ऊँचे ऊँचे वृक्ष चंता में डूबे हुए लग रहें हैं जैसे वे शांत आकाश को छूना चाहते हों। ये वृक्ष मनुष्यों की सदा ऊपर उठने और आगे बढ़ने की और संकेत कर रहे हैं।

प्रश्न 6 -: शाल के वृक्ष भयभीत हो कर धरती में क्यों धस गए हैं ?

उत्तर-: घनी धुंध के कारण लग रहा है मानो पेड़ कही उड़ गए हों अर्थात गायब हो गए हों। ऐसा लग रहा है क पूरा आकाश ही धरती पर आ गया हो केवल झरने की आवाज़ ही सुनाई दे रही है। प्रकृति का ऐसा भयानक रूप देख कर शाल के पेड़ डर कर धरती के अंदर धंस गए हैं।

प्रश्न 7-: झरने कसके गौरव का गान कर रहे हैं ?बहते हुए झरने की तुलना कस से की गई है ?

उत्तर-: झरने पर्वतों के गौरव का गान कर रहे हैं और बहते हुए झरनों की तुलना चमकदार मोतियों से की गई है।

(ख)निम्न ल खत का भाव स्पष्ट कीजिए :-

1-: है टूट पड़ा भू पर अम्बर !

भाव-: घनी धुंध के कारण लग रहा है मानो पूरा आकाश ही धरती पर आ गया हो केवल झरने की आवाज़ ही सुनाई दे रही है।

2-:-यों जलद -यान में वचर - वचर
था इंद्र खेलता इंद्रजाल।

भाव-: चारों और धुँआ होने के कारण लग रहा है क इंद्र भी अपना बादल रूपी वमान ले कर इधर उधर जादू का खेल दिखता हुआ घूम रहा है।

3-: गरिवर के उर से उठ -उठ कर
उच्चाकांक्षाओं से तरुवर
है झाँक रहे नीरव नभ पर
अनिमेष ,अटल कुछ चंतापर।

भाव-: पहाड़ों के हृदय से उठ-उठ कर अनेकों पेड़ ऊँच्चा उठने की इच्छा लए एक टक दृष्टि से स्थिर हो कर शांत आकाश को इस तरह देख रहे हैं मनो वो कसी चंता में डूबे हुए हों। अर्थात वे हमें निरन्तर ऊँच्चा उठने की प्रेरणा दे रहे हैं। ये वृक्ष मनुष्यों की सदा ऊपर उठने और आगे बढ़ने की और संकेत कर रहे हैं।

Solutions for Extra Questions

1-: इस क वता में मानवीकरण अलंकार का प्रयोग कस प्रकार कया गया है ? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-: इस क वता में मानवीकरण अलंकार का प्रयोग जगह जगह कया गया है जिसके कारण प्राकृति सजीव प्रतीत हो रही है। जैसे – पहाड़ अपनी हजार पुष्प रूपी आंखें फाड़ कर नीचे जल में अपने वशाल

आकार को देख रहे हैं। और पहाड़ों के हृदय से उठ-उठ कर अनेकों पेड़ ऊँच्चा उठने की इच्छा लए एक टक दृष्टि से स्थिर हो कर शांत आकाश को इस तरह देख रहे हैं मनो वो कसी चंता में डूबे हुए हों।

2-: आपकी दृष्टि में इस क वता का सौन्दर्य इसमें से कस पर निर्भर करता है ?

(क) अनेक शब्दों की आवृति पर

(ख) शब्दों की चत्रमयी भाषा पर

(ग) क वता की संगीतात्मकता पर

उत्तर- (ख) शब्दों की चत्रमयी भाषा पर

क्यों क इस क वता में चत्रात्मक शैली का प्रयोग करते हुए प्रकृति का सुंदर और सजीव वर्णन कया गया है।

3-: क व ने चत्रात्मक शैली का प्रयोग करते हुए पावस ऋतु का सजीव चत्र अं कत कया है ऐसे स्थलों को छाँट कर ल खए।

उत्तर-:1- अपने सहस्र दृग- सुमन फाड़,
अवलोक रहा है बार बार ,
2- गरि का गौरव गाकर झर- झर
3- धँस गए धारा में सभय शाल !
4- गरिवर के उर से उठ -उठ कर
उच्चाकांक्षाओं से तरुवर
है झाँक रहे नीरव नभ पर
अनिमेष ,अटल कुछ चंतापर।

Top

Solutions for Extra Questions (Important)

प्रश्न 1 – क व ने "पर्वत प्रदेश में पावस" क वता में पहाड़ और तालाब की तुलना कससे की है?

उत्तर – क व ने "पर्वत प्रदेश में पावस" क वता में पहाड़ों के आकार की तुलना करघनी अर्थात कमर में बांधने वाले आभूषण से की है । क व कहता है क करघनी के आकर वाले पहाड़ अपनी हजार पुष्प रूपी आंखें फाड़ कर नीचे जल में अपने वशाल आकार को देख रहे हैं। ऐसा लग रहा है क पहाड़ ने जिस तालाब को अपने चरणों में पाला है वह तालाब पहाड़ के लए वशाल आईने का काम कर रहा है।

प्रश्न 2 – क व ने "पर्वत प्रदेश में पावस" क वता में झरनों का वर्णन कस प्रकार कया है?

उत्तर – "पर्वत प्रदेश में पावस" क वता में झरनों का वर्णन करते हुए क व कहता है क मोतियों की ल ड़यों के समान सुंदर झरने झर झर की आवाज करते हुए बह रहे हैं ,ऐसा लग रहा है की वे पहाड़ों का गुणगान कर रहे हों। उनकी करतल ध्वनि नस नस में उत्साह अथवा प्रसन्नता भर देती है।

प्रश्न 3 – "पर्वत प्रदेश में पावस" क वता में पेड़ हमें क्या प्रेरणा दे रहे हैं?

उत्तर – "पर्वत प्रदेश में पावस" क वता में पहाड़ों के हृदय से उठ-उठ कर अनेकों पेड़ ऊँचा उठने की इच्छा लए एक टक दृष्टि से स्थिर हो कर शांत आकाश को इस तरह देख रहे हैं, मनो वो कसी चंता में डूबे हुए हों। अर्थात वे हमें निरन्तर ऊँचा उठने की प्रेरणा दे रहे हैं।

प्रश्न 4 – क व ने तालाब की समानता कसके साथ दिखाई है और क्यों?
उत्तर – तालाब में या कसी भी अन्य जल युक्त चीज में आस पास की चीजों का प्रतिबिंब दिखाई देता है, जैसे कसी दर्पण में दिखाई पड़ता है, इस लए क व ने तालाब की तुलना कसी वशाल दर्पण से की है क्यों क तालाब में भी वशाल पर्वत का प्रतिबिम्ब दिखाई पड़ रहा है।

प्रश्न 5 – 'पर्वत प्रदेश में पावस' क वता में पहाड़ को कौन-सा मानवीय कार्य करते हुए दर्शाया गया है?
उत्तर – 'पर्वत प्रदेश में पावस' क वता में पहाड़ अत्यंत ऊँचा और वशालकाय है। पहाड़ पर हज़ारों फूल खले हुए हैं। करघनी के आकर वाला पहाड़ अपनी हजार पुष्प रूपी आंखें फाड़ कर नीचे जल से भरे तालाब में अपने वशाल आकार को देख रहा हैं। उसका यह कार्य कसी मनुष्य के कार्य के समान है।

प्रश्न 6 – पर्वत से गरने वाले झरनों की वशेषता ल खए।
उत्तर – पर्वतीय प्रदेश में वर्षा ऋतु में पर्वत के सीने पर झर-झर करते हुए झरने गर रहे हैं। इन झरनों की ध्वनि सुनकर ऐसा लगता है, जैसे ये पर्वतों का गौरवगान कर रहे हों। इनकी करतल ध्वनि नस नस में उत्साह अथवा प्रसन्नता भर देती है। ये पर्वतीय झरने झागयुक्त हैं जिन्हें देखकर लगता है क ये सफ़ेद मोतियों की ल ड़याँ पहने हुए हैं।

प्रश्न 7 – पर्वतों पर उगे पेड़ क व को कस तरह दिख रहे हैं?
उत्तर – पर्वतों पर उगे पेड़ देखकर लगता है क ये पेड़ पहाड़ के सीने पर उग आए हैं जो मनुष्य की ऊँची-ऊँची इच्छाओं की तरह हैं। ये पेड़ अत्यंत ध्यान से अपलक और अटल रहकर शांत आकाश की ओर निहार रहे हैं। ऐसा प्रतीत होता है क शायद ये भी अपनी उच्चाकांक्षा को पूरा करने का उपाय खोजने के लए चंतनशील हैं और स्थिर हो कर उपाय खोज रहे हैं।

प्रश्न 8 – तेज बारिश के बाद मौसम में क्या-क्या बदलाव आया है?
उत्तर – तेज बारिश के बाद मौसम ऐसा हो गया है क घनी धुंध के कारण लग रहा है मानो पेड़ कही उड़ गए हों अर्थात गायब हो गए हों। ऐसा लग रहा है क पूरा आकाश ही धरती पर आ गया हो केवल झरने की आवाज़ ही सुनाई दे रही है। प्रकृति का ऐसा भयानक रूप देख कर शाल के पेड़ डर कर धरती के अंदर धंस गए हैं। चारों ओर धुँआ होने के कारण लग रहा है क तालाब में आग लग गई है। ऐसा लग रहा है क ऐसे मौसम में इंद्र भी अपना बादल रूपी वमान ले कर इधर उधर जादू का खेल दिखाता हुआ घूम रहा है।

प्रश्न 9 – "पर्वत प्रदेश में पावस" क वता में मानवीकरण अलंकार का प्रयोग कस प्रकार कया गया है? स्पष्ट कीजिए |

उत्तर – "पर्वत प्रदेश में पावस" क वता में क व ने प्रकृति को मानव के सभी अंगों से परिपूर्ण माना है। क व ने इस क वता में प्रकृति का ऐसा वर्णन कया है क लग रहा है क प्रकृति सजीव हो उठी है। उन्होंने पर्वत, बादल , झरने, तालाब, पेड़ आदि को मानवीय चेतना से पूर्ण माना है तथा उनकी तुलना मानव के गुणों से की है।

पर्वतों पर उगे हजारों फूल ऐसे लग रहे है जैसे पर्वतों की आँखे हो और वो इन आँखों के सहारे अपने आपको अपने चरणों ने फैले दर्पण रूपी तालाब में देख रहे हों। पर्वतो से गरते हुए झरने कल कल की मधुर आवाज कर रहे हैं जो नस नस को प्रसन्नता से भर रहे हैं। पर्वतों पर उगे हुए पेड़ शांत आकाश को ऐसे देख रहे हैं जैसे वो उसे छूना चाह रहे हों। इस प्रकार क व ने मानवीकरण अलंकार का प्रयोग सुन्दरता के साथ कया है।

प्रश्न 10 – पर्वतीय प्रदेश में उड़ते बादलों को देखकर क व ने क्या कल्पना की है?

उत्तर – पर्वतीय प्रदेश में उड़ते बादलों के कारण लग रहा है मानो पेड़ कही उड़ गए हों अर्थात गायब हो गए हों। ऐसा लग रहा है क पूरा आकाश ही धरती पर आ गया हो केवल झरने की आवाज़ ही सुनाई दे रही है। प्रकृति का ऐसा भयानक रूप देख कर शाल के पेड़ डर कर धरती के अंदर धंस गए हैं। चारों ओर बादल होने के कारण लग रहा है क तालाब में आग लग गई है। ऐसा लग रहा है क ऐसे मौसम में इंद्र भी अपना बादल रूपी वमान ले कर इधर उधर जादू का खेल दिखाता हुआ घूम रहा है। क व की यह कल्पना अत्य धक मनोरम है।

प्रश्न 11 – पर्वतीय प्रदेश में कुछ पेड़ पहाड़ पर उगे हैं तो कुछ शाल के पेड़ पहाड़ के पास। इन दोनों स्थान के पेड़ों के सौंदर्य में अंतर क वता के आधार पर स्पष्ट कीजिए

उत्तर – पर्वतों पर उगे पेड़ देखकर लगता है क ये पेड़ पहाड़ के सीने पर उग आए हैं जो मनुष्य की ऊँची-ऊँची इच्छाओं की तरह हैं। ये पेड़ अत्यंत ध्यान से अपलक और अटल रहकर शांत आकाश की ओर निहार रहे हैं। ऐसा प्रतीत होता है क शायद ये भी अपनी उच्चाकांक्षा को पूरा करने का उपाय खोजने के लए चंतनशील हैं और स्थिर हो कर उपाय खोज रहे हैं।

दूसरी ओर पर्वतीय प्रदेश में उड़ते बादलों के कारण लग रहा है मानो पेड़ कही उड़ गए हों अर्थात गायब हो गए हों। ऐसा लग रहा है क पूरा आकाश ही धरती पर आ गया हो केवल झरने की आवाज़ ही सुनाई दे रही है। ऐसा लगता है क अचानक होने वाली मूसलाधार वर्षा और धुंध से भयभीत होकर शाल के ये पेड़ धरती में धंस गए हों।

प्रश्न 12 – “पर्वत प्रदेश में पावस” क वता का सार अपने शब्दों में ल खए।

उत्तर – “पर्वत प्रदेश में पावस” क वता पर्वतीय सौंदर्य को व्यक्त करने वाली क वता है। प्रकृति का यह सौंदर्य वर्षा में और भी बढ़ जाता है। क व ने इस क वता में प्रकृति का ऐसा वर्णन कया है क लग रहा है क प्रकृति सजीव हो उठी है। क व वर्णन करता है क वर्षा ऋतु में प्रकृति का रूप हर पल बदल रहा है कभी वर्षा होती है तो कभी धूप निकल आती है।

पर्वतों पर उगे हजारों फूल ऐसे लग रहे है जैसे पर्वतों की आँखे हो और वो इन आँखों के सहारे अपने आपको अपने चरणों ने फैले दर्पण रूपी तालाब में देख रहे हों। पर्वतो से गरते हुए झरने कल कल की मधुर आवाज कर रहे हैं जो नस नस को प्रसन्नता से भर रहे हैं। पर्वतों पर उगे हुए पेड़ शांत आकाश को ऐसे देख रहे हैं जैसे वो उसे छूना चाह रहे हों। बारिश के बाद मौसम ऐसा हो गया है क घनी धुंध के कारण लग रहा है मानो पेड़ कही उड़ गए हों अर्थात गायब हो गए हों,चारों ओर धुँआ होने के कारण लग रहा है क तालाब में आग लग गई है। ऐसा लग रहा है क ऐसे मौसम में इंद्र भी अपना बादल रूपी वमान ले कर इधर उधर जादू का खेल दिखता हुआ घूम रहा है।

प्रश्न 13 – पर्वत प्रदेश में पावस क वता में क व ने उच्चाकांक्षा पर कस प्रकार व्यंग्य कया है ?

उत्तर – क व ने उच्चाकांक्षा पर रखने वालों पर यह व्यंग्य कया है क जो व्यक्ति अपने जीवन में ऊँचा

उठने की इच्छा रखते हैं वे उसी तरह हमेशा चंतित , मौन तथा अपने आप में खोये हुए से रहते हैं जैसे पर्वतीय क्षेत्र में पहाड़ों के हृदय से उठ-उठ कर अनेकों पेड़ ऊँच्चा उठने की इच्छा लए एक टक दृष्टि से स्थिर हो कर शांत आकाश को देखते हुए से प्रतीत होते हैं।

प्रश्न 14 – ” पर्वत प्रदेश में पावस ” क वता में क व ने झरनों के सौंदर्य को कस प्रकार दर्शाया है ?

उत्तर – ” पर्वत प्रदेश में पावस ” क वता में क व झरनों के सौंदर्य का वर्णन करते हुए कहते हैं क जब पहाड़ों पर झरने बहते हैं तो उनके झागदार पानी को देखकर ऐसा लगता है मनो उन्होंने मोतियों की ल ड़याँ पहन रखी हों , उनकी कल – कल की ध्वनि को सुन कर ऐसा लगता है जैसे वे पहाड़ों का गुणगान कर रहे हों। उनकी करतल ध्वनि नस – नस में उत्साह अथवा प्रसन्नता भर देती है।

प्रश्न 15 – ” पर्वत प्रदेश में पावस ” क वता में धुंआँ कहाँ नजर आ रहा है ?

उत्तर – ” पर्वत प्रदेश में पावस ” क वता में क व तेज बारिश के बाद मौसम में घनी धुंध के कारण धुँआ होने से लग रहा है क तालाब में आग लग गई है और वह धुंध तालाब से उठते धुएँ के समान लग रही है।

प्रश्न 16 – ” पर्वत प्रदेश में पावस ” क वता द्वारा कस अनुभव की प्राप्ति होती है?

उत्तर – " पर्वत प्रदेश में पावस " कविता द्वारा प्राकृतिक सौंदर्य के अनुभव की प्राप्ति होती है।

प्रश्न 17 – " पर्वत प्रदेश में पावस " कविता में पर्वत की महानता का गुणगान कौन कर रहे है ?
उत्तर – " पर्वत प्रदेश में पावस " कविता में झरनों की करतल ध्वनि मन को प्रसन्नता देने वाली कही गई हैं और उस करतल ध्वनि को सुन कर ऐसा लगता है जैसे वे पर्वत की महानता का गुणगान कर रहे हों।

प्रश्न 18 – " झर झर , नस नस , उठ उठ " में कौन सा अलंकार है?
उत्तर – " झर झर , नस नस , उठ उठ " में ' पुनरुक्ति ' अलंकार है क्योंकि जहाँ एक ही शब्द की उत्पत्ति एक से अधिक बार हुई हो वहाँ ' पुनरुक्ति ' अलंकार होता है।

प्रश्न 19 – " दर्पण सा फैला है विशाल " पंक्ति में कौन सा अलंकार है?
उत्तर – " दर्पण सा फैला है विशाल " पंक्ति में ' उपमा ' अलंकार है क्योंकि जहाँ उपमेय की उपमान से तुलना की गयी हो तथा जहाँ सा , से , सी , जैसे , इत्यादि शब्दों का प्रयोग हो वहाँ ' उपमा ' अलंकार होता है।

प्रश्न 20 – जादू का खेल कौन खेल रहा है ?
उत्तर – बारिश के मौसम के बाद चारों ओर फैली घनी धुंध के कारण ऐसा लग रहा है जैसे इस मौसम में इंद्र भी अपना बादल रूपी विमान ले कर इधर – उधर जादू का खेल दिखता हुआ घूम रहा है।

प्रश्न 21 – ऊँचे वृक्ष किस प्रकार आसमान की ओर देख रहे हैं ?
हो कर शांत आकाश को इस तरह देख रहे हैं, मनो वो किसी चिंता में डूबे हुए हों।